बीमारियों का हर शहर में प्रकोप

जनसत्ता सरोकार

इंदौर की त्रासदी ने बताया कि देश की जल आपूर्ति प्रणाली कितनी नाजुक है। फरवरी 2025 और जनवरी 2026 के बीच, गंदे पानी से दूषित पाइप के पानी ने 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के कम से कम 26 शहरों में बीमारियों का प्रकोप फैलाया। इससे एक दीर्घकालिक देशव्यापी शहरी संकट का पता चला। नल के दूषित पानी से देश के महानगरों, राज्य की राजधानियों और छोटे शहरों में लोग बीमार पड़ रहे हैं। जनवरी 2025 से सात जनवरी 2026 के बीच, 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 26 शहरों (इनमें 16 राज्य राजधानियां शामिल हैं) में गंदे पानी से पाइप का दूषित पानी पीने से कम से कम 5,500 लोग बीमार हुए। कम से कम 34 लोगों की मौत हो गई।

मीडिया खबरों और प्रभावित राज्यों के आधिकारिक बयानों के अनुसार, दस्त सबसे आम बीमारी थी। इसके बाद टाइफाइड, हेपेटाइटिस और लंबे समय तक बुखार के मामले सामने आए। शहरों में इसका कारण जगजाहिर है। लगभग हर मामले में, दूषित होने का कारण पीने के पानी में नालों का मिलना पाया गया है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि पुरानी, जंग लगी या खराब तरीके से बिछाई गई पानी की पाइपलाइनें सीवर लाइनों के करीब से गुजरती हैं। किसी भी रिसाव या दबाव में कमी के कारण गंदा पानी सीधे घरों की आपूर्ति में पहुंच जाता है।

ज्यादातर मामलों में, दशकों पुरानी पाइपलाइनें ही समस्या की जड़ में हैं। कई शहर आज भी 40 साल से अधिक पुरानी जल वितरण प्रणाली पर निर्भर हैं। दिल्ली जल बोर्ड की एक रपट के अनुसार, दिल्ली में लगभग 18 फीसद पानी की पाइपलाइनें 30 साल से अधिक पुरानी हैं। सीवर लाइनों के समानांतर या नीचे बिछाई गईं इन पाइपलाइनों में दरारें बार-बार पेयजल के दूषित होने का खतरा पैदा करती हैं। राजधानी दिल्ली में संकट महज सीवर लाइनों का नहीं है, एक महीने पहले हुए खुलासे के अनुसार भूमिगत जल में यूरेनियम की बढ़ी हुई मात्रा पाई गई है। लेकिन दिल्ली और देश के शहरों में सबसे बड़ी चिंता इंदौर त्रासदी के बाद घरों तक होने वाली दूषित जल आपूर्ति है। वैसे तो देश में जल प्रदूषण की घटनाएं अक्सर मानसून के महीनों से जुड़ी होती हैं, जब बाढ़ और नालियों की उफान से सीवेज के रिसाव का खतरा बढ़ जाता है, लेकिन पिछले एक साल में दर्ज कम से कम 34 घटनाओं की समीक्षा से पता चलता है कि सीवेज से दूषित पाइप का पानी अब केवल एक मौसमी घटना नहीं रह गई है।

महज एक महीने के भीतर यानी दिसंबर 2025 और सात जनवरी 2026 के बीच कई लोगों की मौत हो गई और 3,500 से अधिक लोग बीमार पड़ गए। इनमें से ज्यादातर ने दूषित नल का पानी पीया था। साल 2025 के आखिर में पटना (बिहार), रायपुर (छत्तीसगढ़), बंगलुरु (कर्नाटक), देहरादून (उत्तराखंड), गांधीनगर (गुजरात), गुवाहाटी (असम), जम्मू, रांची (झारखंड) सहित देश भर के शहरों से पाइप से आने वाले पानी के दूषित होने की कम से कम 11 मामले सामने आए। इंदौर (मध्य प्रदेश), चेन्नई (तमिलनाडु) और गुरुग्राम (हरियाणा) के मामले चर्चा में रहे। इनमें राजधानियों का शामिल होना शहरी पेयजल बुनियादी ढांचे की जर्जरता को बताता है।

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में जनवरी की शुरुआत में दूषित पानी पीने के बाद 150 से अधिक बच्चों को टाइफाइड के साथ अस्पताल में भर्ती कराया गया। बंगलुरु में, लिंगराजपुरम के केएसएफसी लेआउट में कम से कम 30 परिवारों ने चार जनवरी, 2026 को दस्त और पेट के संक्रमण की शिकायत की। इसी महीने में कम से कम छह अन्य शहरों से भी इसी तरह की घटनाएं सामने आईं।

पटना की कंकरबाग हाउसिंग कालोनी में निवासियों का कहना है कि इंदौर जैसी ही समस्या सामने आ रही है। कई खंडों में नल का पानी इतना प्रदूषित है कि इसका इस्तेमाल नहाने या कपड़े धोने के लिए भी नहीं किया जा सकता। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में, कचना हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र के निवासियों को एक महीने से अधिक समय से बदबूदार और स्पष्ट रूप से प्रदूषित नल का पानी मिल रहा है। इससे लगभग 100 लोग बीमार पड़ गए हैं। झारखंड की राजधानी रांची में, नगर निगम के अधिकारियों ने क्षतिग्रस्त या टूटी हुई पाइपलाइनों वाले 300 से अधिक स्थानों की पहचान की है। इससे पानी की आपूर्ति में सीवर की गंदगी के मिलने का खतरा बढ़ गया है।

गुरुग्राम भी इससे अछूता नहीं रहा। दिसंबर की शुरुआत में, सेक्टर 70ए के निवासियों ने नल का पानी पीने के बाद दस्त और पेट संबंधी बीमारियों की शिकायत की। लगभग 60 से 70 लोग प्रभावित हुए।

संकट सिर्फ शहरों का नहीं

दूषित जल का संकट महज शहरी नहीं है। तीन महीने पहले उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के धौलादेवी विकासखंड में बुखार ने पांच गांवों - देवलीबागड़, विवाड़ी, धुरतक, माला और खेती में कहर बरपाया था। इससे नौ लोगों की मौत हो गई थी और 50 से अधिक लोग गंभीर रूप से बीमार हुए थे। पहले इस घटना को मौसम में बदलाव का नतीजा मानकर नजरअंदाज कर दिया गया था। जब इन मौतों का कारण जानने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने प्रभावित क्षेत्रों में चिकित्सकों के दल भेजे भेजे तो पता चला कि दूषित पेयजल के माध्यम से फैले जीवाणु संक्रमण के कारण यह त्रासदी हुई।

जांच से पता चला कि गांवों को पानी की आपूर्ति करने वाले पानी के टैंक कोलीफार्म जीवाणु से प्रदूषित थे। ये टाइफाइड, दस्त और हैजा जैसी बीमारियों को फैला सकते हैं। ग्रामीण कई महीनों से पानी की खराब आपूर्ति की शिकायत कर रहे हैं। अस्पताल में भर्ती 11 मरीजों के रक्त के नमूनों की जांच की गई, जिनमें से चार में टाइफाइड की पुष्टि हुई। यह बीमारी दूषित पानी के कारण फैली थी। बाद में प्रभावित गांवों में निवासियों की जांच और उपचार के लिए 16 स्वास्थ्य दल तैनात किए गए। प्रारंभिक जांच से पता चला कि पाइपलाइन में खराबी के कारण गंदा पानी पीने के पानी में मिल गया था। यह खराबी कई हफ्तों तक किसी की नजर में नहीं आई।

सबसे स्वच्छ शहर के तमगाधारी इंदौर का

दूषित जल जहर

चकाचौंध में गुम थी भागीरथपुरा की शिकायतें

इंदौर की त्रासदी देश में स्वच्छ पेयजल की स्थिति को लेकर आंखें खोलने वाली है। इसका दुखद पहलू यह है कि मध्य प्रदेश की वाणिज्यिक राजधानी कहलाने वाला यह शहर सात साल से स्वच्छता का परचम लहरा रहा था। दिसंबर के आखिर में दूषित जल से हुई मौत ने उस परचम को तार-तार कर दिया, जिसमें चमचमाती साफ-सुथरी सड़कें और गंदगी मुक्त मोहल्ले पूरी दुनिया से एक कड़वा सच छिपा रहे थे कि ढंकी-छिपी नालियों में बहते दूषित जल के समांतर पेयजल आपूर्ति करने वाले पाइप जंग लगने से सड़ चुके हैं। कई महीनों से की जा रही शिकायतों पर तवज्जो नहीं दी गई और पेयजल में घुल गए गंदे पानी ने भागीरथपुरा में कहर बरपा दिया। इंदौर की डरावनी लापरवाही यह बताने के लिए काफी है कि ऊंची अट्टालिकाओं और ऊपरिगामी पुलों से केंद्रित शहरी विकास में गंदगी से बजबजाती नालियों का पानी पेयजल में मिलकर देश के कई शहरों, जिनमें कई राज्यों की राजधानियां भी शामिल हैं, के लोगों को कई वर्षों से बीमार बना रहा है। आंकड़ों के अनुसार 12 महीनों में भारत भर में दूषित जल की आपूर्ति के कारण 5,500 से अधिक लोग बीमार पड़े और 34 लोगों की मौत हो गई। सरोकार की पड़ताल।

जनसत्ता सरोकार

साल 2023 तक लगातार सात वर्षों तक भारत के स्वच्छता सूचकांक में शीर्ष पर रहने के कारण इंदौर दुनिया भर में चर्चा में रहा। साल 2021 के स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कारों में मध्य प्रदेश की इस तेजी से विकसित हो रही वाणिज्यिक राजधानी को प्रभावी अपशिष्ट जल प्रबंधन के लिए देश का पहला 'वाटर प्लस' शहर घोषित किया गया था।

देश भर में 4,000 नगरपालिकाओं को वार्षिक स्वच्छता सूचकांक में शीर्ष स्थान हासिल करने का मौका देने के लिए शहरी मामलों के मंत्रालय ने वर्ष 2024 में सुपर स्वच्छ लीग नामक एक अलग श्रेणी की घोषणा की। जब इंदौर साल 2024-2025 में सुपर लीग में सर्वश्रेष्ठ शहरों में से एक के रूप में उभरा तो किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। अचानक, नए साल के शुरू होने से कुछ दिन पहले, इंदौर के देश में सबसे 'स्वच्छ' होने के तमगे पर सवाल उठने लगे।

24 दिसंबर 2025 से इस साल छह जनवरी के बीच, इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी पीने से कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई। इलाके में एक पुलिस चौकी के पास एक पुरानी पाइपलाइन के ऊपर बने एक सार्वजनिक शौचालय को, जिसमें अनिवार्य सेप्टिक टैंक नहीं था, शहर के पेयजल नेटवर्क के दूषित होने का शुरुआती कारण माना गया था। हालांकि, शौचालय को बाद में ध्वस्त कर दिया गया, लेकिन अधिकारी इस बात की जांच कर रहे हैं कि क्या बोरवेल कनेक्शन के माध्यम से भी पानी गंदा हुआ था?

मध्य प्रदेश सरकार ने उच्च न्यायालय के समक्ष आठ मौतों की पुष्टि की। स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, 24 दिसंबर, 2025 से अब तक 310 मरीजों को अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। इनमें से 203 मरीज अभी भी अस्पताल में हैं। इनमें से 25 गहन चिकित्सा इकाई में हैं। इंदौर में दूषित पानी पीने से परिवार के सदस्यों की मौत के मामले में 18 परिवारों को मुआवजा दिया जा चुका है, जबकि मध्य प्रदेश सरकार का कहना है कि आधिकारिक तौर पर मरने वालों की संख्या आठ है। भागीरथपुरा में 24 दिसंबर से छह जनवरी के बीच गंभीर उल्टी और दस्त के बाद कई लोगों की मौत हो गई।

मुख्यमंत्री मोहन यादव का कहना है कि ध्यान इस बात पर नहीं होना चाहिए कि कितने लोगों की मौत हुई है, क्योंकि एक भी जान का जाना दर्दनाक होता है, इसलिए हम आंकड़ों में नहीं उलझते। मुख्यमंत्री ने कहा, प्रशासन का अपनी प्रक्रियाओं का पालन करना एक अलग बात है। सामान्यतः, केवल उन्हीं मामलों को वैध आंकड़े माना जाता है, जिनमें पोस्टमार्टम किया गया हो।

जैसे ही अधिकारियों ने घनी आबादी वाले भागीरथपुरा में घर-घर जाकर जांच करने के लिए स्वास्थ्य कर्मियों को भेजा, संबंधित अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू की और संक्रमण को रोकने का प्रयास किया, एक अलग ही कहानी सामने आई। वास्तव में पुरानी पाइपलाइन नाकाम पाई गईं। दस्तावेजों में संरचनात्मक कमियों का चिट्ठा और नगरपालिका प्रणाली की बेपरवाही का पता लगना, जो स्पष्ट चेतावनियों के बावजूद बार-बार कार्रवाई करने में विफल रही।

इस साल दो जनवरी को 2014 बैच के आइएएस अधिकारी दिलीप कुमार यादव को इंदौर नगर निगम (आइएमसी) के आयुक्त पद से मुक्त कर दिया गया। यादव ने सितंबर 2025 में ही पदभार संभाला था। उनके स्थान पर एक दिन बाद क्षितिज सिंघल को शहर के सबसे बड़े नागरिक संकटों में से एक के बीच जिम्मेदारी दी गई। इंदौर के लिए यह संकट अभूतपूर्व है। अधिकारियों के अनुसार, साल 1920 से पहले, इंदौर सदियों से शहरों द्वारा अपना जल स्रोत रहे तरीके से ही जल प्राप्त करता था। तालाबों और नदियों के पास स्थित कुओं और निकटवर्ती बिलावली झील से। वर्ष 1939 तक, इंदौर के आज के स्वरूप में आने से पहले यशवंत सागर मीठे पानी का जलाशय इसका प्राथमिक जल स्रोत था। यह व्यवस्था लगभग चार दशकों तक पर्याप्त रही।

शहर की जनसंख्या संबंधी समस्याओं के समाधान की नींव तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अप्रैल 1961 में नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर बांध के उद्घाटन के साथ रखी थी, लेकिन परियोजना का पहला चरण साल 1978 में कार्यान्वित हो पाया। पहले चरण के तहत इंदौर के वितरण नेटवर्क में 85 मिलियन लीटर (एमएलडी) पानी पहुंचाया गया। साल 1991-92 में शुरू हुए दूसरे चरण में 95 मिलियन लीटर (एमएलडी) पानी की अतिरिक्त आपूर्ति की गई। हालांकि, उन वर्षों में बिछाई गई पाइपलाइन, जिनमें से कई भागीरथपुरा जैसी शहरी झुग्गी बस्तियों में थीं, बढ़ती हुई आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लायक नहीं बनाई गई थीं।

वर्ष 2008 में, एशियाई विकास बैंक द्वारा वित्तपोषित उदय परियोजना के तीसरे चरण के तहत, नर्मदा से 360 एमएलडी पानी इंदौर में पहुंचाया गया। यह अब तक का सबसे बड़ा अवसंरचना विस्तार था। इसने शहर को दो भागों में बांट दिया- एक तरफ आधुनिक मुख्य पाइपलाइनें थीं, जो निरंतर दबाव बनाए रखने में सक्षम थीं, और दूसरी तरफ पुरानी पाइपलाइनें थीं जो घंटों तक रुक-रुक कर पानी पहुंचाती थीं। उनकी धातुएं कमजोर हो चुकी थीं, जोड़ जंग खा चुके थे और निरंतर प्रवाह को सहन करने की उनकी क्षमता समाप्त हो चुकी थी। वास्तव में ये पुरानी पाइपलाइन प्रणालियां आज के दबाव, जनसंख्या भार या निरंतर आपूर्ति के लिए कभी भी तैयार नहीं की गई थीं। नए इलाकों में उच्च घनत्व वाले पालीइथिलीन (एचडीपीई) से बने पाइप हैं। ये रासायनिक रूप से प्रतिरोधी हैं और एक सदी तक चलने के लिए बनाए गए हैं। पुराने इलाकों में, पानी एस्बेस्टस-सीमेंट के पाइपों से बहता है, जो सही सलामत होने पर सुरक्षित होते हैं, लेकिन क्षतिग्रस्त होने पर खतरनाक रेशे छोड़ते हैं।

इंदौर की जनसंख्या 30 लाख से अधिक है। अनुमान है कि साल 2040 तक यह 58.70 लाख तक पहुंच जाएगी। इसके लिए लगभग 1,100 एमएलडी उपचारित जल की आवश्यकता होगी। शहर के पर्यावरण विभाग के अनुसार, जिले को पांच नदियों, 60 झीलों और तालाबों से जल की आपूर्ति होती है। सतही जल स्रोतों - नर्मदा, यशवंत सागर और बिलावली की कुल स्थापित क्षमता 594 एमएलडी है। इस कमी को पूरा करने के लिए शहर 4,945 ट्यूबवेल और 1,004 हैंडपंपों पर निर्भर है। जिला पर्यावरण योजना के अनुसार, पूरे जिले में 1,51,939 बोरवेल हैं। इनमें से कई अनियमित हैं और कई दूषित जलभंडारों से पानी निकालते हैं।

> **शहरी** मामलों के मंत्रालय ने 2024 में सुपर स्वच्छ लीग नामक एक अलग श्रेणी की घोषणा की। जब इंदौर साल 2024-2025 में सुपर लीग में सर्वश्रेष्ठ शहरों में से एक के रूप में उभरा तो किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। अचानक, नए साल के शुरू होने से कुछ दिन पहले, इंदौर के देश में सबसे स्वच्छ होने के तमगे पर सवाल उठने लगे।

हकीकत यह है कि पुरानी और जर्जर पाइपलाइनों से रिसाव के कारण पानी की बर्बादी के दर्ज मामले भी बहुत ज्यादा हैं। साथ ही जमीनी स्तर पर अपर्याप्त प्रवर्तन के कारण पूरे नेटवर्क में अवैध कनेक्शन की बाढ़ आ गई है। शहर में जल अवसंरचना के असमान वितरण के परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति के लिए कई प्रत्यक्ष पाइप लगाए गए हैं। इससे एक ऐसी प्रणाली बन गई है, जहां दबाव असमान है और रिसाव एक आम समस्या है। इंदौर के सबसे पुराने और सबसे घनी आबादी वाले आवासीय इलाकों में से एक भागीरथपुरा, इंदौर की शान-शौकत से बिलकुल अलग है। यहां की सड़कें अचानक संकरी होकर मुश्किल से दस-12 फुट चौड़ी गलियों में बदल जाती हैं। पीने के पानी और सीवेज की पाइपलाइनें यहां खतरनाक रूप से एक-दूसरे के बेहद करीब से गुजरती हैं। भागीरथपुरा में ज्यादातर पाइपलाइनें साल 1993-94 में झुग्गी-झोपड़ियों में जल नेटवर्क के विस्तार के लिए विदेशी सहायता प्राप्त परियोजना के तहत बिछाई गई थीं। भागीरथपुरा में बोरवेल पर निर्भरता वर्ष 1997 तक जारी रही। साल 2000 के दशक के आरंभ में, नर्मदा से पानी की आपूर्ति लाइनें बिछाई गईं। तब नर्मदा का पानी उपलब्ध कराने में देरी के कारण निवासी बोरवेल पर निर्भर रहे। बाद में, लोगों ने बोरवेल को नर्मदा जल लाइन से जोड़ दिया। भागीरथपुरा में मौजूदा जल वितरण नेटवर्क को अव्यवस्थित तरीके से बिछाया गया है।

जल विभाग के अधिकारियों ने बताया कि भागीरथपुरा में रिसाव का समय पर पता नहीं चल पाया, क्योंकि इस क्षेत्र में प्रतिदिन केवल एक घंटे के लिए ही पाइपलाइन से पानी आता है। ये पाइपलाइनें निरंतर आपूर्ति नहीं कर सकतीं, जिससे दबाव में गिरावट की निगरानी करना लगभग असंभव हो जाता है। यही संदूषण का सबसे पहला संकेत होता है। पाइपलाइन में पानी का दबाव कम हो गया था। भागीरथपुरा के मामले में भी यही स्थिति है। स्थानीय कर्मचारियों को तुरंत ही कुछ गड़बड़ का पता चल जाना चाहिए था, लेकिन समय पर कार्रवाई नहीं की गई।

भागीरथपुरा में महीनों से खतरे की घंटी बज रही थी। इंदौर महापौर की हेल्पलाइन पर बदबूदार पानी की शिकायत करने के बावजूद पाइपलाइन ठीक करने कोई नहीं आया। पानी की खराब गुणवत्ता को लेकर शिकायतें मौजूदा घटना से पहले से ही मौजूद हैं। साल 2025 में, निगम को पानी की गुणवत्ता से संबंधित 266 शिकायतें मिलीं। इनमें से 23 औपचारिक शिकायतें जोन चार से थीं, जिसमें भागीरथपुरा भी शामिल है।

प्रशासन ने साल 2022 में इस क्षेत्र में 9.8 किलोमीटर पुरानी पाइपलाइनों के नवीनीकरण का काम शुरू कर दिया था। आइएमसी के दस्तावेजों के अनुसार, महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने 25 नवंबर, 2022 के एक प्रस्ताव के माध्यम से भागीरथपुरा के वार्ड संख्या 11 के लिए एक व्यापक पाइपलाइन परियोजना को मंजूरी दी थी। इसकी अनुमानित लागत 2.38 करोड़ रुपए थी और इसे दस महीने में पूरा किया जाना था। लेकिन काम धीमी गति से आगे बढ़ा। अब देरी की समीक्षा की जा रही है।

इन सब से पहले भी इंदौर की पेयजल और सीवेज व्यवस्था की खराब स्थिति को लेकर चिंताएं जताई जा चुकी थीं। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) द्वारा आइएमसी जल आपूर्ति से लिए गए 2018 के जल नमूनों के आडिट में कहा गया था कि सभी नमूनों में आयरन, नाइट्रेट, कैल्शियम, ई-कोलीफार्म की मात्रा निर्धारित बीआइएस मानदंडों से अधिक थी। इससे यकृत, हृदय, अग्नाशय को क्षति, मधुमेह, दस्त, उल्टी, पेट दर्द, पाचन संबंधी समस्याएं, पीलिया, टाइफाइड जैसी बीमारियां हो सकती हैं। आइएमसी ने जवाब दिया था कि शहर की पानी की पाइपलाइनें बहुत पुरानी थीं और विकास कार्यों से क्षतिग्रस्त हो गई थीं।

साल 2023 में गठित राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) की एक समिति ने अपनी रपट में कहा था कि आइएमसी लगभग 367.8 एमएलडी सीवेज उत्पन्न करता है, लेकिन उसने लगभग 910 अवैध कालोनियों द्वारा पानी के अवैध दोहन को ध्यान में नहीं रखा।

राज्य ने उच्च न्यायालय को सूचित किया है कि त्रासदी होने से पहले पाइपलाइन का 80 फीसद काम पूरा हो चुका था। पुरानी लाइनों को बंद किया जाना था, लेकिन नई लाइनों के लिए कार्य आदेश में देरी के कारण पुरानी लाइनें उपयोग में बनी रहीं।

प्रणालीगत विफलता का जिम्मेदार कौन

जनसत्ता सरोकार

देश के शहरी क्षेत्रों में, नगर निगम और शहरी स्थानीय निकाय पेयजल की आपूर्ति, गुणवत्ता और सुरक्षा के लिए कानूनी रूप से जिम्मेदार हैं। राज्य स्तरीय एजंसियां, जिनमें सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जल आपूर्ति बोर्ड और शहरी विकास विभाग शामिल हैं-थोक जल और वितरण नेटवर्क की योजना बनाती हैं। इन्हें वित्त पोषित करती हैं और उनका संचालन भी करती हैं। स्वास्थ्य निगरानी का कार्य राज्य के स्वास्थ्य विभागों के अंतर्गत आता है, जबकि प्रकोप का पता लगाने का कार्य केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम द्वारा निर्देशित होता है। राष्ट्रीय स्तर पर, केंद्रीय आवास और शहरी मामलों का मंत्रालय अमृत और अमृत 2.0 जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से शहरी जल अवसंरचना की देखरेख करता है, जबकि पेयजल गुणवत्ता मानकों को भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा निर्धारित किया जाता है।

फिर भी, बार-बार होने वाले प्रकोप यह संकेत देते हैं कि प्रशासन काफी हद तक प्रतिक्रियात्मक बना हुआ है, और हस्तक्षेप तभी शुरू होता है, जब लोग बीमार पड़ जाते हैं। ये बार-बार होने वाली घटनाएं शहरी जल प्रशासन की प्रणालीगत विफलता की ओर इशारा करती हैं, न कि छिटपुट चूक की ओर, जिससे सुरक्षित पेयजल के मूल अधिकार के उल्लंघन के बारे में चिंताएं बढ़ जाती हैं। सरकार ने जल-सुरक्षित शहरों के निर्माण के घोषित लक्ष्य के साथ 1 अक्तूबर, 2021 को अटल कायाकल्प और शहरी परिवर्तन मिशन 2.0 का शुभारंभ किया। इसके अंतर्गत, पेय जल सर्वेक्षण इसे जल की गुणवत्ता, मात्रा और विस्तार के आधार पर शहरों का मूल्यांकन करने के लिए एक प्रतिस्पर्धी मूल्यांकन के रूप में शुरू किया गया था।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अमृत के अंतर्गत सर्वेक्षण किए गए 485 शहरों में से 46 शहरों के निवासियों को सौ फीसद स्वच्छ जल उपलब्ध कराने का दावा करने वाले शहरों की संख्या 29 फरवरी, 2024 तक इस मानदंड को पूरा करने वाले शहरों की संख्या दस फीसद से भी कम थी। आर्थिक सर्वेक्षण साल 2023-24 का अनुमान है कि साल 2030 तक भारत की 40 फीसद से अधिक आबादी शहरों में रहेगी। इससे जल तंत्र सहित पुरानी शहरी सेवाओं पर दबाव और बढ़ जाएगा।

शहर में नया कोतवाल

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

डोनाल्ड ट्रंप के बयानों से स्पष्ट है कि वेनेजुएला के तेल भंडार पर नियंत्रण का लक्ष्य हासिल करने के लिए मादुरो को निशाना बनाया गया। वेनेजुएला के पास दुनिया का सबसे बड़ा तेल भंडार है और वह तेल निर्यात, हथियार आयात तथा विदेशी निवेश के लिए चीन की ओर रुख कर रहा था। अमेरिका यह सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ संकल्पित है कि कोई भी अन्य देश (विशेषकर रूस और चीन) वेनेजुएला में आर्थिक हित (विशेष रूप से तेल भंडार) हासिल न कर सके, जो कि अमेरिका के लिए आरक्षित हैं। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका की बड़ी कंपनियों को वेनेजुएला में तेल उत्पादन और बिक्री अनुमति दी जाएगी।

अमेरिका के पांचवें राष्ट्रपति की ओर से मोनरो सिद्धांत की घोषणा के दो सौ वर्ष बाद, और इसकी शक्ति एवं प्रभावशीलता पर व्यापक संदेह के बावजूद वहां के 47वें राष्ट्रपति ने इस सिद्धांत का आह्वान किया। मुझे लगता है कि वर्तमान परिस्थितियों की कल्पना 1823 में भी नहीं की गई थी।

राष्ट्रपति जेम्स मोनरो के नाम पर बनाए गए इस सिद्धांत ने *यूरोपीय* शक्तियों को अमेरिकी महाद्वीप में नव स्वतंत्र राष्ट्रों के मामलों में हस्तक्षेप न करने की चेतावनी दी थी। दो जनवरी, 2026 की रात को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस सिद्धांत के हर बुनियादी नियम का उल्लंघन किया। उन्होंने *अमेरिका* की सैन्य शक्ति का इस्तेमाल करते हुए एक संप्रभु देश पर आक्रमण किया, वहां निर्वाचित राष्ट्रपति को बंदी बनाया और उन्हें न्यूयार्क की एक आपराधिक अदालत में मुकदमे के लिए ले गए। यह मोनरो सिद्धांत का एक आश्चर्यजनक विस्तार था। किसी भी विदेशी शक्ति ने वेनेजुएला के मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया था। वेनेजुएला की जनता ने निकोलस मादुरो को राष्ट्रपति चुना था, हालांकि चुनाव परिणाम को लेकर बड़ा विवाद हुआ था। मादुरो ने भले ही अलोकतांत्रिक और सत्तावादी रुख अपना लिया हो, लेकिन ऐसा करने वाले वे पहले निर्वाचित शासक नहीं हैं।

वर्चस्ववादी राष्ट्रपति

इस नए सिद्धांत को बुश-ट्रंप सिद्धांत कहना उचित होगा। इसका सबसे करीबी उदाहरण पनामा में अमेरिकी हस्तक्षेप (1989) था। राष्ट्रपति जार्ज बुश सीनियर के नेतृत्व में अमेरिकी सेना ने पनामा पर आक्रमण किया, वहां की सेना को हराया, राष्ट्रपति नोरिएगा को वेटिकन दूतावास में शरण लेने के लिए मजबूर किया और अंततः उन्हें आत्मसमर्पण करने पर विवश किया। अमेरिका का घोषित लक्ष्य पनामा में सत्ता परिवर्तन था। इस सैन्य कार्रवाई के साथ अमेरिका इस क्षेत्र का नया सरदार बन गया।

राष्ट्रपति बुश जूनियर ने इराक में अपना प्रभुत्व दिखाया और तीन राष्ट्रपतियों (बुश जूनियर, ओबामा और ट्रंप) ने क्रमशः अफगानिस्तान में अपने प्रभुत्व की छाप छोड़ी। इराक (2003) के मामले में डब्लूएमडी (सामूहिक विनाश के हथियार) रखने का झूठा खतरा गढ़ा गया और अफगानिस्तान (2001-2021) के मामले में अल कायदा और तालिबान शासन के विरुद्ध 'आतंकवाद के खिलाफ युद्ध' के नाम पर सेना भेजी गई। दोनों युद्ध विफल साबित हुए। वेनेजुएला के ताजा मामले में अमेरिका ने राष्ट्रपति मादुरो पर मादक पदार्थों की तस्करी और अमेरिका में नशीले पदार्थ पहुंचाने की साजिश रचने का आरोप लगाया है, लेकिन ये ऐसे आरोप हैं जिनका अभी भी कोई सार्वजनिक प्रमाण सामने नहीं आया है।

ट्रंप के बयानों से स्पष्ट है कि वेनेजुएला के तेल भंडार पर नियंत्रण का लक्ष्य हासिल करने के लिए मादुरो को निशाना बनाया गया। वेनेजुएला के पास दुनिया का सबसे बड़ा तेल भंडार है और वह तेल निर्यात, हथियार आयात तथा विदेशी निवेश के लिए चीन की ओर रुख कर रहा था। अमेरिका यह सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ संकल्पित है कि कोई भी अन्य देश (विशेषकर रूस और चीन) वेनेजुएला में आर्थिक हित (विशेष रूप से तेल भंडार) हासिल न कर सके, जो कि अमेरिका के लिए आरक्षित हैं। मादुरो को हिरासत में लेने के तुरंत बाद राष्ट्रपति ट्रंप ने स्पष्ट रूप से कहा कि अमेरिका की बड़ी तेल कंपनियों को वेनेजुएला में तेल का उत्पादन, उसकी बिक्री और मुनाफा कमाने की अनुमति दी जाएगी।

भारत की घटती प्रासंगिकता

चार घंटे तक चले *एब्सोल्यूट रिजाल्व* नामक इस अभियान ने अमेरिकी सशस्त्र बलों की असाधारण रूप से श्रेष्ठ तकनीक, मशीनरी, खुफिया जानकारी, योजना और उसके क्रियान्वयन का कुशल प्रदर्शन किया। आधी रात को किसी दूसरे देश में घुसकर कड़ी सुरक्षा वाले राष्ट्रपति भवन से राष्ट्राध्यक्ष को बिना किसी नुकसान के अपनी हिरासत में लेना; हम सब सोचते थे कि यह कहानियों और कल्पनाओं की बात है, लेकिन अमेरिका ने साबित कर दिया कि उसकी सेना ऐसा कर सकती है। अमेरिकी सेना विश्व के इतिहास में निर्मित सबसे घातक युद्ध मशीन है। चिंताजनक रूप से चीन को छोड़कर, विश्व के एक नए सरदार के उदय के भी प्रमाण मिल रहे हैं।

एब्सोल्यूट रिजाल्व से पहले और बाद में भारत पर किसी का ध्यान नहीं गया। ट्रंप अपने दावों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दो बार झटका दे चुके हैं: एक बार भारत-पाकिस्तान युद्ध समाप्त करने के मुद्दे पर और *दूसरी* बार भारत की ओर से ट्रंप को खुश करने के लिए रूसी तेल के आयात में कमी करने के मुद्दे पर। सरकार ट्रंप के गुस्से से इतनी डरी हुई है कि वेनेजुएला पर जारी आधिकारिक बयान में राष्ट्रपति मादुरो की गिरफ्तारी की निंदा नहीं की गई और न ही इसमें अमेरिका की भूमिका का जिक्र किया गया। इस बयान में 'वेनेजुएला में हाल के घटनाक्रमों' का जिक्र किया गया और 'सभी संबंधित पक्षों से संवाद के माध्यम से शांतिपूर्ण ढंग से मुद्दों को हल करन' का आह्वान किया गया, मानो यह किसी फुटबाल मैच के स्कोर पर हुए विवाद को लेकर सलाह हो!

इस मुद्दे पर भारत ब्रिक्स के पांच संस्थापक देशों और यूरोप के बीच अलग-थलग पड़ गया है। विश्वगुरु के दावों के बावजूद, भारत वैश्विक मामलों में अपनी आवाज और प्रासंगिकता खोता जा रहा है। जैसा कि एक पूर्व भारतीय राजदूत ने कहा था, 'भारत जो कहेगा, उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।'

साम्राज्यवाद को खुली छूट

मुझे डर है कि *एब्सोल्यूट रिजाल्व* ने रूस और चीन को खुली छूट दे दी है। ट्रंप ने ग्रीनलैंड पर कब्जा करने का संकेत दिया है। रूस-यूक्रेन युद्ध का समाधान- यदि होता है- तो यूक्रेन की ओर से रूस को अपना क्षेत्र सौंपना होगा। चीन अपनी 'एक चीन' नीति को उसके अंतिम परिणाम तक ले जाने के लिए प्रेरित होगा। यदि चीन की ओर से भारत की उत्तरी सीमा या अरुणाचल प्रदेश में घुसपैठ का एक और प्रयास किया जाता है, तो भारत को खुद ही अपना बचाव करना होगा। वेनेजुएला के तेल भंडार पर कब्जा करने के बाद अमेरिका की भारत के साथ व्यापार समझौता करने में रुचि कम हो गई है। ट्रंप *बिना किसी* व्यापार समझौते के शुल्कों में हेरफेर करके भारत से अमेरिका को होने वाले निर्यात को नियंत्रित कर सकते हैं - अपने देश में माल की आवाजाही को कम या ज्यादा करके।

अमेरिकी इतिहास में डोनाल्ड ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में सबसे अधिक हस्तक्षेप करने वाले राष्ट्रपति साबित हुए हैं। इस सूची में फिलिस्तीन, ईरान, सीरिया, यमन, नाइजीरिया और अब वेनेजुएला शामिल हैं। यह स्वघोषित नए सरदार का कुरूप चेहरा है। हम भले ही मादुरो या उनकी पत्नी के लिए आंसू न बहाएं, लेकिन हमें साम्राज्यवाद की वापसी और राष्ट्रों की संप्रभुता के पतन पर शोक व्यक्त करना चाहिए।

सपने और सच्चाई

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

इंदौर के जहरीले पानी के लिए कुछ छोटे-मोटे अधिकारी बर्खास्त किए गए हैं, लेकिन मंत्री को कुछ नहीं होगा। बावजूद इसके कि वे शहरी कार्य मंत्री हैं। जब तक इस तरह की गलत परंपराएं रहेंगी अपने देश में, यकीन के साथ कहा जा सकता है कि भारत अगले चालीस वर्षों तक भी विकसित देश नहीं बन सकता है। इंदौर में जो हुआ कम से कम सुर्खियों में रहा कुछ दिनों तक।

अच्छा लगता है मुझे जब प्रधानमंत्री कहते हैं कि 2047 तक भारत पूरी तरह विकसित देश बन जाएगा। बहुत अच्छा लगता है इसलिए कि हर भारतीय का यही सपना है और मेरा भी है, लेकिन जब लोग मरते हैं गंदे पानी की वजह से हमारे सबसे स्वच्छ शहर में, तो यकीन करना मुश्किल हो जाता है कि हमारे इस सपने को साकार होने में सिर्फ बीस साल और लगेंगे। इंदौर में जो हुआ, किसी हाल में न होता अगर अर्ध-विकसित देशों की श्रेणी में भारत पहुंच गया होता। महीनों से शिकायतें दर्ज हो रही थीं कि पानी के एक पाइप को बदलने की जरूरत है, लेकिन जैसा अक्सर होता है इस बात पर, उन लोगों ने ध्यान नहीं दिया जिनकी जिम्मेदारी थी समस्या का तुरंत हल ढूंढना।

आपने भी शायद देखा होगा वह वीडियो, जिसमें एक पत्रकार मंत्रीजी से पूछता है जहरीला पानी पीने से लोगों के मरने के बारे में और मंत्री की प्रतिक्रिया। गुस्से में कैलाश विजयवर्गीय पत्रकार को कहते हैं कि ऐसे सवालों के जवाब उनसे नहीं पूछे जाने चाहिए। पत्रकार ने साहस दिखा कर मंत्रीजी को कहा कि इस तरह के शब्द एक वरिष्ठ मंत्री के मुंह से नहीं निकलने चाहिए, लेकिन मंत्री ने जवाब देना जरूरी नहीं समझा। जब कुछ दिन बाद एक एसडीएम ने अपने आदेश में मंत्रीजी के उस शब्द का जिक्र किया, तो उसको निलंबित कर दिया गया। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय वही हैं जिनके बेटे ने कुछ साल पहले एक सरकारी अधिकारी पर बल्ला उठा कर हमला करने की कोशिश की थी। गिरफ्तार तो हुए थे मंत्रीजी के बेटे, लेकिन विशेष अदालत ने उनको रिहा कर दिया था इस आधार पर कि पुलिस आरोप सिद्ध करने में असफल रही थी।

इंदौर के जहरीले पानी के लिए कुछ छोटे-मोटे अधिकारी बर्खास्त किए गए हैं, लेकिन मंत्री को कुछ नहीं होगा। बावजूद इसके कि वे शहरी कार्य मंत्री हैं। जब तक इस तरह की गलत परंपराएं रहेंगी अपने देश में, यकीन के साथ कहा जा सकता है कि भारत अगले चालीस वर्षों तक भी विकसित देश नहीं बन सकता है। इंदौर में जो हुआ कम से कम सुर्खियों में रहा कुछ दिनों तक। इस तरह की अनेक घटनाएं होती हैं, जिनकी बात तक नहीं होती है मीडिया में। इसलिए कि ऐसे हादसे होते हैं उन बीस फीसद भारतीयों के साथ जो गरीब हैं और जिनके जीवन उतने ही बेहाल हैं जितना अति-गरीब अफ्रीकी देशों में रहने वालों का होता है।

शर्मनाक सच्चाई है यह, लेकिन इसको छुपाने से अपना देश बेहतर नहीं होने वाला है। परिवर्तन तब आएगा, जब हम अपने शासकों को याद दिलाते रहेंगे बार-बार कि उनका ध्यान जाना चाहिए उन शहरी बस्तियों की तरफ और उन अति-पिछड़े गांवों की तरफ जहां रहते हैं भारत के गरीब। मुंबई में रहती हूं, तो रोज दिखते हैं मुझे ऐसे लोग जो या तो फुटपाथों पर अपना पूरा जीवन गुजारते हैं या ऐसी गंदी बस्तियों में, जहां न साफ पानी होता है, न साफ वायु, न अच्छे स्कूल और न स्वास्थ्य सेवाएं। मुंबई जैसे महानगर में किराए इतने अधिक हैं कि बीच शहर में अगर एक 'खोली' मिल जाए, तो मासिक किराया तीस हजार रुपए से कम नहीं होता है। नतीजा यह कि पांच सितारा होटलों में नौकरी करने वाले मुलाजिम भी झुग्गी बस्तियों में रहने पर मजबूर हैं।

माना कि देश में गरीबों की संख्या काफी हद तक कम हुई है, लेकिन अभी भी गरीबी और गंदगी की समस्या इतनी ज्यादा है कि इंदौर जैसी घटनाएं होती रहेंगी। महानगरों में हर दूसरे-तीसरे दिन खबर मिलती है कि किसी सीवर को साफ करते समय लोगों की मृत्यु हो गई है। मगर आज तक ऐसी किसी घटना के बाद सुनने में नहीं आया है कि नगरपालिका ने सुरक्षित उपकरण उन लोगों के लिए अनिवार्य कर दिए हों जो हमारे सीवर साफ करने के लिए मजबूर हैं।

अब पूछिए कि हालात सुधरते क्यों नहीं हैं, तो मेरा जवाब यही होगा कि जब तक ऊपर तक अधिकारियों और नेताओं को दंडित नहीं किया जाएगा, तब तक परिवर्तन नहीं आने वाला है। विकसित देशों में मंत्री जेल भेजे जाते हैं जब उनकी लापरवाही के कारण लोग मरते हैं। हमारे देश में ऐसा नहीं होता है इसलिए कि हमारे प्रशासनिक तरीके अभी तक बिल्कुल वैसे हैं जैसे हुआ करते थे ब्रिटिश राज में। अभी तक प्रशासनिक सुधारों की कोशिश सिर्फ यह हुई है कि पासपोर्ट लेना आसान हो गया है पहले से। बिजली के बिल भरने आसान हो गए हैं। अन्य छोटी-मोटी सुविधाओं के लिए हमको आला अधिकारियों के सामने भीख नहीं मांगनी पड़ती है। मुझे याद हैं आज भी वे दिन जब रसोई गैस का सिलेंडर तभी मिलता था, जब किसी सांसद तक पहुंच होती थी। सांसदों के कोटा होते थे जो वे अपने दोस्तों और परिवारवालों में बांटते थे जैसे बहुत बड़ा अहसान उन पर कर रहे हों। अपने घर में टेलीफोन लगवाना इससे भी ज्यादा मुश्किल हुआ करता था।

इन चीजों में फर्क आया है तकनीकों में आधुनिकता आने के कारण। लेकिन जहां भी आधुनिक तकनीकों से काम नहीं बनता है, वहां वही हाल देखने को मिलता है आज भी जो दशकों पहले था। हमारे मंत्री और आला अधिकारी रहते हैं बिल्कुल वैसे, जैसे रहा करते थे अंग्रेज हुकुमरान। उनके लिए बड़ी-बड़ी कोठियां हैं जिनमें कभी गंदे पानी की समस्या नहीं होती है। बिजली चली जाए, तो जनरेटर होते हैं इनकी कोठियों में। इसलिए बहुत जल्दी भूल जाते हैं कि वे जन प्रतिनिधि हैं, राजा नहीं। इनको ठीक करना हो, तो सबसे पहले इनको सरकारी कोठियों से निकालना होगा ताकि रहने लगे उन बस्तियों में जहां रहते हैं वे लोग जिन्होंने उनको अपनी सेवा के लिए अपना कीमती वोट दिया है। सरकारी आवास देने की प्रथा बंद हो।

वैचारिक प्रतिबद्धता

संदर्भ

राकेश सिन्हा

भारतीय सभ्यता प्रयोगधर्मी रही है, जिसे अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही परिस्थितियों में लोगों ने विस्मृत होने नहीं दिया। यही प्रयोगधर्मी स्वभाव बहुलता, विविधता एवं चेतना की असीमित स्वतंत्रता की जननी है। अर्थात आस्था और विवेकवाद दोनों ही समांतर तथा एक-दूसरे के पूरक के रूप में अस्तित्व में रहते हैं। इसी को समझ कर जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने लिखा था, 'भारत : हमें क्या सिखाता है?' पश्चिम के मापदंड के आधार पर भारत कब राष्ट्र बना, यह हमारी चिंता का विषय नहीं होना चाहिए।

पंडित जवाहर लाल नेहरू और नरेंद्र मोदी का एक-दूसरे के आमने-सामने हो जाना वैचारिक बहस की नियति है। यही सोमनाथ मंदिर के सवाल पर हो रहा है। 1026 ईस्वी में मोहम्मद गजनी ने इसका विध्वंस किया था। अब एक हजार साल बाद 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' मनाया जा रहा है । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसके अभिन्न हिस्सा हैं। उनकी भागीदारी महज कर्मकांड नहीं होकर वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ है। पचहत्तर वर्ष पूर्व 1951 में सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ था, तब नेहरू उस पुनर्निर्माण के विरुद्ध थे। नेहरू का विरोध कर्मकांड नहीं था। उनकी भी अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता थी।

सोमनाथ मंदिर का धार्मिक महत्त्व एक ज्योतिर्लिंग के रूप में है, लेकिन वैचारिक महत्त्व 'भारत के विचार' की परिभाषा से भी जुड़ा है। देश के दो प्रधानमंत्रियों का एक-दूसरे से विपरीत राय रखना भारतीयता के दो दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व माना जा सकता है। नेहरू क्यों इसके विरोध में थे? इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने स्वयं एक अगस्त 1951 को मुख्यमंत्रियों को लिखे पत्र में दिया है। वे कहते हैं, 'इस देश में बहुत कम लोग यह समझते हैं कि भारत के सांप्रदायिक संगठनों के कारण विदेशों में हमारी साख को कितनी गहरी क्षति पहुंचती है, क्योंकि ये संगठन ठीक उन्हीं प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें पश्चिमी मानसिकता अत्यंत नापसंद करती है और समझ नहीं पाती। हाल ही में सोमनाथ मंदिर का बड़े ठाठ-बाट और समारोह के साथ उद्घाटन विदेश में भारत और उसके घोषित आदर्शों के बारे में अत्यंत नकारात्मक प्रभाव छोड़ गया है।'

यह बात सामान्य बुद्धि के परे है कि कोई समाज आक्रांता द्वारा विखंडित किए गए मंदिर या ऐतिहासिक स्थल का पुनर्निर्माण करता है, तो वह सांप्रदायिक मान लिया जाएगा। नेहरू की दलील के पीछे हिंदू-मुसलिम सवाल था। संभवतः गजनी के संप्रदाय से उन्होंने समकालीन भारत के मुसलमानों से जोड़ने का प्रयास किया या धार्मिक स्थल के पुनर्निर्माण में राज्य की भूमिका को धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा के प्रतिकूल माना। दोनों ही तर्क अविवेकपूर्ण हैं। तभी तो स्वयं उन्हें अपने दल और मंत्रिमंडल में अलग-थलग होना पड़ा था। सरदार पटेल, केएम मुंशी, एनवी गाडगिल जैसे वरिष्ठ मंत्री इस जीर्णोद्धार अभियान के सूत्रधार थे। मुंशी और गाडगिल तो सोमनाथ ट्रस्ट के सदस्य थे और स्वयं राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद इसके वित्तीय मामलों की देखरेख कर रहे थे।

दो मई 1951 को सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर राजेंद्र प्रसाद ने जो कहा, वह वैचारिक बहस की बुनियाद है जो अब तक ठंडे बस्ते में बंद था। राजेंद्र प्रसाद के शब्दों में, 'अपनी राख से फिर उठ खड़ा होकर यह सोमनाथ मंदिर दुनिया के सामने यह घोषणा कर रहा है कि जिस वस्तु के प्रति लोगों के हृदय में असीम श्रद्धा और प्रेम होता है, उसे कोई व्यक्ति और कोई शक्ति कभी नष्ट नहीं कर सकती।'

आज हमारा प्रयास इतिहास को सुधारने का नहीं है। हमारा एकमात्र उद्देश्य फिर से यह घोषित करना है कि हम उस आस्था, विश्वास और उन मूल्यों के प्रति दृढ़ रूप से जुड़े हुए हैं, जिन पर हमारा धर्म अनादि काल से आधारित रहा है। नेहरू चूक गए कि गजनी सिर्फ आक्रांता नहीं था, बल्कि एक विशिष्ट दृष्टिकोण का प्रतिनिधि था, जिसमें तर्क और ताकत दोनों का उपयोग एकरूपता स्थापित करने के लिए किया जाता है।

इसके प्रतिकूल भारतीय सभ्यता प्रयोगधर्मी रही है, जिसे अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही परिस्थितियों में लोगों ने विस्मृत होने नहीं दिया। यही प्रयोगधर्मी स्वभाव बहुलता, विविधता एवं चेतना की असीमित स्वतंत्रता की जननी है। अर्थात आस्था और विवेकवाद दोनों ही समांतर तथा एक-दूसरे के पूरक के रूप में अस्तित्व में रहते हैं। इसी को समझ कर जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने लिखा था, 'भारत : हमें क्या सिखाता है?'

पश्चिम के मापदंड के आधार पर भारत कब राष्ट्र बना, यह हमारी चिंता का विषय नहीं होना चाहिए। हम अपने मापदंड से कब से और कैसा राष्ट्र रहे हैं, यह विमर्श का मूल विषय है। यह श्रेय नरेंद्र मोदी को जाता है कि उन्होंने भारत की भूमिका में बुनियादी परिवर्तन किया है। राज्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रश्नों पर उदासीन नहीं रह सकता है। इसलिए वे सभी सूक्ष्म या स्थूल सांस्कृतिक विषय से राज्य एवं राज्यों की एजंसियों से जोड़ते हैं।

प्रश्न उठता है कि क्या ऐसा करना संप्रदायनिष्ठ होना है या नहीं? इसके उत्तर की खोज ही वैचारिक बहस है। भारतवर्ष चौहद्दी से अधिक संस्कृति और सभ्यता के आयामों से पहचान में रहा है। इसमें स्वतंत्र चेतना अबाधित रही है। मगर दूसरे के अस्तित्व की नैतिक और नीतिगत वैधानिकता स्वीकार की जाती है। यही भारत की वैचारिक निरंतरता का सार है। नरेंद्र मोदी इसके अनुकूल भारतीय राज्य को प्रोत्साहित करते हैं। जहां नेहरू सोमनाथ के जीर्णोद्धार में संकोच महसूस कर रहे थे, मोदी के शब्दों में, 'मैं पूरे विश्वास और स्पष्टता के साथ यह कहना चाहता हूं कि सोमनाथ की कहानी, पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष बाद भी, विनाश की कहानी नहीं है। यह भारत माता की करोड़ों संतानों की अटूट आस्था और अदम्य साहस की कहानी है।'

यह संकीर्ण सवाल नहीं है। यह एक वैश्विक स्तर पर सभ्यताई राष्ट्र की कल्पना को साकार करने की भारतीय जिजीविषा है, जो कभी समाप्त नहीं हो सकती। अंततः बात इस प्रश्न पर सिमट जाती है कि भारत अपनी पहचान, अपनी संस्कृति और सभ्यता अर्जित करेगा या पश्चिम के आईने में उनके अनुकूल ढलेगा? नेहरू पश्चिम जगत के अनुकूल और मोदी भारत की सांस्कृतिक चेतना की प्रतिबद्धता पर टिकी दो विचारधाराओं के प्रतिनिधि हैं। इस बहस का चलना ही हमारी जीवंतता है।

रोक सको, तो रोक लो

बाखबर

सुधीश पचौरी

पुलिस के ऐन सामने और दिनदहाड़े घर में घुस कर कुछ गोपनीय फाइलों, इलेक्ट्रानिक उपकरणों और डेटा आदि को 'उठा' लिया गया...मदाम ने छापा मारने वालों पर ही छापा मार दिया...कल्लो क्या कल्लोगे...! सब चैनलों ने इस घटना को सीधे प्रसारित किया।

मेगैंबो खुश हुआ।

एक दिन 'मेगैंबो' ने एक देश के राष्ट्रपति को सरेआम 'उठा' लिया...।

'मेगैंबो' खुश हुआ।

'मेगैंबो' ने फिर अपने 'चमचे' को गद्दी पर बिठा दिया...।

देशभक्ति के नशे में 'चमचे' ने जब 'मोगांबो' को आंखें दिखाई, तो मेगैंबो ने उसे भी धमका दिया कि बचुआ! अगर ज्यादा टें-टें की, तो आपका हश्र भी वही होगा, जो उसका हुआ है...और फिर वे चुप हो गए।

'मेगैंबो' ने कहा- अब इस देश को हम चलाएंगे...लेकिन सब चुप। कविजन निर्वाक...।

'हम उसका तेल बेचेंगे... लेकिन सब डरे से, सब मरे से ... सब चुप कविजन निर्वाक...।

हम उस पर नशे का धंधा करने और अपनी जनता को बर्बाद करने के लिए मुकदमा चलाएंगे... हम 'इसे' उठा लेंगे...उस पर 'सटा' लेंगे... उसे 'पटा' लेंगे। इसे 'नेस्तनाबूद' कर देंगे उसे बर्बाद कर देंगे।

उस 'हरी घास पर क्षण भर' छाप, मैदान को पार करते 'मेगैंबो' ने विजय पताका की तरह फहराया 'लाल रूमाल'...।

'मेगैंबो' खुश हुआ...।

मेगैंबो की 'धमकी' को लगभग 'धमकाते' हुए एक और राष्ट्राध्यक्ष बोला : हम न रुकेंगे, हम न झुकेंगे...। हिम्मत हो, तो आ जा उठा ले जा...। 'मेगैंबो' को उसकी नासमझी पर तरस आया, लेकिन चुप लगा गया।

दुनिया एकदम खेली खाई, चालाक और खुर्राट...। कुछ देश इधर, तो कुछ उधर।

कुछ कहें 'मेगैंबो शाबास!' कुछ कहें 'मेगैंबो' हो बर्बाद।

'मेगैंबो' के देश में ही उसके विरोध में कुछ जगह मोर्चे... प्रदर्शन...पोस्टरबाजी कि 'मेगैंबो' पागल...'मेगैंबो' 'साम्राज्यवादी'...। क्या-क्या नहीं कहा गया।

कुछ प्रशंसक कहिन कि 'मेगैंबो' जो करता है, खुलेआम करता है और डंके की चोट पर करता है। जो ठान लेता है, करके रहता है। रोने वाले रोते रहते हैं और वो अपना काम करता रहता है...।

कित्ता प्यारा मेगैंबो को बनाया...दिल करे देखता रहूं...।

'मेगैंबो' खुश हुआ...।

फिर एक दिन एक अन्य देश पर बम बरसा कर कहने लगा कि रे देश! अगर तूने जरा भी बदतमीजी की...मेरे भोले-भाले प्यारे 'जेंजीज' को जरा भी 'टच' किया, तो इत्ता मारूंगा, इत्ता मारूंगा कि कभी भूल नहीं पाओगे...।

कितनी शिष्ट दादागीरी है!

धींग मारे और रोने भी न दे...धींग इसी तरह सबको काबू में रखता है।

कितनी भी 'आजादी आजादी' भज लो, कितने भी 'स्वतंत्र', 'स्वयंभू' और 'सार्वभौम' हो लो, लेकिन चलनी तो 'मेगैंबो' की ही है...। रोक सको, तो रोक लो।

इस पूरे सप्ताह 'मेगैंबो' खुश दिखा। बहुत खुश दिखा। दूसरी ओर पुलिस के ऐन सामने और दिनदहाड़े घर में घुस कर कुछ गोपनीय फाइलों, इलेक्ट्रानिक उपकरणों और डेटा आदि को 'उठा' लिया गया...मदाम ने छापा मारने वालों पर ही छापा मार दिया...कल्लो क्या कल्लोगे...!

सब चैनलों ने इस घटना को सीधे प्रसारित किया और माना कि इतिहास में ऐसा न कभी देखा न सुना कि जो फाइलें लेने के लिए आए, वे देखते रह गए और फाइलें चली भी गईं।

अब तुमसे कौन डरेगा...ईडी, पुलिस, सीबीआइ और सरकार...।

अब इसे कहते हैं 'चोरी और सीनाजोरी', लेकिन इस पर कौन न कुर्बान जाए कि एक महिला मुख्यमंत्री सबकी आंखों के सामने उन्हीं दस्तावेजों को लेकर यह कहते निकल गईं कि इनमें हमारी चुनावी रणनीति है, जिसे जान कर वो हमें हराना चाहते हैं...। फिर अगली सुबह मदाम के दल के आठ सांसदों ने गृहमंत्री के दफ्तर के आगे धरना देकर 'विक्टिम कार्ड' खेला। साथ ही आक्रामक तेवर भी जारी रखा। एक सांसद ने कहा कि 'ईडी चोर है... हम इनको जीतने नहीं देंगे।'

जवाब में सत्ता प्रवक्ता कहिन कि उन्होंने जांच के काम में बाधा डाली। समझ नहीं आता कि आखिर वे छिपा क्या रहे हैं और क्यों घबरा रहे हैं? कानून अपना काम करेगा...। उसे करने दीजिए।

इसके बाद खबरों में था 'तुर्कमान गेट' पर बने 'अवैध निर्माण' को नगर निगम द्वारा गिराया जाना...। फिर यह देखते ही देखते अचानक एक बड़ी खबर बन गई। ...इधर बुलडोजर थे, उधर बुलडोजर थे और पत्थरबाजी करती भीड़ थी।

आगमन

कहानी

पूनम पांडे

उस दिन सुबह से ही खुशनुमा हवा बह रही थी। लवि ने अंगड़ाई ली और खिड़की का परदा हटाया। रसोई में जाकर गुनगुना पानी पिया। उसके बाद चाय के लिए दूध मिला पानी उबालने रख दिया। लवि को चाय छानते हुए किसी की याद आ गई। मिशी, हां मिशी ही थी। लवि का मन अतीत में भटका। छात्रावास में उसके साथ कमरा साझा करने वाली दोस्त। मिशी को कितना सताती थी लवि। मिशी शिमला की थी। गिलास भरकर कड़क चाय पीने की शौकीन थी। मगर, लवि उसके हिस्से की चाय सुड़क कर खत्म कर देती। मिशी अब जाने कहां होगी। लवि ने आज उसे जी भरकर याद किया। रेनबो नाम था उनके हास्टल का। तब उम्र भी बीस या इक्कीस रही होगी।

लवि ने एकाध बार पूछा था कि मिशी तुम तो साहित्य पढ़ती हो। इसका मतलब प्रेम विवाह करोगी। इसके जवाब में मिशी बस मंद-मंद मुस्कान बिखेर देती थी। मिशी अच्छे कपड़े पहनती थी। इससे लवि को इतना तो अंदाजा हो गया था कि वह खाते-पीते घर की बेटी है। मगर यह भी उसका अनुमान ही था। लवि इतिहास पढ़ रही थी। मिशी अंग्रेजी साहित्य। एक दिन लवि ने इतिहास की किताब के पन्ने पलटते हुए कहा कि, 'मिशी तुम मेरे बराबर खंडहरों की जानकारी नहीं रख सकती। बोलो।' 'सच, खंडहर, हमको समय की कविता सुनाते हैं ना, लवि।' मिशी ने भावुक होकर कहा। लवि उसका चेहरा देखती रह गई थी।

मिशी अक्सर चुप ही रहती थी। उसके दिल की जमीन से शब्द खोदकर बाहर निकालने पड़ते थे। मगर एक बार संयुक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। तब मिशी ने खूब बढ़-चढ़कर भाग लिया था। गीत, संगीत, नाटक, हास्य, अभिनय, नृत्य, कविता, किस्से आदि से भरपूर यह आयोजन काफी दिनों तक सभी की जुबान पर चढ़ा रहा। तब मोबाइल फोन तो थे ही नहीं। बस, बातों से ही इसकी सराहना होती रही। लवि ने तब गौर किया कि मिशी कार्यक्रम की सामग्री कहीं से लेती थी। तब हर समय उसके पास दाहिने या बाएं हाथ में एक रजिस्टर लहराता रहता था। तमाम कविताएं, शायरी, सूक्तियां आदि भरी हुई थी उसमें।

एक दिन मौका पाकर लवि चोरी से वह रजिस्टर पढ़ने लगी। लवि उसमें मिशी का अतीत खोजना चाहती थी। मगर लवि को कुछ भी नहीं मिला। बस दो ढाई साल का यह साथ रहा। फिर दोनों अपने-अपने घर चली गईं। लवि व्याख्याता हो गई थी। उसने इसी साल स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली है, और घुमक्कड़ बनकर तमाम जगहों की यात्रा करती रहती है। लवि आभासी मंच से नहीं जुड़ी है। वह अपनी आजादी, अपने हक और अपनी मनपसंद जिंदगी की इतनी शौकीन रही कि उसने विवाह तक नहीं किया था। बड़े भाई ने कितने रिश्ते बताए। लवि पलट कर जवाब देती थी कि मेरी कमाई मेरी मर्जी। यह जीवन

मिशी इतनी मानवीय और उदार निकली। उसने तो जीवन ही सार्थक कर लिया। आज लवि को खुद पर और अपनी खुदगर्ज सोच पर काफी लज्जा महसूस हो रही थी।

जरा सा तो है। केवल अपने लिए ही जीना चाहिए। और, फिर इसके आगे पूर्णविराम लग गया था। लवि खुद को काफी व्यस्त रखती थी।

आज इस समय उसे मिशी की इतनी याद जाने क्यों आने लगी थी। मिशी और वह साथ रहते थे। तब भी मिशी अपने बारे में कुछ अधिक बताती नहीं थी। साहित्य के सागर में मिशी के मन की नाव हिचकोले खाती रहती थी। चाय खत्म हो गई थी। लवि हाथ में चाय का कप लिए फिर से मिशी के बारे में सोचने लगी थी। तभी उसे ख्याल आया कि उसने आज का अखबार नहीं देखा है। वह कप रसोई में रखकर अखबार के पन्ने पलटने लगी। अचानक उसकी नजर एक तस्वीर पर टिक गई।

आंखों से न देख पाने वाले एक गायक का आज उनके शहर में कार्यक्रम था। अखबार में प्रेस कांफ्रेंस की फोटो छपी थी। देखने में वह मिशी जैसी लग रही थी। उसने उसी समय उस कार्यक्रम में जाने का फैसला किया। पोहे का नाश्ता करके वह नहाई। कुछ देर उसने अपने पौधों की देखभाल की। उसके बाद वह जाने के लिए तैयार हुई।

अभी काफी समय था। इसलिए बाहर ही अपने पसंदीदा होटल में उसने लंच किया। ठीक तीन बजे समारोह स्थल पर पहुंच गई। यह एक संगीतमय संध्या थी। लोग आ ही रहे थे। बैठ रहे थे। तभी कुछ छायाकार आए। शायद कलाकार आ रहे थे। लवि को सब साफ-साफ दिखाई दे रहा था। कलाकार का हाथ थामे एक महिला साथ आ रही थी। लवि के मुंह से अनायास ही निकला। मिशी। मिशी। महिला आगे बढ़ गई थी। शायद उसने सुना नहीं था।

मिशी ने मंत्रमुग्ध होकर कलाकार को सुना। कितना प्यारा नाम था उनका। कमलनयन। उनकी ओर देखते हुए कोई नहीं कह सकता था कि वे नेत्रहीन थे। मिशी उनके ठीक बगल में बैठकर तानपूरा छेड़ रही थी। बहुत ही मधुर सुर था उनका। लवि का मन हो रहा था कि मिशी के पास जाकर मंच पर ही बैठ जाए। मगर लवि ऐसा किस हक से करती। उसका और मिशी का तो पिछले तीस साल से मिलना-जुलना ही नहीं हो सका था। लवि को तब भी उससे कुछ बात करने का मन था। लगभग एक घंटा हो गया था। दर्शकों की फरमाइश के कारण कार्यक्रम काफी लंबा हो रहा था। लवि को थकान होने लगी थी। वह वापस लौटकर घर आ गई थी।

घर आते ही उसे गहरी नींद आ गई। सुबह उठी तो होश आया कि मिशी से मिलना था। उसने सबसे पहले अखबार उठाया। आयोजन की लंबी चौड़ी खबर छपी थी। आज तो लिखा था कि कमलनयन और उनकी पत्नी मिशी। यानी वह उनकी पत्नी। हे, राम, यह मिशी भी ना। लवि को कुछ अजीब सा लगा। उससे रहा न गया। उसने फोन लिया। आज शायद पहली बार वह किसी का जीवन परिचय खोज रही थी। उसे आभासी मंच पर सब मिल गया। कमलनयन और मिशी पिछले पच्चीस साल से पति-पत्नी हैं। कमलनयन जन्म से अंधत्व के शिकार हैं। मिशी एक कवि हैं। दोनों दयानतदारी करते हैं। आवारा पशुओं की सेवा करते हैं वगैरह-वगैरह। अब तो दस-बारह मिनट में लवि ने उनके बारे में काफी कुछ जान लिया था।

ओह, तो मिशी इतनी मानवीय और उदार निकली। उसने तो जीवन ही सार्थक कर लिया। आज लवि को खुद पर और अपनी खुदगर्ज सोच पर काफी लज्जा महसूस हो रही थी। लवि ने तो एक-एक पाई और एक एक पल अपने आप पर ही लुटाया था। मगर आज उसने कुछ फैसला किया। उसने आभासी मंच से ही कमलनयन फाउंडेशन की सारी डिटेल ली। पचास हजार की राशि उनकी संस्था को दान कर दी। कुछ ही देर बाद संस्था के सचिव के द्वारा उसके फोन पर एक लंबा सा प्यारा संदेश आ गया था। लवि को बहुत-बहुत धन्यवाद लिखा था। लवि ने एक गहरी सांस ली। उसने तय कर लिया कि आज से वह अपना जीवन भी सेवा को ही समर्पित करेगी।

समय सूचक

स्त्री शिक्षा की राह में चमकता तारा

जनसत्ता सरोकार

शुक्र ग्रह पर एक 'क्रेटर' का नाम जोशी है। धरती पर मुख्यधारा की आबादी में जिस काम में सिद्धहस्त होना पुरुषों के लिए सहज गौरव की बात होती है, वहां महिलाओं के लिए पूरा असहजता का आसमान होता है। आज किसी महिला डाक्टर का नाम सुनते ही दिल में सम्मान का भाव आता है। पर महिलाओं के लिए यह भाव हासिल करना उतना आसान नहीं था। इस राह पर चलने के लिए आनंदी गोपाल जोशी ने इतनी मुश्किलें उठाईं कि उनके सम्मान में शुक्र ग्रह के 'क्रेटर' का नाम रखा गया। आनंदी गोपाल का जन्म 31 मार्च 1865 को महाराष्ट्र के कल्याण में हुआ था। उनका बचपन का नाम यमुना बाई था। महज नौ साल की उम्र में यमुना का विवाह गोपाल राव जोशी से हुआ। गोपाल राव जोशी ने अपनी ब्याहता को आनंदी बाई का नाम दिया। गोपाल राव प्रगतिशील मानसिकता के इंसान थे व स्त्री शिक्षा के महत्त्व को समझते थे। उन्होंने अपनी बालिका वधू को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। चौदह साल की उम्र में आनंदी ने एक बच्चे को जन्म दिया, जिसकी मृत्यु हो गई। अपने नवजात की मृत्यु का आघात मिलने के बाद आनंदी ने डाक्टर बनने का संकल्प लिया। गोपाल राव जोशी तत्कालीन समय में हर तरह की संकीर्णताओं से मुक्त थे। उन्हें अहसास था कि डाक्टरी की पढ़ाई विदेश में करनी जरूरी है। पति के सहयोग और अपनी मेहनत से आनंदी गोपाल ने 1886 में अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में मेडिकल कालेज से एमडी की उपाधि हासिल की। वे भारत लौटीं और यहां कोल्हापुर के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल में महिला वार्ड की प्रभारी बनीं। कुदरत की विडंबना रही कि जिस स्त्री ने स्त्रियों का जीवन लंबा और सेहतमंद करने के लिए इतना संघर्ष किया, उसकी फरवरी 1887 में महज 22 साल में तपेदिक से मृत्यु हो गई।

आनंदी गोपाल जोशी

बारी-बारी जिम्मेदारी

रोचिका अरुण शर्मा

बाल कथा

शाम का समय था। सूरज अपने घर लौटने की तैयारी कर रहा था। तभी उसे रास्ते में चांद मिला। वह अपने काम पर जा रहा था। दोनों एक-दूसरे को देख कर मुस्कुराए। ढलती धूप देख नीले आसमान में उड़ते हुए पक्षी अपने घरों की ओर लौटने लगे। तभी सूरज सुनहरी-लाल रंग के गोले के समान हो पृथ्वी के और नीचे जाने लगा। चांद पहले से ज्यादा चमकीला एवं सुंदर हो कर ऊंचा चढ़ता जा रहा था। बंटी ने अपने घर की छत से चांद को आसमान में चढ़ते और सूरज को धरती की और लुढ़कते देखा। उसने सोचा, जरूर चांद ने सूरज को धक्का दिया होगा। तभी तो वह स्वयं खिलखिला कर चमक रहा है। लुढ़कते सूरज को पकड़ कर उठा भी नहीं रहा है। बेचारा सूरज पूरे दिन चमक कर धरती को रोशनी दे रहा था, इसलिए थक कर चूर हो गया होगा, और जैसे ही चांद ने उसे धक्का दिया होगा, तो वह लुढ़क गया होगा। इसलिए उसने सबसे नाराज हो कर अंधेरा कर दिया है।

बंटी ने चांद को पुकारा, 'चंदा तुम नीचे आओ और सूरज को मना कर आसमान में ले कर जाओ'। लेकिन चांद तो टिमटिमाते तारों के साथ अपनी टीम बना कर गोल-मटोल सुनहरी हो कर चमकता ही रहा। उसे बंटी की आवाज से कोई फर्क नहीं पड़ा। बंटी को चांद पर बहुत गुस्सा आया। वह खुद भी सूरज की तरह ही सवेरे से जगा हुआ था और और विद्यालय से लौटने के बाद पार्क में खेल कर आया था। इसलिए थक कर चूर भी हो चुका था। अभी उसे अपना गृहकार्य भी करना था। वह पैर पटकते हुए छत से नीचे लौट आया। अपना गृहकार्य निबटा कर उसने अगले दिन के लिए बस्ता जमाया, रात का खाना खाया और थोड़ी देर में सो गया।

सवेरे जब वह सो कर जगा, उसने देखा, सूरज की किरणें फैली हुई थीं और चांद फीका पड़ गया था। वह समझ गया कि सूरज रात भर आराम करके सवेरे पुनः अपने काम पर लौट आया है। अब चांद फीका पड़ गया है, शायद यह भी थक कर चूर है। रात भर सूरज की अनुपस्थिति में हल्की रोशनी जो देता रहा ताकि धरती पर रहने वाले जीव चैन की नींद सो सकें और अंधेरे से डरें भी नहीं।

उसने अपने दिमाग को खुजाया तब समझ पाया कि वे दोनों तो अपनी-अपनी पारी के अनुसार अपना-अपना काम कर रहे हैं। जैसे वह और उसका भाई गोलू, घर में मां के द्वारा दी गई अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। उसने अपने सिर को थोड़ा और खुजाया और सोचा, 'हम्म। दोनों हम भाइयों की तरह ही काम करते हैं। लगता है कि धरती इन दोनों की मां है तभी तो वह अपनी धुरी पर घूम कर चौबीस घंटे दोनों का ख्याल रखती है और बारी-बारी से दोनों को काम करना भी सिखाती है। सूरज तो रोशनी के साथ गर्मी देता है और चांद शीतलता, काम तो दोनों का थोड़ा एक सा और थोड़ा विपरीत है।

अब बंटी का दिमाग और भी ज्यादा सोचने लगा। 'अरे! यह तो ठीक वैसे ही है जैसे मेरा और मेरे भाई गोलू का'। उसने मन ही मन सोचा, 'मैं रोज सवेरे पौधों में पानी डालता हूं और गोलू शाम को। दिन भर पौधों की जड़ें पानी सोखती हैं और पौधों के विभिन्न भागों तक पहुंचती है। इसीलिए शाम तक मिट्टी पुनः सूखने लगती है। तभी तो सूरज के प्रकाश से प्रकाश संश्लेषण कर दिन में पौधों की पत्तियां भोजन बनाती हैं और हमें ऑक्सीजन देती हैं। जब शाम को गोलू पौधों में पानी डालता है तब मिट्टी पुनः गीली हो जाती है और जड़ें अपना कार्य करती रहती हैं। मिट्टी में दिए गए खाद पानी से जड़ें भोजन प्राप्त करती हैं और पौधे के विभिन्न भागों तक पहुंचाती हैं। रात के समय जब सूरज छुप जाता है तब पत्तियां भी आराम कर गहरी सांस लेती हैं और कार्बन-डाई-आक्साइड छोड़ती हैं। तभी तो धरती विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे एवं फसलें उपजाती है है। फिर

सवेरे जब वह सो कर जगा, उसने देखा, सूरज की किरणें फैली हुई थीं और चांद फीका पड़ गया था। वह समझ गया कि सूरज रात भर आराम करके सवेरे पुन: अपने काम पर लौट आया है। अब चांद फीका पड़ गया है, शायद यह भी थक कर चूर है। रात भर सूरज की अनुपस्थिति में हल्की रोशनी जो देता रहा ताकि धरती पर रहने वाले जीव चैन की नींद सो सकें और अंधेरे से डरें भी नहीं।

सूरज और चांद क्या भाई-भाई हैं?

तभी मां की आवाज आई, 'बंटी, गोलू विद्यालय जाने की तैयारी करो।' बंटी जल्दी से नहाने के लिए चला गया और दोनों भाई समय पर तैयार हो कर बस स्टाप पर पहुंच गए। लेकिन बंटी का ध्यान तो अभी भी सूरज और चांद में लगा हुआ था। उसने मन ही मन तय किया कि वह आज शाम को फिर से छत पर जाएगा और दोनों को एक साथ देखेगा। लेकिन दिन में जोरदार बारिश पड़ी तो सूरज काले गहरे बादलों के पीछे छिप गया। दिन में अक्सर हवा में गर्मी महसूस होती है। लेकिन सूरज के छिप जाने से हवा भी ठंडी हो गई। दिन में ही सांझ का सा ठंडा मौसम हो गया।

'तो सूरज बाबू मौसम को भी बदल सकते हैं?' गोलू ने सोचा। शाम हुई तब वह छत पर गया। आसमान में काले बादल छाए हुए थे। सूरज की हल्की किरणों से आसमान कहीं नीला और कहीं सुनहरी हो गया था। तभी उसने देखा आसमान में इंद्रधनुष बना हुआ था। अरे वाह! सतरंगी इंद्रधनुष? उसने अपने भाई गोलू को पुकारा, 'गोलू देख आसमान में इंद्रधनुष बना हुआ है।' गोलू दौड़ कर छत पर आया।

दोनों भाई सतरंगी इंद्रधनुष को देख कर कौतुहल से भर गए थे। सूरज और चांद की बारी-बारी जिम्मेदारी तो बंटी को समझ आ गयी थी लेकिन अब इंद्रधनुष में सात रंग कहां से आ गए यह सोच कर वह फिर से अपने सिर को खुजाने लग गया था। उसकी सोच खत्म होने से पहले शुरू जो हो जाती है।

हर उम्र हो सकती है नई

जनसत्ता सरोकार

अरे टिकटिकी जी शांत हो जाइए...देखिए आप रोइए नहीं, आप रोएंगी तो हमें भी रोना आ जाएगा। अच्छा आपकी सासु मां भी आई हैं...आपको प्रणाम। टीवी के दर्शकों को यकीन नहीं हो रहा है कि ये सब सुनते-देखते पच्चीस साल हो गए हैं। एक बार फिर दिल पूछ रहा है 'कौन बनेगा करोड़पति' के अगले सिलसिले में भी अमिताभ बच्चन ही होंगे न।

फिल्म उद्योग में एक मुकाम हासिल कर लेने के बाद नब्बे के दशक में अमिताभ बच्चन के सामने एक सवाल था कि अब क्या? क्या मेरा समय खत्म हो गया? तभी बड़े पर्दे के इस सितारे के पास छोटे पर्दे का प्रस्ताव आया। विदेशी कार्यक्रम की तर्ज पर कौन बनेगा करोड़पति शुरू करने की योजना थी। उस वक्त टीवी की अपनी सीमा थी और बड़े पर्दे वाले छोटे पर्दे को अछूत सा मानते थे। जिस कलाकार की शान एक समय बड़े पर्दे को पार कर गई थी, वह छोटे पर्दे की ओर कैसे जा सकता था। इन सब विरोधाभासों के परे अमिताभ बच्चन का जवाब था-हां।

एक ऐसा कार्यक्रम, जिसमें इस महासितारे को आम लोगों से संवाद करना था। उनके साथ ही

मार्गदर्शन

जुड़ कर कार्यक्रम की रोचकता बनानी थी। 'कौन बनेगा करोड़पति' वाले अमित जी एक दिन में नहीं बने। आसपास सहनायक, सहनायिका नहीं आम लोग थे। उनके साथ किरदार बनाना था। इन सबके लिए अमिताभ बच्चन ने थोड़ा वक्त लिया, और उतार फेंका सिनेमा के 'शहंशाह' का चोगा। सेट पर सहमी सी गृहिणी की ऊंची कुर्सी पर बैठने में मदद करना, सवालों में उलझ जाने पर हंसी-मजाक में उलझा देना। साथ आए परिजनों से आत्मीय होकर बात करना। अमिताभ बच्चन कौन बनेगा करोड़पति के सेट पर ऐसे बात करने लगे, जैसे किसी परिवार के ताऊ या दादाजी हों। प्रतियोगी जितने ज्यादा असहज होते, अमिताभ उन्हें उतना ही सहज करते। प्रतियोगी से पारिवारिक बातें ऐसे शुरू कर देते, जैसे वे दोनों एक ही मोहल्ले में रहते हों। खास कर अमिताभ बच्चन का अवधी शैली में हिंदी बोलना लोगों को छू जाता है।

किसी भी नई विधा और नई शैली को अपनाना आसान नहीं होता। लेकिन, इस दुनिया का सबसे बड़ा सच 'नया' ही है। जिसने नए को अपनाया, वह कभी पुराना नहीं हुआ, चाहे वह जिस भी उम्र का हो, जिस भी पीढ़ी का हो। ऐसा ही कुछ सोशल मीडिया मंचों और ब्लाग को लेकर था। जिन लोगों ने भी शुरू में हिचक तोड़ कर ब्लाग या सोशल मीडिया मंचों पर लिखना, दिखना शुरू किया, बाद में वही इस क्षेत्र के दिग्गज हुए।

हिंदी से लेकर बहुत सी भाषाओं में कई लोग ऐसे हैं, जिन्होंने सोशल मीडिया मंचों से लेखन शुरू किया और आज लोकप्रिय लेखकों में शुमार किए जाते हैं। उन्हें पढ़ने और समझने वाला एक बड़ा तबका है। जिस तरह से 'कौन बनेगा करोड़पति' अमिताभ बच्चन के लिए बिल्कुल नया मंच था, उसी तरह से हर माध्यम आपके लिए नया हो सकता है। अगर आपने हिचक छोड़ कर नए को अपना लिया तो तय है कि आप भी हमेशा अमिताभ बच्चन की तरह नए रहेंगे।

शतायु चित्रकार की सक्रिय कूची

चंद्र त्रिखा

अंबाला रेलवे स्टेशन पर रेल की प्रतीक्षा में एक प्रख्यात कलाकार द्वारा बनाई गई पेंटिंग 'रिफ्यूजी ट्रेन लेट 16 घंटे', विभाजन आधारित कला-साहित्य का एक विलक्षण पृष्ठ बन गई। उन परिस्थितियों की जो प्रस्तुति यशोधरा डालमिया ने अपनी टिप्पणी में दी है, उसे एक अद्भुत व प्रामाणिक गवाही मान लिया जाना चाहिए। 'तैल चित्र रिफ्यूजी ट्रेन लेट 16 एचआरएस (1947) में, हम पुरुषों और महिलाओं के एक समूह को एक-दूसरे से सटे हुए देखते हैं जो अलग-अलग भाव-भंगिमाएं व्यक्त करते हुए, उस ट्रेन का इंतजार कर रहे हैं जो उन्हें सीमा पार ले जाएगी। बीच में एक पुरुष और एक महिला आखिरी आलिंगन में लिपटे हुए हैं, क्योंकि उनका भविष्य अनिश्चित है, और पता नहीं वे फिर मिलेंगे भी या नहीं?

कलाकार कृष्ण खन्ना की अपनी विभाजन की यादें आज भी उतनी ही जीवंत हैं। 'हम दो गाड़ियों में सवार होकर सीधे शिमला पहुंचे (जहां उस शिक्षा विभाग में उनके पिता सरकार में उपनिदेशक थे, जिसकी स्थापना अभी होने वाली थी) मैं वापस नहीं जा सकता था। लाहौर में शामें चीख-पुकार से कराहती रहती थीं क्योंकि एक के बाद एक इलाके आग के हवाले होते रहते थे। यह आज भी मुझे सताता है और मुझे स्थिर रखता है।' कृष्ण खन्ना अपनी कूची से 'दी मैमोरी आफ 1947' की अभिव्यक्ति में लगे थे। अराजक परिस्थितियां और

कृष्ण खन्ना

विभीषिका का दर्द उनके चित्रों में विलाप कर रहा था। उन्होंने अपने चित्रों में इधर-उधर बिखरी लाशों और मृत्यु व हताशा को शब्दों से भी अधिक तीव्रता के साथ बयान कर डाला था।

कृष्ण खन्ना अपने जीवन के सौवें वर्ष में प्रवेश कर गए हैं। जन्म फैसलाबाद (उस समय का लायलपुर) में पांच जुलाई, 1925 को हुआ था और शुरुआती दौर की शिक्षा गवर्नमेंट कालेज लाहौर से पाई थी। वर्ष 2011 में पद्मभूषण से सम्मानित खन्ना की कूची आज भी चलती है। लाहौर से उच्च शिक्षा के लिए इंपीरियल सर्विस कालेज इंग्लैंड में चले गए थे और लौटे तो मुंबई का 'ग्रिंडलेज बैंक' उनकी प्रतीक्षा में था। वर्ष 1961 में उन्होंने इसी बैंक की भारी भरकम वेतन वाली नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने के बाद वे बैंक की विशाल इमारत से बाहर निकले, तो मुख्य द्वार पर कला की दुनिया की ओर से स्वागतार्थ देश के समकालीन शिखर चित्रकार मौजूद थे।

कृष्ण खन्ना का परिवार विभाजन के समय पहले लाहौर से शिमला, फिर दिल्ली आया। वहां से मुंबई चले गए। बाद के वर्षों में इस कलाकार ने रामायण, महाभारत और अन्य मिथक-कथाओं, पैराणिक गाथाओं पर जो चित्र बनाए, उन्हें आज भी विलक्षण माना जाता है। सौवें वर्ष में प्रवेश के साथ कूची अब भी चल रही है। 2005 में कृष्ण द्वारा बनाई गई 'दी लास्ट बाईट' की चर्चा कला की दुनिया में आज भी भरपूर होती है। कृष्ण खन्ना की एक और बहुचर्चित पेंटिंग 'शरशैय्या पर लेटे भीष्म के गिर्द एकत्र पांडवों' पर आधारित है। उनका एक और चित्र भी चर्चा का विषय बना था, जिसमें उन्होंने महात्मा गांधी की हत्या पर अखबारों में डूबे हुए अवसाद भरे लोगों के चेहरों को कूची से उजागर किया था। कई हाथों में जाने के बाद यह कृति अब भारतीय कला की आगामी सोथबी-नीलामी में रखी गई है।

खन्ना द्वारा बताई गई हर कहानी में एक मोड़ होता है। उनके बाइबिल के पात्र समकालीन भारत से अपना रंग-रूप लेते हैं और उनका अर्जुन मध्ययुगीन शूरवीरों के कवच को अच्छी तरह से धारण कर सकता है। उनकी नवीनतम कृति 'लास्ट बाइट' में ग्यारह भारतीय चित्रकारों का एक समूह है जो एक चाय के ढाबे पर गुंडों और मजदूरों की वेशभूषा में बैठे हैं तथा ईसा मसीह जैसे दिखने वाले हुसैन हाथ में कप पकड़े हुए हैं जो 'अंतरराष्ट्रीयवादियों' और उन लोगों के बीच बहस को संतुलित कर रहे हैं जो अपनी कला को स्वदेशी भू-भाग में स्थापित करना चाहते हैं। खन्ना आपको अपने चित्रों की व्याख्या करने के लिए छोड़ देते हैं और शरारती ढंग से कहते हैं, 'मुझे थोड़ी अनिश्चितता का गुण पसंद है।'

शकरकंद में छिपे सेहत के राज

शकरकंद खाने में स्वादिष्ट और पौष्टिक होने पर भी आम तौर पर इसकी उपेक्षा होती है। जबकि इसमें सेहत के कई राज छिपे होते हैं। इसे आहार में तो शामिल किया ही जा सकता है, वहीं इसे नुस्खे के रूप में आजमा कर कुछ रोगों को काबू भी किया जा सकता है। शकरकंद को कभी भून कर, तो कभी उबाल कर खाया जाता है। इसे जैसे भी खाएं, यह सेहत के लिए फायदेमंद ही है।

पोषक तत्वों से भरपूर

शकरकंद में इतनी पौष्टिकता है कि इससे न केवल सेहत दुरुस्त रहती है, बल्कि कुछ रोगों का निवारण भी हो जाता है। कुछ मर्ज के उपचार के लिए इसे नुस्खे के रूप में आजमाया जा सकता है। इसकी खास बात यह है कि यह हमारे पाचन को दुरुस्त रखता है। इसे अल्प आहार में लें, तो देर तक भूख नहीं लगती। वहीं इसमें एंटीआक्सीडेंट का गुण पाए जाने के कारण यह हमारी कोशिकाओं में किसी भी तरह की क्षति को रोकने में मदद करता है। शकरकंद में न केवल विटामिन 'ए' (बीटा कैरोटीन) बल्कि विटामिन 'सी' भी पाया जाता है। इसमें पोटेशियम होने के कारण यह रक्तचाप को काबू में रखता है।

आंखों के लिए अच्छा

शकरकंद में विटामिन 'ए' होने के कारण इसे आंखों के लिए अच्छा माना गया है। खासकर किसी की नजर कमजोर हो रही है, तो उसे शकरकंद का इस्तेमाल जरूर करना चाहिए। नियमित रूप से इसके सेवन से शरीर में विटामिन 'ए' की कमी दूर हो जाती है। इससे दृष्टि संबंधी सामान्य समस्या कम हो जाती हैं। इसके लिए आसान सा नुस्खा है। सुबह के नाश्ते में उबले हुए शकरकंद को छोटे टुकड़े कर लें और इसे एक गिलास गुनगुने दूध में मिसरी डाल कर लें। इससे शरीर में ऊर्जा रहेगी और आंखों की रोशनी भी धीरे-धीरे बेहतर होगी।

वजन पर लगाम

शकरकंद फाइबर का अच्छा स्रोत है। यह पाचन ठीक करने के साथ कब्ज भी दूर करता है। शकरकंद में मौजूद फाइबर की मात्रा 'माइक्रोबयोम' बनाए रखने में मदद करती है। मगर इसकी सबसे खास बात है कि यह भूख को नियंत्रित रखता है। इसमें कैलोरी कम होती है। इसलिए इसे वजन घटाने वाले आहार के रूप में लिया जाता है। इसे लेने का आसान नुस्खा है। शकरकंद को छील कर छोटे-छोटे टुकड़े में काटें और इसे 'एअर फ्राई' कर लें। या फिर भून लें या उबाल लें। फिर इसे छील कर जैसे चाहें खाएं। सेंधा नमक और मसाला लगा कर भी खाया जा सकता है।

त्वचा में चमक

शकरकंद में मौजूद एंटीआक्सीडेंट विटामिन 'सी' और बीटा कैरोटीन त्वचा को चमकदार बना देता है। यह न केवल झुर्रियां कम करता है, बल्कि यूवी किरणों से होने वाले नुकसान को बचाने में भी शकरकंद कारगर है। त्वचा की चमक के लिए एक

नुस्खे

नुस्खा आजमाया जा सकता है। एक शकरकंद उबाल लें और उसे मसल कर उसमें दही मिला कर पेस्ट बना लें। इसे त्वचा पर थोड़ी देर के लिए लगाएं। वहीं जब आप सूप बनाएं, तो त्वचा के पोषण के लिए इसमें उबले हुए शकरकंद के टुकड़े डाल दें। उबले शकरकंद में मक्खन और जरा-सा दालचीनी पाउडर मिला कर मसल लें और फिर इसे खाएं। यह त्वचा के पोषण के लिए अच्छा है।

मीडिया साक्षरता का महत्त्व

देश में उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान में भी स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए समाचार पत्र का पाठन अनिवार्य किया गया है। यह पहल निस्संदेह सराहनीय है और अन्य राज्यों को भी इसे अपनाना चाहिए। मगर केवल अक्षर-ज्ञान से बच्चे अखबार में प्रकाशित सामग्री को नहीं समझ पाते; समाचार और विचार का जीवन में अर्थ समझने के लिए मीडिया साक्षरता आवश्यक है। आज दुनिया के कई हिस्सों में मीडिया साक्षरता को गणित की तरह गंभीर विषय के रूप में पढ़ाने पर बल दिया जा रहा है, जबकि भारत का शैक्षिक चिंतन अभी इससे काफी दूर है। अखबार पठन की इस अच्छी शुरुआत के साथ अगर स्कूलों में मीडिया साक्षरता भी जरूरी की जाए, तभी यह पहल अपने उद्देश्य को सार्थक कर पाएगी।

पुस्तक-संस्कृति

प्रदीप कुमार राय

पढ़ना-लिखना जानने वाला व्यक्ति वर्षों से 'साक्षर' माना जाता रहा है, लेकिन 21वीं सदी में यह मानदंड बदल चुका है। आज विश्व में व्यापक सहमति है कि वास्तविक साक्षर वही है, जो 'मीडिया साक्षर' हो। इसका प्रशिक्षण ग्रहण किए बिना कोई व्यक्ति मीडिया का सही से प्रयोग नहीं कर पाता, फिर समाज के यथार्थ को समझने की तो बात ही दूर है। सूचना सचेत लोगों के बिना एक सचेत समाज का निर्माण संभव नहीं है। देश को यह यथार्थ तत्काल याद दिलाने की जरूरत इसलिए है, क्योंकि पहली बार उत्तर प्रदेश और राजस्थान ने स्कूलों में समाचार पत्र पढ़ना अनिवार्य किया है। इससे पहले हिमाचल प्रदेश ने इसी तरह का कदम उठाया था।

वास्तविक लाभ

इस पहल की सराहना के साथ यह स्मरण करना भी जरूरी है कि भारत में मीडिया साक्षरता के अभाव में बच्चे समाचार पत्र को सही तरीके से पढ़ नहीं पाएंगे। दूसरे शब्दों में कहें, तो वे इसका वास्तविक लाभ नहीं ले पाएंगे। पाठ्यक्रमों में जितना महत्त्व गणित पढ़ाने को दिया जाता है, उतना ही महत्त्व मीडिया साक्षरता को देने पर ही सूचना सचेत समाज का सही अर्थों में निर्माण हो पाएगा। विकसित देशों में तो शिक्षकों से ज्यादा पुस्तकालय लोगों को मीडिया एवं सूचना साक्षर बनाने में योगदान देते हैं। अमरेकिन प्रेजिडेंशियल पुस्तकालय ने तो विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पूरा ढांचा तैयार करके दिया है कि समाचार को व्यवस्थित तरीके से कैसे पढ़ें और उसके लाभ-हानियों को कैसे समझें। विकासशील देशों, यहां तक कि भूटान जैसे छोटे राष्ट्र में भी मीडिया साक्षरता के महत्त्व को स्वीकारा जा रहा है।

परंपरा के अनुरूप

स्कूलों में समाचार पत्र के पाठन को अनिवार्य करने की पहल से उम्मीद जगी है कि मीडिया साक्षरता की दिशा में भी समय रहते प्रभावी कदम उठाए जाएंगे। चूंकि इस क्षेत्र में भारत पहले ही काफी पीछे है, इसलिए वैश्विक पाठ्यक्रमों को ज्यों का त्यों अपनाना संभव नहीं। हमें देश के सामाजिक अनुभव और बौद्धिक परंपरा के अनुरूप अपना पाठ्यक्रम विकसित करना होगा। साथ ही यह स्मरण रखना जरूरी है कि यह वही भारत है, जिसके पास सूचना और मीडिया साक्षरता की शिक्षण-परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। वेदों के प्रादुर्भाव के तुरंत बाद ही मीमांसा और न्याय जैसे ग्रंथों के माध्यम से सूचना के विश्लेषण एवं तर्क की सशक्त विधियां विकसित की गईं। मीडिया और सूचना साक्षरता सिखाने के लिए भारत के पास ज्ञान की अतुल संपदा पहले से उपलब्ध है।

आधुनिक युग में तो इस विषय की शुरुआत कनाडा के ओंटारियो प्रांत ने वर्ष 1978 में की थी। शुरुआत के पीछे एक रोचक घटना है। कनाडा सरकार को लगा कि उसके युवा अमेरिका की संस्कृति के प्रभाव में रहते हैं। खोज करने पर पता चला कि यह अमेरिकी मीडिया के प्रभाव के कारण हो रहा है। विशेषज्ञों ने बताया कि वहां के लोग मीडिया साक्षर नहीं है, इसलिए ऐसा हुआ। इसके बाद शिक्षकों ने मिलकर इस विषय के लिए मजबूत पाठ्यक्रम बनाया और उसके परिणाम भी सकारात्मक रहे। युवा समझ पाए कि कैसे संदेशों को निष्क्रिय रूप से लेकर हम उनके साथ बिना सोचे बहे चले जाते हैं। उधर, यूनेस्को ने इस पर व्यापक कार्य शुरू कर दिया और पुस्तकालय विज्ञान के पहले से चल रहे सूचना साक्षरता को मीडिया साक्षरता के साथ जोड़कर सूचना सचेत समाज बनाने का खाका व्यापक कर दिया।

पढ़ना-लिखना जानने वाला व्यक्ति वर्षों से 'साक्षर' माना जाता रहा है, लेकिन 21वीं सदी में यह मानदंड बदल चुका है। आज विश्व में व्यापक सहमति है कि वास्तविक साक्षर वही है, जो 'मीडिया साक्षर' हो। इसका प्रशिक्षण ग्रहण किए बिना कोई व्यक्ति मीडिया का सही से प्रयोग नहीं कर पाता, फिर समाज के यथार्थ को समझने की तो बात ही दूर है।

लोकतंत्र और समाचार माध्यम

मीडिया साक्षरता की जटिल तकनीकी अवधारणाओं में जाने से पहले कुछ मौलिक प्रश्नों को समझना अधिक आवश्यक है, क्योंकि यही मीडिया साक्षर बनने की प्रारंभिक सीढ़ियां हैं। यदि बच्चे या वयस्क को यह व्यवस्थित रूप से न बताया जाए कि एक नागरिक के लिए समाचार को सही ढंग से समझना क्यों जरूरी है, नागरिक के समाचार-बोध और लोकतंत्र के बीच क्या संबंध है, समाचार की वास्तविक संरचना क्या होती है, तो उससे सजग मीडिया प्रयोग करने की उम्मीद करना व्यर्थ है। डिजिटल माध्यमों के अनियंत्रित और अनजान स्रोतों ने तो अनेक पढ़े-लिखे लोगों को भी यह भुला दिया है कि असली समाचार कैसा होता है। इसके शिक्षण में बताया जाता है कि मीडिया काम कैसे करता है? संदेशों का निर्माण कैसे करता है? यह किस तरह संचालित होता है? समाचार व अन्य संदेशों का महत्त्व बताने के साथ उनकी सीमाएं भी बताई जाती है? फिर मीडिया संदेशों का विश्लेषण करने और उसमें पक्षपात छांटने की विधि बताई जाती है।

डिजिटल तकनीक के विस्तार और उससे भ्रामक सूचनाओं ने दुनिया को डिजिटल साक्षरता को एक अलग शाखा बनाने पर मजबूर कर दिया। इन दिनों जब कृत्रिम मेधा का बोलबाला है, तो अब इस विषय में साक्षरता के लिए सहमति बनी है। ऐसा लगता है कि अब तो सारा ध्यान कृत्रिम मेधा साक्षरता पर ही न चला जाए। मगर इसका मूल आधार मीडिया साक्षरता से ही आएगा यानी यही विषय अब कृत्रिम मेधा के छिपे अर्थ समझने में मदद करेगा। प्रारंभिक स्तर पर सभी विषयों के शिक्षक बच्चों में समाचार के माध्यम से नागरिक बोध विकसित कर सकते हैं। इसके बाद मीडिया साक्षरता के विशेषज्ञों से पाठ्यक्रम तैयार कराकर स्कूलों में प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

ज्ञानार्जन के साथ चेतना जरूरी

आज के दौर में किताबी ज्ञान पर ज्यादा जोर दिया जाता है। मगर सामाजिक जीवन में ज्ञान का उपयोग कब और कैसे करना चाहिए, किस बात पर क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिए, इसकी समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती है। इसलिए ज्ञानार्जन के साथ चेतना का होना अत्यंत जरूरी है, क्योंकि चेतना ही उस ज्ञान को अनुभव, समझ और आंतरिक रूप से एकीकृत करने का माध्यम है। यह हमें ज्ञान का वास्तविक अर्थ समझने, परिवर्तन लाने और उसे जीवन में उतारने में मदद करती है, जिससे व्यक्ति केवल ज्ञानी नहीं, बल्कि जागरूक और बौद्धिक भी बनता है। चेतना के विकास के लिए जरूरी है कि नियमित तौर पर आत्म-निरीक्षण किया जाए।

जीवन शैली

सही-गलत का निर्णय

चेतना अनुभवों, विचारों, भावनाओं और दुनिया के साथ हमारे संबंधों को संभव बनाती है। इससे हम सही-गलत का निर्णय ले पाते हैं और जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास कर पाते हैं। चेतना असल में आंतरिक जागरूकता का एक रूप है, जो हमें अपनी आदतों को समझने एवं उनमें बदलाव करने तथा व्यक्तिगत विकास और नैतिकता की समझ विकसित करती है। अगर कोई व्यक्ति उच्च शिक्षा हासिल कर किसी उच्च पद पर आसीन हो जाता है, मगर उसके भीतर चेतना नहीं है, तो सामाजिक जीवन में उसे सफल कहना बेमानी ही होगा।

चिंतन की शक्ति

चिंतन मानसिक चेतना का प्रमुख तत्त्व है। हमारे आसपास होने वाली रोजमर्रा की घटनाओं से हमारे जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए चिंतन बेहद जरूरी है। इसके अलावा रचनात्मक विचारों का सृजन भी चेतना पर ही आधारित है। विचार हमारे मन में उत्पन्न होते हैं और चेतना विचारों के माध्यम से हमारे अनुभवों को आकार देती है। इसी से भावनाओं का भी निर्माण होता है, जो सामाजिक रिश्तों के धागों को बुनने में मदद करती हैं। चेतना विचारों को एकत्र करने और उन पर चिंतन करने की क्षमता विकसित करती है। यानी मानसिक चेतना मनुष्य के जीवन में एक अहम भूमिका निभाती है और विभिन्न धार्मिक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सृजन में इसका गहरा महत्त्व है।

ज्ञान और चेतना जीवन की महत्त्वपूर्ण कड़ियां हैं। ज्ञान जहां जानकारी और तथ्यों से रूबरू कराता है, वहीं चेतना उस ज्ञान को समझने और जीवन में उसका सही उपयोग करने की क्षमता देती है।

बौद्धिकता का निर्माण

ज्ञान और चेतना दोनों ही जीवन की महत्त्वपूर्ण कड़ियां हैं। ज्ञान जहां जानकारी और तथ्यों से रूबरू कराता है, वहीं चेतना उस ज्ञान को समझने और जीवन में उसका सही उपयोग करने की क्षमता देती है। बिना चेतना के ज्ञान केवल सूचना बनकर रह जाता है, जबकि चेतना उसे अनुभव और विवेक में बदल देती है, जिससे न केवल व्यक्तिगत विकास संभव हो पाता है, बल्कि सामाजिक जीवन भी सफलता की राह पर चल पड़ता है। इस बात को समझना भी जरूरी है कि चेतना सिर्फ ज्ञान अर्जित करने से नहीं आती, बल्कि यह स्वयं को वास्तविकता में परखने से आती है।

सर्दी में लापरवाही मुसीबत को न्योता

सर्दियों में जुकाम होना सामान्य बात है। मगर कड़ाके की सर्दी में यह ज्यादा तकलीफ देता है। आसपास कोई जुकाम से पीड़ित है, तो फिर आप भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। यह कम ही लोगों को मालूम है कि ऐसे कई विषाणु हैं जिनकी वजह से सर्दी-जुकाम हो जाता है। मगर इन सब विषाणुओं में 'राइनोवायरस' सबसे आम है। यह वही विषाणु है जो सबसे अधिक लोगों को परेशान करता आया है। ऐसे में मरीज की नाक बहती है। गले में खराश होती है। हल्के बुखार के साथ हरारत होती है। कंपकंपी भी महसूस होती है। कभी-कभी मरीज को खांसी की भी शिकायत हो जाती है। कई बार तो नाक और गले से लेकर पूरी सांस नली प्रभावित होती है।

सेहत

रोग की वजह

देखा गया है कि कोई भी वयस्क साल भर के दौरान अमूमन दो-तीन बार सर्दी-जुकाम से पीड़ित हो ही जाता है। जबकि बच्चे इसकी चपेट में अधिक आते हैं। यह राइनोवायरस ही है जो सर्दी-जुकाम का कारण बनता है। यों दो सौ से अधिक ऐसे विषाणु बताए गए हैं जो जुकाम की वजह बनते हैं। जब कोई इनसे संक्रमित होता है, यह श्लेष्मा झिल्लियों तक पहुंच जाता है। ऐसे में कोई खांसता या छींकता है, तो ये विषाणु वातावरण में फैल जाते हैं। जिन जगहों पर ये जमा हो जाते हैं, उन जगहों-सतहों को छूने से स्वस्थ व्यक्ति भी संक्रमित हो जाता है। कई बार यह समस्या तब गंभीर होती है, जब रोगी की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है।

क्या करें

सामान्य तौर पर सर्दी-जुकाम को उसके लक्षणों से पहचान लिया जाता है। शुरुआती दौर में पानी जैसा स्राव होता है। यह बाद में गाढ़ा हरा तथा पीला हो सकता है। सामान्य से लेकर अधिक बुखार हो सकता है। वहीं गले में खराश के साथ खाना निगलने में कठिनाई हो सकती है। ग्रंथियों में सूजन और खांसी बढ़ने पर मरीज कभी-कभी चिड़चिड़ा हो जाता है। आम तौर पर जुकाम तीन से चार दिन रहता है। मगर अब कई कारणों से यह हफ्ते-दस दिन तक बना रहता है। यह मरीज की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी निर्भर करता है।

लक्षण और निदान

प्रायः देखा गया है कि सर्दी-जुकाम से पीड़ित लोग आराम करके या खुद ही उपचार करके ठीक हो जाते हैं। कई बार वे बाजार से दवाइयां लेकर भी खा लेते हैं। हालांकि इससे बचना चाहिए। बुखार होने और सिरदर्द बढ़ जाने पर चिकित्सक से संपर्क करना कहीं बेहतर होता है। वे लक्षणों के आधार पर और शारीरिक जांच कर दवाइयां देते हैं। फेफड़े में अधिक कफ जमा होने पर चिकित्सक छाती का एक्सरे करा सकते हैं। कई बार एंटीबायोटिक सर्दी-जुकाम में काम नहीं करती। अपवादस्वरूप कुछ मरीजों में जटिलता पैदा करती है। इसलिए अनावश्यक दवाइयां लेने से बचना चाहिए। सर्दी-जुकाम की कुछ दवाइयां बाजार में जरूर उपलब्ध हैं, लेकिन जब स्थिति गंभीर लगे, तो चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें।

राहत की राह

सर्दी-जुकाम होने पर अपने हाथ बार-बार साफ करें ताकि कोई दूसरा व्यक्ति संक्रमित न हो। इन दिनों शरीर को गर्म रखें। यथासंभव आराम करें। पर्याप्त तरल पदार्थ लें। गुनगुना पानी लेना बेहतर होता है। अपनी पसंद के मुताबिक चाय और काफी ले सकते हैं। घर में सब्जियों से बना सूप लेना भी अच्छा रहता है। दोपहर में गाजर का रस ले सकते हैं। मरीज को शराब से परहेज करना चाहिए। आहार में हरी पत्तेदार सब्जियों को शामिल करें। सब्जियां बनाते समय पर्याप्त अदरक-लहसुन के साथ गरम मसाले का उपयोग करें। नाक बंद महसूस हो और सीने में हल्की जकड़न हो, तो भाप लें। गर्म पानी में नमक डाल कर तीन-चार बार गरारे करने से आराम मिलता है। सर्दी-जुकाम से पीड़ित मरीज का बिस्तर साफ-सुथरा होना चाहिए। उसके तौलिए का इस्तेमाल कोई दूसरा न करें।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

बनाना आसान, जायका बेहतरीन

अदरक आलू

यह उबले हुए आलू के साथ अदरक और मसालों के मिश्रण से बना एक स्वादिष्ट व्यंजन है। इसमें अदरक की मात्रा थोड़ी अधिक होती है, जिससे इसका जायका भी लाजवाब होता है। चूंकि अदरक की तासीर गरम होती है, इसलिए इस सब्जी को लोग सर्दियों में खाना पसंद करते हैं। अगर कोई और सब्जी न हो, तो अदरक आलू एक बेहतर विकल्प है। इसे बनाना भी आसान है।

सामग्री

आलू: 200-300 ग्राम, अदरक: दो-तीन इंच, जीरा: एक चम्मच, लहसुन: पांच-छह कलियां, प्याज (बड़े आकार का): एक, हल्दी पाउडर: आधा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर: आधा चम्मच, नमक: स्वादानुसार, कसूरी मेथी: एक चम्मच, हरा धनिया: दो चम्मच।

विधि

आलू को पानी से धोकर कुकर में नरम होने तक उबालें। इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि ज्यादा पकने से आलू फट न जाए, इससे आलू के भीतर पानी चला जाता है और उसका स्वाद गड़बड़ा जाता है। ठंडा होने पर आलू का छिलका उतारकर उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें और थोड़ी देर के लिए छोड़ दें। अगर आलू ने ज्यादा पानी चूस लिया हो, तो काटने पर वह हवा में उड़ जाता है।

इसके बाद एक कड़ाही में तेल गरम करके उसमें जीरा डाल दें। जब जीरा चटकने लगे, तो उसमें बारीक कटा हुआ अदरक और लहसुन मिला दें। फिर कटी हुई प्याज डालकर सुनहरा भूरा होने तक भूनें। इसके बाद हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर और नमक इसमें मिलाएं और साथ ही उबले हुए आलू इसमें डाल दें। अब एक बड़े चम्मच से आलू को मसालों के साथ हल्के हाथ से मिलाएं। इसे धीमी आंच पर आठ से दस मिनट तक पकाएं और यह सुनिश्चित कर लें कि आलू के टकड़े मसालों के साथ अच्छी तरह मिल गए हैं। इसमें बारीक कटा हरा धनिया मिलाकर इसे गरमागरम रोटी या चावल के साथ परोसा जा सकता है।

अरबी मसाला

अरबी की सब्जी कई तरह से बनाई जाती है और इसके सभी प्रकार स्वादिष्ट होते हैं। हालांकि, अरबी मसाला का स्वाद थोड़ा भिन्न होता है। विभिन्न मसालों के मिश्रण से इसका जायका चटपटा और बेहतरीन होता है। उत्तर भारत में यह व्यंजन काफी लोकप्रिय है, खासकर ग्रामीण इलाकों में अक्सर घरों में यह सब्जी बनाई जाती है, क्योंकि ज्यादातर गांवों में इसकी खेती की जाती है।

रसोई

सामग्री

अरबी: 500 ग्राम, अजवाइन: एक चम्मच, अदरक: एक इंच, हरी मिर्च: दो, जीरा: एक चम्मच, हल्दी पाउडर: आधा चम्मच, धनिया पाउडर: डेढ़ चम्मच, अमचूर पाउडर: एक चम्मच, नमक: स्वादानुसार।

विधि

सबसे पहले अरबी को अच्छे से धोकर कुकर में उबाल लें। ध्यान रहे कि इसे ज्यादा नहीं पकाना है, नहीं तो यह लुगदी जैसी हो जाती है। ठंडा होने पर अरबी का छिलका उतार कर उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें और थोड़ी देर के लिए छोड़ दें। इसके बाद कड़ाही में तेल गरम करके उसमें जीरा, अजवाइन और कद्दूकस किया गया अदरक हल्का सा भून लें। फिर हल्दी पाउडर, हींग तथा धनिया और लाल मिर्च पाउडर इसमें डाल दें। अब उबली हुई अरबी को इसमें डाल दें और धीरे-धीरे इसे मसालों के साथ मिलाएं। इसे मध्यम आंच पर करीब पांच मिनट तक ढक्कन रखकर पकाएं। इस दौरान बीच-बीच में चम्मच से इसे पलटते रहें, ताकि यह कड़ाही के तले से न चिपके। इसके बाद इसमें नमक और अमचूर पाउडर डालें और थोड़ा सा पानी मिला दें। अब इसे मध्यम आंच पर पांच से सात मिनट तक बिना ढक्कन के पकाएं। जब अरबी के टुकड़े कुरकुरे हो जाएं, तो गैस की आंच बंद कर दें। इसमें कटा हुआ हरा धनिया मिलाकर पूरी, परांठा या चपाती के साथ परोसें।

शत्रुघ्न सिन्हा कहते हैं, रोल अच्छा या बुरा नहीं होता, एक्टर अच्छा या बुरा होता है

केवल एक सीन करने को हो गए थे राजी!

मेरे हिस्से के किस्से

रूमी जाफरी
बॉलीवुड फिल्मों के लेखक और निर्देशक

मेरे हिस्से के किस्से में आज बात उस स्टार की, जिसने फिल्म इंडस्ट्री में हीरो बनने के तय मापदंडों (जैसे खूबसूरत होना, गोरा-चिट्टा होना, अच्छी बॉडी और अच्छा डांसर होना) के बिल्कुल विपरीत रहते हुए भी अपनी आवाज, अपने एटिट्यूड और अपने अभिनय के अलग अंदाज के दम पर न सिर्फ फिल्म इंडस्ट्री, बल्कि राजनीति में भी अपनी जगह बनाई और शिखर तक पहुंचे। मगर आज हम सिर्फ उनके फिल्मी जीवन की ही बात करेंगे। जी हां, वह स्टार हैं खलनायक से नायक बने महान अभिनेता, जिन्हें रजनीकांत भी अपना गुरु और आइडियल मानते हैं - शत्रुघ्न सिन्हा जी।

मैं आज आपको उनके बिल्कुल शुरुआती दिनों का एक यादगार किस्सा सुनाता हूं। बात 1966-67 की है, जब एफटीआईआई से पास होने के बाद शत्रु जी बॉम्बे आए। वे विले पार्ले वेस्ट में कृष्णा कुंज नाम के एक गेस्ट हाउस में रहने लगे। उन्हीं के बैच के एक एक्टर थे प्रेमेन्द्र। शत्रु जी बताते हैं कि वे बहुत ही खूबसूरत थे, एकदम मनोज कुमार की तरह लगते थे। पास होने से पहले ही उन्हें प्रोड्यूसर और डायरेक्टर पुणे आकर मिलने लगे थे कि बंबई आते ही वे उन्हें साइन करेंगे। बंबई आते ही प्रेमेन्द्र जी को बतौर हीरो कई फिल्में मिल गईं, वो भी बड़े फिल्ममेकर्स की। शत्रु जी और प्रेमेन्द्र दोनों एफटीआईआई में पढ़े थे, इसलिए अच्छे दोस्त भी थे। शत्रु जी ने प्रेमेन्द्र से कहा कि तू तो आते ही बिजी हो गया, मुझे भी अपनी फिल्मों में काम दिला दे। तो प्रेमेन्द्र जी ने कुछ डायरेक्टर्स और प्रोड्यूसर्स से शत्रु जी को मिलवाया। उनमें विजय भट्ट जी भी थे।

विजय भट्ट जी ने शत्रु जी से कहा, मेरी फिल्म में सिर्फ एक ही दिन का रोल है, सिर्फ एक ही सीन है, करोगे? शत्रु जी ने कहा, मैं तो एक्टिंग करने आया हूं। चाहे एक सीन का रोल हो या एक घंटे का, मेरा काम एक्टिंग करना है। उन्होंने तुरंत हां कर दी। जब उन्होंने सीन शूट किया तो विजय भट्ट बहुत प्रभावित हुए और बोले, इस लड़के में कुछ अलग और खास बात तो है। फिर कुछ ऐसा हुआ कि जो किरदार माला सिन्हा के पति का था, उसे निभाने वाले अभिनेता डेट वगैरह को लेकर प्रोड्यूसर और डायरेक्टर को परेशान करने लगे। तब कहानी में थोड़ा बदलाव किया गया। जो जुल्म माला सिन्हा पर पति से करवाया जा रहा था, वही बेटे से करवाने का फैसला लिया गया। प्रेमेन्द्र से कहा गया कि अपने उस दोस्त शत्रु को भेजो, उसका रोल बढ़ गया है। बेटे का रोल शत्रु जी को दे दिया गया और उनके सीन बढ़ते गए।

शत्रु जी इतनी अच्छी एक्टिंग कर रहे थे कि डायरेक्टर और प्रोड्यूसर उनके रोल लगातार बढ़ाते गए और प्रेमेन्द्र के सीन कम होते गए। फिर एक वक्त ऐसा आया कि दोनों का रोल बराबर का हो गया। इधर धर्मेंद्र और वैजयंती माला की फिल्म 'प्यार ही प्यार' रिलीज हुई। उसमें शत्रु जी का सिर्फ एक ही सीन था, वह भी टेलीफोन पर और उस एक सीन में भी उन्हें तालियां मिलीं। शत्रु जी कहते हैं, रोल अच्छा या बुरा नहीं होता, एक्टर अच्छा या बुरा होता है। एक एक्टर अपने हुनर से एक ही सीन में दिखा सकता है कि वह कितना अच्छा कलाकार है। इसी बात पर मुझे बशीर बद्र का एक शेर याद आता है:

हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा

यह जो प्रेमेन्द्र, माला सिन्हा और शत्रु जी की फिल्म थी, उसका नाम था 'होली आई रे'। फिल्म पूरी होने के बाद इसी दौरान शत्रु जी के गेस्ट हाउस में कोई समस्या हो गई, इसलिए उन्हें गेस्ट हाउस छोड़ना पड़ा। वे प्रेमेन्द्र के घर जाकर रहने लगे, क्योंकि दोनों खास दोस्त थे। अब शत्रु जी की फिल्म इंडस्ट्री में तारीफ होने लगी। प्रोड्यूसर और डायरेक्टर उनसे घर आकर मिलने लगे, उन्हें ऑफर देने लगे।

चूंकि शत्रु जी प्रेमेन्द्र के साथ रहते थे, इसलिए ये सारी मीटिंग्स प्रेमेन्द्र के घर पर ही होती थीं। यह प्रेमेन्द्र को अच्छा नहीं लगता था। उन्हें लगता था कि एक तो 'होली आई रे' में मेरा रोल छोटा हो गया, इसका बड़ा हो गया, और ऊपर से ये सारी मीटिंग्स मेरे ही घर में कर रहा है। फिर एक दिन प्रेमेन्द्र जी ने शत्रु जी से कहा, देखो शत्रु, एक म्यान में दो तलवार और एक घर में दो हीरो नहीं रह सकते। तुम कहीं और रहने का इंतजाम कर लो। शत्रु जी उसी वक्त घर से निकल गए। और कुदरत का खेल देखिए- शत्रु जी हीरो बने, और टॉप के हीरो बने। आज तक उनका नाम फिल्म इंडस्ट्री और राजनीति, दोनों में इज्जत के साथ कायम है।

मेरी दुआ है कि शत्रु जी हमेशा स्वस्थ रहें, खुश रहें। आज उनकी फिल्म 'कालीचरण' का यह गाना सुनिए, अपना ख्याल रखिए, खुश रहिए:

एक बटा दो, दो बटे चार ...

•rumyjafrywrites@gmail.com

लेखक-प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित पूर्वानुमति के बिना इस लेख के किसी भी हिस्से को ना तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है, ना ही किसी तरह का व्यावसायिक इस्तेमाल किया जा सकता है।

'मेरे हिस्से के किस्से' कॉलम को अपने मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

शकरकंदी खीर: आसानी से बनाएं सर्दी की ये खास डिश

रीडर रेसिपी कॉन्टेस्ट

केका सेनगुप्ता
गृहिणी
दुर्ग (छग)

भेजिए रेसिपी और जीतिए 5,100 रु. का गिफ्ट

इस कॉलम में आप भी अपनी रेसिपी भेजकर हर सप्ताह जीत सकते हैं **5,100 रु.** मूल्य का गिफ्ट। इसके लिए **QR कोड** को स्कैन कीजिए और लिख भेजिए अपनी रेसिपी। साथ में अपना नाम, प्रोफेशन, फोटो, डिश की तस्वीर जरूर भेजें।

आपने कई तरह की खीर खाई होगी। आज एक अलग तरह की खीर से परिचय करवाते हैं। इसका नाम है भरवां शकरकंदी खीर। आप चाहें तो इसे शकरकंद की रसमलाई भी कह सकते हैं।

बनाने की सामग्री :

शकरकंद: 3 (मध्यम आकार के), आटा: 1/2 कप, दूध (मलाई वाला): 1 लीटर, शक्कर: 3/4 कप, नारियल का बुरादा: 100 ग्राम, गुड़: 70 ग्राम।

बनाने की विधि :

- सबसे पहले शकरकंद को अच्छी तरह धोकर छील लीजिए और मध्यम आकार के टुकड़ों में काट लीजिए। इन्हें प्रेशर कुकर में थोड़ा पानी डालकर एक सीटी में उबाल ले लीजिए। शकरकंद ज्यादा नरम न हों। ठंडे होने पर उन्हें कुकर से निकालकर

अच्छी तरह से मसल लीजिए, ताकि कोई गुठली या पिंड न रह जाए।
- अब कड़ाही में आटे को हल्का सा सुखा भून लीजिए, जिससे उसका कच्चापन खत्म हो जाए। भुना हुआ आटा शकरकंद में मिलाकर अच्छी तरह गूंध लीजिए। अगर मिश्रण बहुत नरम लगे तो थोड़ा और आटा मिला सकते हैं। अब इस आटे की छोटी-छोटी लोइयां बनाएं और हथेलियों के बीच हल्का दबाकर रख दीजिए।
- दूसरी कड़ाही में नारियल का बुरादा और गुड़ डालकर धीमी आंच पर भूनें। कड़छी लगातार चलाते रहें, जब तक गुड़ पूरी तरह पिघलकर नारियल में अच्छी तरह मिल न जाए। मिश्रण पकने के बाद गैस बंद करके इसे ठंडा होने दीजिए।
- अब शकरकंद की लोई में नारियल-गुड़ का भरावन भरें, उंगलियों से बंद करें और मनचाहा आकार दे दीजिए।
- एक कड़ाही में दूध उबालें। बीच-बीच में चलाते रहें। इसमें शक्कर भी डाल दीजिए। दूध को इतना गाढ़ा करें कि वह लगभग आधा रह जाए। अब उबलते दूध में भरी हुई शकरकंद डाल दीजिए। इसे 2-3 मिनट तक ही उबालना है, ताकि वे टूटें नहीं। इन्हें हल्का गरम या रूम टेम्परेचर पर ठंडा करके परोस सकते हैं।

तारे-सितारे

मनीष शर्मा
ज्योतिषाचार्य

बुधवार को सूर्य संक्रांति होगी। वैवाहिक एवं अन्य शुभ कार्य बढ़ने से व्यापार में तेजी आएगी। कीमती धातुओं के दाम सस्ते हो सकते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी हो सकती है। किराना सामान सस्ता होगा। बड़ा भ्रष्टाचार उजागर हो सकता है।

•jyotish.sansar@gmail.com

मेष

चंद्र की दृष्टि से आय में सुधार एवं भाग्य का साथ प्राप्त होगा। मंगल एवं बुधवार को समस्याएं आ सकती हैं। गुरु एवं शुक्रवार को अच्छे दिन रहेंगे। शनिवार को व्यस्तता रहेगी। अचानक यात्रा पर जाना पड़ सकता है।

वृषभ

द्वितीय शनि से मानसिक अशांति रहेगी। सावधान रहें। मंगल एवं बुधवार को खुशखबरी प्राप्त होगी। गुरु एवं शुक्रवार को सावधानी रखनी होगी। व्यय बढ़ सकते हैं। शनिवार को परिवार का साथ मिलेगा।

मिथुन

पंचम चंद्र सभी प्रकार से व्यवस्थित जीवन रखेगा। मंगल एवं बुधवार को आय सामान्य बनी रहेगी। गुरु एवं शुक्रवार को अटके कार्य में गति आएगी। समस्याओं का निदान होगा। शनिवार प्रतिकूल हो सकता है।

कर्क

चतुर्थ चंद्र मंगल तक रोक बनाकर रखेगा। कार्य में अनावश्यक विघ्न आएंगे। बुधवार से सभी कार्य समय पर होने लगेंगे। गुरु एवं शुक्रवार बेहतर दिन रहेंगे। शनिवार को आय की प्राप्ति होगी एवं प्रसन्नता रहेगी।

सिंह

सोमवार तक योजनाओं को मूर्त रूप देने में सफल होंगे। मंगल एवं बुधवार को तंगी का सामना करना पड़ सकता है। गुरु एवं शुक्रवार पूर्णतः अनुकूल रहेंगे। संतान से खुशी मिलेगी। शनिवार को सुख की प्राप्ति होगी।

कन्या

सप्ताह का आरंभ आय दिलाने वाला है। मित्रों का साथ मिलेगा। मंगल एवं बुधवार को समस्याओं का समाधान करने में सफल होंगे। गुरु एवं शुक्रवार को आय में गिरावट होगी। शनिवार को संतान से सुख प्राप्त होगा।

तुला

चंद्र का गोचर है। धनागम जारी रहेगा, किंतु व्यय की अधिकता भी होगी। मंगल एवं बुधवार को सावधान रहने की आवश्यकता है। बुध एवं गुरुवार से स्थितियां पुनः पक्ष की हो जाएंगी। शनिवार को सचेत रहें।

वृश्चिक

चंद्र द्वादश होने से आय में कमी के आसार हैं। कार्यशैली अस्त-व्यस्त रहेगी। मंगल से समय अनुकूल रहेगा। बुध एवं गुरुवार को यात्राएं सुखद रहेंगी। शुक्रवार को आय में वृद्धि होगी। शनिवार भी बेहतर दिन रहेगा।

धनु

सप्ताहारंभ उत्साह से आरंभ होगा, किंतु मंगल से आय में कमी हो सकती है। बुधवार भी अच्छा नहीं रहेगा। गुरु की शाम से स्थिति पुनः नियंत्रण में होगी। शुक्र अच्छा दिन रहेगा। शनिवार को भाई सहयोग करेंगे।

मकर

दशम चंद्रमा आर्थिक प्रगति कराएगा। आवश्यक कार्य से यात्रा का योग बन सकता है। मंगल एवं बुधवार को धन की प्राप्ति होगी। गुरु एवं शुक्रवार को व्यय अधिक होंगे। शनिवार भी अनुकूल दिन रहेगा।

कुंभ

नवम चंद्र मन को प्रसन्न रखेगा। मंगल एवं बुध को कार्य की अधिकता होगी। पिता से सहयोग प्राप्त होगा। गुरु एवं शुक्रवार को खुशी का समाचार मिल सकता है। शनिवार को संभलकर रहना होगा। व्यय भी अधिक होंगे।

मीन

आरंभ में निराशा का भाव हावी हो सकता है, किंतु मंगल की सुबह से आत्मविश्वास बढ़ेगा। बुध से शुक्रवार तक किसी प्रकार की हानि होने की संभावना नहीं है। सप्ताहांत में बड़ी सफलता मिलेगी।

मेरा पैसा

सुझाव और प्रतिक्रिया इस पते पर भेज सकते हैं- business.bhaskar@dbcorp.in

मैनेजमेंट गुरु

एन. रघुरामन

कर्ज को हल्के में न लें, वेतन कुर्क हो सकता है!

इस महीने के अंत में स्टीफन (काल्पनिक नाम) का वेतन आधा हो सकता है। अमेरिकी सरकार ने इसी सप्ताह उनके नियोक्ता को इस संबंध में नोटिस भेजा है, क्योंकि उन्होंने 270 दिनों से अपने एजुकेशन लोन की एक भी किस्त नहीं चुकाई है, जबकि नौकरी अप्रैल 2025 में ही शुरू कर दी थी।

क्या आप सोच रहे हैं कि सरकार किसी निजी कंपनी को अपने कर्मचारी का वेतन काटकर सरकारी खाते में जमा करने का आदेश कैसे दे सकती है? इसे 'वेज गार्निशमेंट' (वेतन की कुर्की) कहा जाता है। यह एक कानूनी प्रक्रिया है, जिसमें अदालत या सरकारी एजेंसी किसी नियोक्ता को कर्मचारी की कमाई (मजदूरी, वेतन, बोनस आदि) का एक हिस्सा रोकने का आदेश देती है, ताकि पुराने कर्ज, जैसे कि बकाया टैक्स या डिफॉल्ट हो चुके एजुकेशन लोन का भुगतान किया जा सके।

एक बार नोटिस जारी होने के बाद, यह एक अनिवार्य कटौती बन जाती है जो तब तक जारी रहती है जब तक कि पूरा कर्ज चुकता न हो जाए। यह कर्ज न चुकाने वालों के खिलाफ सरकार की कानूनी कार्रवाई या अदालती आदेश का नतीजा होता है। यह स्थिति सिर्फ स्टीफन की नहीं है; अमेरिका में 30 लाख छात्र लोन डिफॉल्टर हैं, जिन्होंने ट्रम्प सरकार को हस्तक्षेप करने और कड़ी कार्रवाई करने के लिए मजबूर किया है।

चूंकि महामारी के दौरान जब अर्थव्यवस्था ठप हो गई थी, तब दुनियाभर की सरकारों ने कर्ज अदायगी पर कुछ महीनों के लिए रोक लगा दी थी। वित्तीय संस्थानों की इस सहानुभूतिपूर्ण सोच ने कई लोगों के मन में कर्ज न चुकाने की मानसिकता को बढ़ावा दिया। भारत में, 30 जून 2025 तक, जानबूझकर कर्ज न चुकाने वालों की कुल बकाया राशि 1,76,693 करोड़ तक पहुंच गई है। वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि दुनियाभर में बढ़ती महंगाई डिफॉल्टरों की लिस्ट को बड़ा कर रही है। यह भविष्य में सरकारों को अपने बैंकों को बचाने के लिए 'वेज गार्निशमेंट' जैसे सख्त कदम उठाने पर मजबूर कर सकती है।

यदि आपको लगता है कि आप हर महीने जारी होने वाली डिफॉल्टरों की लिस्ट में शामिल हो सकते हैं, तो इससे बचने का विकल्प है: सभी लोन का एकीकरण यानी सभी पुराने (डिफॉल्ट) कर्जों को एक नए लोन में बदल देना। उन लोगों के लिए यह सबसे तेज समाधान है, जिन्हें अब भी उधार लेने की जरूरत है। ऋण एकीकरण अलग-अलग कर्जदाताओं को किए गए भुगतानों के रिकॉर्ड को व्यवस्थित कर सकता है।

मैनेजमेंट टिप

भुगतान में पीछे रहने से बचने के लिए, उधारकर्ताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ऐसी भुगतान योजना चुनें, जिसे आसानी से निभा सकें। यह कानूनी कार्रवाई से बचाएगा। साथ ही, क्रेडिट स्कोर सुधारने में भी मदद करेगा।

पैसे ऐसे बनाएं | हर साल 1.25 लाख रु. तक मुनाफा बुक करें और वापस निवेश करें

फंड के सही रिटर्न की पहचान जरूरी

वैभव जैन
वेल्थ मैनेजमेंट एक्सपर्ट

भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री इस समय स्वर्णिम दौर में है। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये आने वाला निवेश हर महीने नए रिकॉर्ड बना रहा है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के आंकड़ों के मुताबिक, बीते दिसंबर में एसआईपी निवेश 31,002 करोड़ के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। एम्फी का कहना है कि बाजार पर रिटेल निवेशकों का भरोसा लगातार बढ़ रहा है। लेकिन क्या आपने कभी गौर किया है कि म्यूचुअल फंड के मामले में जिस रिटर्न यानी निवेश से होने वाली कमाई को देखकर आप उत्साहित होते हैं, उसे सही तरीके से माप भी रहे हैं या नहीं? अक्सर निवेशक केवल पोर्टफोलियो की वैल्यू देखकर खुश हो जाते हैं, लेकिन निवेश की दुनिया में 'मुनाफा' और 'हाथ में आने वाली असली कमाई' दो अलग-अलग चीजें हैं। असली कमाई इस बात पर निर्भर करती है कि निवेश की लागत एडजस्ट करने और टैक्स चुकाने के बाद कितना रिटर्न बचता है। महंगाई भी वास्तविक रिटर्न को कम कर देती है। जानें कि निवेश से कमाई के रिटर्न का हिसाब कैसे लगाना है...

रिटर्न मापने के पैमाने: किसे कब इस्तेमाल करें?

ज्यादातर लोग म्यूचुअल फंड चुनते समय 3 साल का रिटर्न देखते हैं। मान लीजिए कि किसी फंड ने 3 साल में 50% रिटर्न दिया। सुनने में यह आकर्षक लगेगा, पर क्या इसका मतलब यह है कि आपका पैसा वाकई हर साल 50% बढ़ा? नहीं। ज्यादातर रिटर्न तीन तरीकों से मापे जाते हैं-

1. एब्सोल्यूट रिटर्न... जब आप एक साल से कम समय के लिए एकमुश्त निवेश करते हैं, तब एब्सोल्यूट रिटर्न का इस्तेमाल होता है। यह सबसे सरल गणना है।
- उदाहरण: आपने 1 लाख रुपए निवेश किए और 8 महीने बाद उसकी वैल्यू 1.10 लाख हो गई। आपका एब्सोल्यूट रिटर्न 10% है।

2. कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट
अगर आप एक साल से ज्यादा समय के लिए एकमुश्त निवेश कर रहे हैं, तो कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट (सीएजीआर) सही पैमाना है। यह बताता है कि आपका निवेश सालाना औसतन किस दर से बढ़ा है।
- उदाहरण: मान लीजिए कि आपने 1 लाख रुपए निवेश किए, जो 3 साल में 1.5 लाख हो गए। यहां एब्सोल्यूट रिटर्न 50% दिख रहा है, लेकिन इसका सीएजीआर 14.47% है। यदि महंगाई 4-5% हो, तो आपका वास्तविक रिटर्न सिर्फ 9-10% ही बचा।

3. एक्सटेंडेड इंटरनल रेट ऑफ रिटर्न
आज की तारीख में ज्यादातर निवेशक एसआईपी के जरिये निवेश करना पसंद करते हैं। लेकिन यहां एब्सोल्यूट रिटर्न या सीएजीआर आपको निवेश की सही तस्वीर नहीं दिखाते। चूंकि एसआईपी में पैसा हर महीने अलग-अलग तारीखों पर निवेश होता है, इसलिए आपकी हर किस्त को बाजार में बढ़ने के लिए अलग-अलग समय मिलता है। मसलन, आपकी पहली किस्त को 12 महीने मिले तो आखिरी किस्त को शायद सिर्फ 1 महीना। यही कारण है कि यहां एक्सटेंडेड इंटरनल रेट ऑफ रिटर्न (एक्सआईआरआर) का इस्तेमाल किया जाता है। एक्सआईआरआर आपके हर कैश फ्लो को टाइम-एडजस्ट करता है और निवेश के अलग-अलग समय अंतरालों को ध्यान में रखते हुए पूरे पोर्टफोलियो का वास्तविक सालाना रिटर्न बताता है। सरल शब्दों में, यह आपके निवेश की हर एक पाई के समय की वैल्यू को भी जोड़ता है। इसलिए अगली बार जब आप किसी म्यूचुअल फंड के चार्ट पर सालाना 18% का रिटर्न देखें, तो तुरंत यह चेक करें कि यह एब्सोल्यूट है, सीएजीआर है या एक्सआईआरआर? क्योंकि सही मापदंड समझना ही निवेश से जुड़े आपके फैसले का आधार होना चाहिए।

म्यूचुअल फंड में आपने जो निवेश किया है या करने जा रहे हैं, उसका रिटर्न मापने का सही पैमाना इस पर निर्भर करेगा कि आप किस तरीके से कितने समय के लिए पैसा लगा रहे हैं।

बचेगा कितना... टैक्स की गणना समझना जरूरी

1. इक्विटी म्यूचुअल फंड
शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन: 1 साल से पहले निवेश भुनाएंगे तो मुनाफे पर 20% टैक्स लगेगा।
उदाहरण: जनवरी में किए गए ₹10,000 के निवेश को अक्टूबर में ₹12,000 में भुनाने पर ₹2,000 पर ₹400 टैक्स देना होगा।
लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन (एलटीसीजी): 1 साल के बाद निवेश भुनाने पर 12.5% टैक्स लगेगा हालांकि, एक वित्त वर्ष में 1,25,000 रुपए तक का मुनाफा टैक्स-फ्री है।

2. डेट म्यूचुअल फंड
1 अप्रैल 2023 के बाद खरीदे गए डेट फंड्स के रिटर्न आपकी कुल आय में जोड़ दिए जाएंगे। स्लैब के हिसाब से टैक्स लगेगा।

टैक्स हार्वेस्टिंग सीखिए...

टैक्स का बोझ कम करने के लिए आप ये रणनीतियां अपना सकते हैं:
एलटीसीजी हार्वेस्टिंग: चूंकि हर साल 1.25 लाख तक का एलटीसीजी टैक्स फ्री है, इसलिए निवेशक हर वर्ष इस सीमा में मुनाफा बुक कर सकते हैं। फिर उस पैसे को दोबारा निवेश कर सकते हैं।
टैक्स लॉस हार्वेस्टिंग: घाटे वाले फंड्स को बेचकर मुनाफा सेट-ऑफ करें। इससे टैक्स देनदारी कम हो जाएगी। यदि डेट फंड से इक्विटी में जा रहे हैं, तो एकमुश्त निकासी की जगह सिस्टमैटिक ट्रांसफर प्लान चुनें, ताकि एक ही साल में भारी टैक्स देनदारी न बने।

ईवी खरीदकर भी टैक्स में 1.5 लाख तक की छूट पा सकते हैं

इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) खरीदने पर आप मुख्य रूप से आयकर अधिनियम की धारा 80ईईबी और अन्य सरकारी प्रोत्साहनों के जरिये टैक्स बचा सकते हैं।
लोन के ब्याज पर छूट: यदि आप ईवी खरीदने के लिए लोन लेते हैं, तो एक वित्त वर्ष में चुकाए गए ब्याज पर 1.5 लाख रुपए तक की टैक्स कटौती का दावा कर सकते हैं।
किस तरह के वाहन पर छूट: यह लाभ इलेक्ट्रिक दोपहिया और कार, दोनों तरह के वाहनों की खरीद पर उपलब्ध है।
पात्रता: आप टैक्स कटौती का दावा केवल तभी कर सकते हैं, यदि लोन 1 जनवरी 2019 और 31 मार्च 2023 के बीच मंजूर हुआ हो।

क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन 4 वजहों से रिजेक्ट हो सकता है

कमजोर क्रेडिट हिस्ट्री: यदि क्रेडिट स्कोर कम है, आपने पहले कभी लोन नहीं लिया है, या पिछले भुगतानों में देरी की है, तो बैंक जोखिम मानकर आपका आवेदन रद्द कर देते हैं।
आय की स्थिति: यदि मासिक आय बैंक की न्यूनतम सीमा से कम है या आप बार-बार नौकरी बदलते रहते हैं, तो पुनर्भुगतान क्षमता पर संदेह के कारण हो सकता है कि कार्ड न मिले।
भारी कर्ज: यदि आय का बड़ा हिस्सा पहले से चल रहे लोन में जा रहा है, तो नया क्रेडिट कार्ड मिलना मुश्किल हो जाता है।
दस्तावेजों में त्रुटि: फॉर्म में नाम की स्पेलिंग गलत होने या पैन/आधार विवरण मिस्मैच होने से भी आवेदन खारिज हो जाता है।

रिटायरमेंट प्लानिंग के लिए 10% गोल्डन रूल अपनाएं

रिटायरमेंट फंड के लिए मासिक आय का 10% हिस्सा अलग रखना चाहिए। जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, आप हर साल अपने निवेश में 10% बढ़ोतरी भी कर सकते हैं। यह छोटी सी रणनीति बड़ा अंतर पैदा कर सकती है।
- आपकी उम्र 25 वर्ष है और प्रति माह 30,000 रुपए कमाते हैं। इस स्थिति में आपका रिटायरमेंट योगदान 3,000 रुपए होगा। आप हर साल अपना निवेश 10% बढ़ाएंगे।
- जब तक आप 60 वर्ष की आयु में रिटायर होंगे, तब तक आप 35 वर्षों तक निवेश कर चुके होंगे। ऐसे में आपका रिटायरमेंट फंड 3.4 करोड़ का हो सकता है।

सोमवार को भास्कर बिजनेस गाइड में पढ़ें
मार्केट इनसाइट: जानें कि आम बजट से ठीक पहले वाले महीने में शेयर बाजार का रुझान कैसा रह सकता है?
फंड का फंडा- डेट कैटेगरी में ओवरनाइट फंड क्या होते हैं? हाल के वर्षों में इन फंड्स का प्रदर्शन कैसा रहा है?

भास्कर Q&A

एनआरआई बनने पर भी एनपीएस जारी रहेगा

- मेरी बेटी का जब एनपीएस अकाउंट खोला गया था तब वह भारत की निवासी थी। खाता खोलने के 5 साल बाद विदेश चली गई है और अब एनआरआई (प्रवासी भारतीय) है। क्या वह पुराने खाते में योगदान जारी रख सकती है? -आरके गोयल
आपकी बेटी एनआरआई बनने के बाद भी अपना मौजूदा एनपीएस खाता जारी रख सकती है। एनपीएस नियमों के तहत, यदि किसी व्यक्ति ने भारतीय निवासी के रूप में खाता खोला है, तो एनआरआई बनने के बाद भी उसी खाते को जारी रखने की अनुमति है। ध्यान रखें कि योगदान फेमा नियमों के तहत अनुमत बैंक खाते के माध्यम से होना चाहिए, जो आमतौर पर एनआरई या एनआरओ खाता होता है। बेटी को अपने बैंक, एनपीएस पीओपी/सीआरए को आवासीय स्थिति में बदलाव के बारे में सूचित करना चाहिए, ताकि रिकॉर्ड अपडेट रहे।

- हम पति-पत्नी की मासिक आय ₹2 लाख है। दो बेटियों के लिए हर साल सुकन्या समृद्धि योजनाओं व पीपीएफ में ₹1.5-1.5 लाख निवेश करते हैं। 20,000 रुपए की मासिक एसआईपी है। हम 40 वर्ष के हैं। 60 की आयु तक ₹8-10 करोड़ का फंड कैसे बनाएं? -संदीप चौधरी
40 की उम्र में हर माह 2 लाख रुपए कमाने वाला जोड़ा अनुशासित और 'स्टेप-अप' निवेश से 8-10 करोड़ का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। यदि आप सालाना 15% इक्विटी रिटर्न और हर साल 10% एसआईपी स्टेप-अप का अनुमान लगाते हैं, तो मौजूदा 20,000 रुपए की एसआईपी से 20 वर्षों में 4.5-5 करोड़ जमा हो सकता है। सालाना 1.5 लाख का निवेश 20 वर्षों में 60-70 लाख रुपए अतिरिक्त जोड़ सकता है। ऐसे में आपका कुल फंड 5.1-5.7 करोड़ रुपए हो जाएगा। शेष कमी को पूरा करने और 8-10 करोड़ रुपए के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए, आपको अगले कुछ वर्षों में आय बढ़ने के साथ-साथ कुल मासिक एसआईपी बढ़ाकर 35,000-40,000 रुपए कर देना चाहिए।

- मेरी उम्र 50 वर्ष है। मासिक आय 70 हजार है। 16 हजार की ईएमआई और कोई बचत नहीं है। तीन बच्चों में से दो उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मैं कैसे बचत करूं। -शैलेंद्र मेहता
50 साल की उम्र में लोन और बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारियों के साथ वित्तीय योजना बनाना चुनौतीपूर्ण, लेकिन संभव है। यदि आप 10 वर्षों के लिए 24,000 रुपए प्रति माह की एसआईपी करते हैं (15% सालाना रिटर्न मानकर), तो आप 60 वर्ष की उम्र तक 63 लाख रुपए जमा कर सकते हैं। 60 की उम्र से एसडब्ल्यूपी प्लान शुरू कीजिए और हर साल करीब 7.2 लाख रुपए निकाल सकते हैं और यह फंड पूरा खत्म होने से पहले 79 की उम्र तक चलेगा। इसके लिए जरूरी है कि हर महीने वेतन आते ही आप सबसे पहले निवेश के लिए पैसे अलग करें।

एक्सपर्ट: विजय माहेश्वरी, फाउंडर, स्टॉकटिक

आपके मन में बचत, निवेश और टैक्स जैसे पर्सनल फाइनेंस से जुड़े कोई भी सवाल हों, तो यह क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें। एक्सपर्ट इनके जवाब देंगे।

आज का पंचांग

पंडित प्रो. विनोद शास्त्री

तिथि संवत् : माघ, कृष्ण पक्ष अष्टमी, रविवार प्रात: 10:21 तक रहेगी। विक्रम संवत् 2082, शाके 1947, हिजरी 1447, मुस्लिम माह रज्जब तारीख 21, सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु, 11 जनवरी।

सूर्योदय कालीन नक्षत्र : चित्रा नक्षत्र सायं 06:12 तक, इसके बाद स्वाति नक्षत्र रहेगा। सुकर्मा योग सायं 05:27 तक, इसके बाद धृति योग रहेगा। कौलव करण प्रात: 10:21 तक, इसके बाद तैतिल करण रहेगा।

ग्रह विचार (प्रात: 05:30) : सूर्य-धनु, चंद्र-तुला, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुंभ, केतु-सिंह राशि में स्थित है।

दिशाशूल : पश्चिम दिशा – यदि जरूरी हो तो छुआरा खाकर यात्रा कर सकते हैं।

राहुकाल : सायं 04:30 से 06:00 तक रहेगा।

शुभाशुभ ज्ञानम् : सूर्य उत्तराषाढ़ा में प्रात: 08:36 से, मंगल उत्तराषाढ़ा में रात्रि 09:10 से।

चौघड़िया मुहूर्त : प्रात: 08:40 से 09:58 तक चर का, प्रात: 09:58 से दोपहर 12:34 तक लाभ व अमृत का, दोपहर 01:53 से 03:11 तक शुभ का चौघड़िया रहेगा।

आज विशेष : आज रविवार को प्रात: स्नानादि के बाद जलपूर्ण कलश में लाल पुष्प, लाल चंदन डालकर सूर्य भगवान को चढ़ाएं। इसके प्रभाव से ऐश्वर्य एवं आत्मबल बढ़ता है। आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करें और दिन में एक बार बिना नमक का भोजन करें तो सूर्य जनित दोष दूर होते हैं। आज सुकर्मा योग में चने का दान करना शुभ फलदायी होता है।

आज जन्मे बच्चों के नामाक्षर व राशि

समय	नक्षत्र	चरण	पाया	राशि	नामाक्षर
07:21	चित्रा	3	रजत	तुला	र
11:32	चित्रा	4	रजत	तुला	री
18:12	स्वाति	1	रजत	तुला	रू
24:54	स्वाति	2	रजत	तुला	रे

मैनेजमेंट फंडा

एन. रघुरामन

मैनेजमेंट गुरु, raghu@dbcorp.in

याद कीजिए उन साधारण लोगों को, जिन्होंने आपकी जिंदगी को असाधारण बनाया

कुछ लोगों के लिए अखबार में कभी शोकलेख नहीं छपते। वे शायद ही कभी खबरों में आते हैं। लेकिन हममें से हरेक ने किसी न किसी ऐसे व्यक्ति से जरूर मुलाकात की होगी, जिसने जिंदगी में हमारी सहायता की हो या उसे गढ़ा हो। लेकिन क्या हम उन्हें याद रखते हैं? यह विचार मेरे मन में आया, क्योंकि मैं इस सप्ताह अपनी मां का 'श्राद्ध' करने जा रहा हूं। यह एक वार्षिक अनुष्ठान है, जिसे हमारे धर्म में दिवंगत आत्माओं की स्मृति में किया जाता है। इस दिन मैं विशेष रूप से समय निकालकर टाटा मेमोरियल अस्पताल, मुम्बई के उन तमाम डॉक्टरों का स्मरण करता हूं। उनमें से एक थे डॉ. आरएस राव, जिन्होंने मेरी मां को कैंसर होने के बाद भी 11 वर्षों तक जीवित रखने के लिए अथक परिश्रम किया। मैं उनसे नियमित मिलता था और मैंने कई बार गहरे मन से उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की है, जब तक कि 2011 में स्वयं उनका निधन नहीं हो गया। मेरी भांजी- जो मेरी ही आंखों के सामने बड़ी हुई है- के लिए तो उसके डॉक्टर सिर्फ वो डॉक्टर नहीं थे जिन्होंने उसे दूसरा जीवन दिया, बल्कि वह व्यक्ति भी थे, जिन्होंने उसे वैसा भोजन दिया, जिसके बारे में वह मानती है कि उसी ने उसे पोषित किया और एक मनुष्य के रूप में गढ़ा। उसकी दिलचस्प स्मृति-कथा इस प्रकार है।

संडे स्पेशल

तमिलनाडु में हमारे गांव वाले घर में दो प्रवेश द्वार थे। हमारे बड़े संयुक्त परिवार की मदद करने वाले सभी कामगार पीछे के दरवाजे से ही भीतर आते थे- नारियल के पेड़ों से फल उतारने वाले हों या खाने और पूजा के लिए केले के पत्ते काटने वाले। लेकिन उन कामगारों में एक व्यक्ति बहुत खास था। वह सूखी टहनियों से एक छोटा-सा चूल्हा जलाता और उस पर पानी से भरा एल्युमिनियम का बर्तन रख देता। फिर वह पास की दुकान से एक अंडा लाता और उसे उबलते पानी में डाल देता। अंडा उबालकर छीलने के बाद वह जोर से आवाज लगाता- अम्मा, बच्ची को ले आओ। मेरी नानी मेरे मामा की बेटी को गोद में लेकर आती थीं, जो गंभीर बीमारी के कारण बेहद कमजोर हो गई थी और जिसके भोजन में अंडा शामिल करने की सलाह दी गई थी। उस उम्र में भी बूढ़ी नानी बगीचे में बैठ जातीं, मेरी नन्ही-सी भांजी को कहानियां सुनाते हुए उसे अंडा खिलाने लगतीं। जबकि हमारा घर कई वर्षों तक ऐसा स्थान रहा था, जहां प्याज तक का इस्तेमाल नहीं होता था। यही गांव की जीवन-शैली थी।

इस तरह मेरी भांजी उन दो लोगों से गहराई से जुड़ गई- एक वे व्यक्ति, जो रोज उसके लिए अंडा उबालते थे, और दूसरी मेरी नानी, जिन्होंने अपने जीवन के 75 वर्षों तक कभी प्याज तक नहीं छुआ था, फिर भी छह महीने से ज्यादा समय तक उसे रोज अंडा खिलाया। अंडों ने सीधे तौर पर उसके स्वास्थ्य में कोई चमत्कारिक योगदान तो नहीं दिया, लेकिन वो यह अच्छी तरह समझती थी कि उन दो लोगों की निष्ठा और समर्पण ने उसकी सेहत को जरूर सम्बल दिया। और तीसरे व्यक्ति उसके डॉक्टर थे, जिनकी उसके मन में आज एक झीनी-सी याद भर है। उन डॉक्टर के हस्तक्षेप के बिना वह जीवित न बच पाती। ये वो दौर था, जब कोरोनरी आर्टरी बायपास सर्जरी को बहुत दुर्लभ माना जाता था। वह उन गिने-चुने बच्चों में से एक थी, जो उस समय उस सर्जरी से गुजरे। जब उन डॉक्टर का निधन हुआ, तो वह अमेरिका से विशेष रूप से भारत आई, उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुई और अपने परिवार से कहा- मुझे गर्व है कि मेरे शरीर पर वह निशान है, जिसे एक ऐसे असाधारण व्यक्ति ने काटा और सिला। जाहिर है कि वह नानी के अंतिम संस्कार में भी शामिल हुई। लेकिन मुझे तब आश्चर्य हुआ, जब वह उस घरेलू सहायक के अंतिम संस्कार में भी पहुंची- जिसने छह महीनों तक उसके लिए अंडे उबाले थे। दिलचस्प यह है कि वह आज भी उस परिवार को हर साल दीपावली के उपहार भेजती है और एक निश्चित राशि भी देती है। उसका गहरा विश्वास है कि वह इन लोगों की मदद के कारण ही जीवित है। उन साधारण लोगों को याद करना, जिन्होंने हमारी जिंदगी को असाधारण बना दिया- अपने आप में एक बेहद संतोषदायक अनुभव है।

फंडा यह है कि आज रविवार है, कुछ मिनटों का समय निकालें और उनमें से किसी व्यक्ति को फोन करें, जिन्होंने आपके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। या केवल उन्हें धन्यवाद कहने के लिए उनसे जाकर मिलें। तब देखें आपके भीतर क्या होता है।

इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

यूपी से होडल लाखों रुपए के नशीले इंजेक्शन बेचने आया तस्कर गिरफ्तार

भास्कर न्यूज | पलवल

एंटी नारकोटिक्स टीम ने लाखों रुपए के नशीले इंजेक्शनों के साथ यूपी के एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ होडल थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। थाना प्रभारी विश्व गौरव ने बताया कि उनकी टीम को सूचना मिली कि मथुरा के उस्फार गांव निवासी आरिफ नशीले इंजेक्शन व स्मैक बेचता है। वह नशीले इंजेक्शन बेचने के लिए होड़ल में गढ़ी मोड़ पर किसी का इंतजार कर रहा है।

इसके बाद टीम ने दबिश देकर आरोपी को हिरासत में ले लिया। उसकी तलाशी के लिए मौके पर ड्यूटी मजिस्ट्रेट एक्साइज एंड टैक्सेशन अधिकारी नीरज कुमार को बुलाया गया। तलाशी ली गई तो आरोपी के पास से 48 पैकेट नशीले इंजेक्शन बरामद हुए। एक पैकेट में पांच इंजेक्शन थे। टीम के एसआई सिराजुद्दीन ने होडल थाने में शिकायत देकर आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कराया। आरोपी से पुलिस पूछताछ कर रही है।

आयुष्मान • फ्री इलाज का सिस्टम गड़बड़ाया, सितंबर से भुगतान नहीं

200 अस्पतालों में इलाज बंद, निजी अस्पतालों के ₹600 करोड़ अटके

भास्कर न्यूज | रायपुर

राज्य के प्राइवेट अस्पतालों में फ्री इलाज का सिस्टम एक बार फिर डगमगा गया है। दिवाली के पहले से ही निजी अस्पतालों को आयुष्मान योजना के तहत इलाज करवाने वाले मरीजों के पैसों का भुगतान नहीं किया गया है। इससे छोटे और मंझोले अस्पतालों की स्थिति ज्यादा बिगड़ गई है। बकाया रकम बढ़ कर लगभग 600 करोड़ हो गई है। खासतौर पर लोन लेकर अस्पताल खोलने वाले प्रबंधन के सामने ईएमआई का संकट खड़ा हो गया है। इस वजह से राजधानी सहित राज्य भर में कई छोटे अस्पतालों ने मरीजों का फ्री इलाज बंद कर दिया है। इससे गरीब मरीजों के लिए दिक्कत शुरू हो गई है।

आयुष्मान योजना के तहत जितने मरीज सरकारी अस्पतालों में इलाज करवाने पहुंचते हैं, लगभग उतने ही प्राइवेट अस्पताल जाते हैं। स्वास्थ्य विभाग हर साल औसतन 2500 करोड़ का भुगतान गरीब मरीजों के इलाज के खर्च के तौर पर निजी अस्पतालों को करता है। इसके बावजूद हर चार-पांच माह में निजी अस्पतालों का भुगतान अटक जाता है। इसका सीधा असर मरीजों के इलाज पर पड़ता है। इस बार भी लगभग यही स्थिति है। निजी अस्पतालों में मरीजों को हो रही दिक्कतों और प्रबंधन की परेशानी को लेकर भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ के पूर्व अध्यक्ष विमल चोपड़ा और हॉस्पिटल बोर्ड के चेयरमैन डा. सुरेंद्र शुक्ला कई बार स्वाथ्य विभाग के अफसरों से लेकर स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल तक से मुलाकात कर चुके हैं। हालांकि अब तक समस्या का समाधान नहीं हो पाया है।

रात के समय इमरजेंसी में नहीं मिल रहा फ्री इलाज

प्राइवेट अस्पतालों का भुगतान अटकने से रात के समय इमरजेंसी में मरीजों को ज्यादा दिक्कत हो रही है। खासतौर पर शहर के आउटर और दूर दराज के इलाकों में तबियत बिगड़ने पर निजी अस्पतालों में आयुष्मान योजना से इलाज नहीं किया जा रहा है। मजबूरी में गरीब परिवार को भी तत्काल इलाज के लिए भुगतान करना पड़ रहा है। इस स्थिति के बारे में भी प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों ने स्वास्थ्य मंत्री को जानकारी दी है।

पिछले साल भी अटके थे इलाज के 1200 करोड़

2024-25 में भी निजी अस्पतालों का करीब 12 सौ करोड़ भुगतान अटक गया था। उस समय चुनाव के कारण दिक्कत आई थी। कांग्रेस शासन काल में जुलाई-अगस्त 2023 से भुगतान नहीं किया जा रहा था। नवंबर में चुनाव हुए। सत्ता परिवर्तन की वजह से पेंच फिर फंसा। उस समय भी कई निजी अस्पतालों ने इलाज बंद कर दिया था। बाद में भुगतान किया गया। अब फिर वही स्थिति पैदा हो गई है।

स्वास्थ्य मंत्री के सामने प्राइवेट अस्पतालों की दिक्कतों को रखा है। मंत्री ने हमें आश्वस्त किया है कि इस माह के अंत तक भुगतान कर दिया जाएगा। बजट का प्रस्ताव वित्त विभाग भेजा है।

डॉ. सुरेंद्र शुक्ला, चेयरमैन, हॉस्पिटल बोर्ड

तकनीकी अड़चनों के कारण प्राइवेट अस्पतालों को भुगतान में दिक्कत हो रही है। जल्द ही समस्या दूर कर ली जाएगी। अभी करीब 500-600 करोड़ निजी अस्पतालों का भुगतान रुका है।

– श्याम बिहारी जायसवाल, मंत्री स्वास्थ्य विभाग

From the pages of TIME

संडे प्रोफाइल : डेल्सी रॉड्रिगेज

हाल ही में अमेरिका द्वारा वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को हिरासत में लिया गया। इसके बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला की उपराष्ट्रपति **डेल्सी राड्रिगेज को अंतरिम राष्ट्रपति नियुक्त किया है।**

डेल्सी को कमान, ताकि तेल का व्यापार न रुके

कोनोर ग्रीन, चैंटेले ली

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के फैसले अकसर चौंकाने वाले होते हैं। इस बार भी किसी ने नहीं सोचा था कि वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को हटाने के बाद ट्रम्प उपराष्ट्रपति डेल्सी रॉड्रिगेज को सत्ता सौंप देंगे। विपक्ष की नेता और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मारिया कोरिना मचाडो स्वाभाविक दावेदार थीं। डेल्सी को कमान न मिलने के कई कारण हो सकते थे। वे मादुरो की भरोसेमंद थीं और अमेरिका सहित कई पश्चिमी देशों ने उन पर प्रतिबंध लगाए थे। फिर भी ट्रम्प ने उन्हें अंतरिम नेता के रूप में स्वीकार किया, क्योंकि वे अमेरिकी नजर में कई मायनों में उपयोगी हैं।

ट्रम्प की नजर वेनेजुएला के अपार तेल भंडार पर है। उनका मानना है कि डेल्सी के नेतृत्व में सरकार व्यवस्थित तरीके से चलेगी और तेल इंडस्ट्री पटरी पर बनी रहेगी। दरअसल डेल्सी ने तेल मंत्री रहते हुए वेनेजुएला की तेल इंडस्ट्री को सक्षमता से चलाया और अमेरिकी प्रतिबंधों के बीच अर्थव्यवस्था को संकट से बाहर निकाला। तेल उत्पादन बढ़ाने में उनकी अहम भूमिका रही, इसलिए कुछ अमेरिकी अधिकारी भी उनका सम्मान करते हैं। ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि मादुरो की तुलना में डेल्सी के साथ प्रोफेशनल तरीके से काम करना आसान होगा। हालांकि अंतरिम राष्ट्रपति की शपथ लेने के बाद डेल्सी ने अमेरिका विरोधी तेवर भी दिखाए हैं।

56 साल की डेल्सी को राजनीति विरासत में मिली है। उनका जन्म 1969 में काराकस में हुआ। उनके पिता खोर्खे एंटोनियो रॉड्रिगेज मार्क्सवादी नेता थे और अमेरिकी बिजनेसमैन विलियम नीहौस के अपहरण में शामिल थे। नीहौस को तीन साल बंधक रखने के बाद 1979 में रिहा किया गया। अपहरण कांड के बीच 1976 में उनके पिता की हिरासत में 34 साल की उम्र में मौत हो गई। डेल्सी उस समय सात साल की थीं।

डेल्सी वकील और वेनेजुएला सेंट्रल यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहीं। उनका राजनीतिक करियर पूर्व राष्ट्रपति ह्यूगो चावेज के शासनकाल में शुरू हुआ। मादुरो सरकार में वे पहली महिला विदेश मंत्री, नेशनल असेम्बली की प्रेसिडेंट और 2018 में उपराष्ट्रपति बनीं। 2020 से वे देश की वित्त और तेल मंत्री भी हैं।

पट्टा वितरण कार्यक्रम में चंद्रबाबू

आपकी जमीन, आपका अधिकार: सीएम नायडू

भास्कर न्यूज | काकीनाडा

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने अनापार्थी विधानसभा क्षेत्र के रयावरम ग्राम में शासकीय पट्टा वितरण कार्यक्रम में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि "आपकी जमीन, आपका अधिकार है। किसानों और भूस्वामियों को यही आश्वासन राज्य की तेलुगू देशम सरकार दे रही है।

उन्होंने आगे बताया कि सरकार किसानों को बिना किसी विवाद के साफ-सुथरे दस्तावेज उपलब्ध कराने की दिशा में काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि इसी दिशा में जमीनों का पुनर्सर्वेक्षण किया जा रहा है। शुक्रवार को चंद्रबाबू नायडू रायवरम, मंडपेट निर्वाचन क्षेत्र में आयोजित पट्टादार पासबुक वितरण कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम में उपस्थित क्षेत्र के विधायक रामाकृष्ण रेड्डी तथा मंत्रियों, जन प्रतिनिधियों और अधिकारियों ने चंद्रबाबू का स्वागत किया।

जगराओं में तलवारों से लैस लुटेरे घर में घुसे, मोबाइल छीने, नकदी लूटी

जगराओं |लैहदी फैनी इलाके में शनिवार सुबह सवा दो बजे तलवारों से लैस चार लुटेरे एक प्रवासी परिवार के घर में घुस आए और मौत का खौफ दिखाकर नकदी, मोबाइल और जरूरी दस्तावेजों से भरा बैग लूटकर फरार हो गए। पीड़ित सारव झालम के मुताबिक, लुटेरे दबे पांव दीवार फांदकर घर तक पहुंचे और दरवाजे से अंदर घुस गए। अचानक नींद खुलते ही परिवार के लोग कुछ समझ पाते, इससे पहले ही बदमाशों ने सबके मोबाइल फोन कब्जे में ले लिए। एक मोबाइल का जबरन लॉक पिन निकलवाकर खोल लिया गया और फिर तलवार दिखाकर पैसों की मांग की गई। पीड़ित ने बताया कि जब वह दूसरे कमरे में पैसे लेने गया तो जान बचाने के लिए बाहर की तरफ भागकर शोर मचाया।

शिक्षा से बड़ा निवेश नहीं, संघर्ष ही सबसे बड़ी ताकत: सीजेआई

भास्कर न्यूज | नारनौंद

देश के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) जस्टिस सूर्यकांत ने अपने पैतृक गांव हरियाणा के पेटवाड़ के दौरे पर शिक्षा और संघर्ष के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने एक सम्मान समारोह के दौरान स्पष्ट शब्दों में कहा कि शिक्षा से बड़ा कोई निवेश नहीं है और संघर्ष ही जीवन की सबसे बड़ी ताकत है। करीब 13 मिनट के अपने भाषण में जस्टिस सूर्यकांत कई बार भावुक हुए। उन्होंने कहा कि गांव का प्यार और बुजुर्गों का आशीर्वाद ही मेरी सबसे बड़ी पूंजी है। आज जो कुछ भी हूं, उसमें इस गांव, यहां के शिक्षकों और लोगों का बड़ा योगदान है। उन्होंने बच्चों को देश का भविष्य बताते हुए कहा कि अगर उन्हें सही शिक्षा, मार्गदर्शन और अवसर मिले, तो भारत कहीं तेजी से तरक्की कर सकता है।

मध्य प्रदेश विस के काम में भी लूट

8 लाख का सामान 21 लाख में खरीदा, माइक पर 5.5 लाख रु. का 'कमीशन'

जितेंद्र यादव | भोपाल

लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने विधानसभा के काम में भी घोटाला कर दिया। विधानसभा में साउंड और नेटवर्किंग सिस्टम के लिए की जून 2023, सितंबर 2023 और अक्टूबर 2023 में की गई खरीद में गड़बड़ी की गई। गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) पोर्टल से सामान 6 गुना महंगे दामों पर खरीदा गया, जबकि वही सामान बाजार में काफी कम कीमत पर उपलब्ध था। दस्तावेजों के अनुसार, 2023 में कुल 26 आइटम खरीदे गए। तीनों खरीद में गड़बड़ी हुई। इससे सरकार को 48 लाख रुपए का नुकसान हुआ। नियमों के मुताबिक, ये सभी काम पीडब्ल्यूडी के एओआर (शेड्यूल ऑफ रेट) में शामिल थे। इन्हें ई-टेंडर पोर्टल से कराया जाना चाहिए था। इसके बावजूद खरीदी GeM पोर्टल से कराई गई। आरोप है कि GeM पर रेट इस तरह तय किए गए, ताकि ज्यादा कीमत को सही ठहराया जा सके। टेंडर टेक इंडिया, आकाश इलेक्ट्रिकल, एफबी इलेक्ट्रिकल, सोनी इलेक्ट्रिकल और टेक्नो सॉल्यूशन को दिए गए। आरोप है कि लंबे समय से इन्हीं एजेंसियों को नियमों से इतर काम दिया जा रहा है। SOR में शामिल आइटम के नाम और स्पेसिफिकेशन बदले गए, ताकि मुकाबला खत्म हो जाए।

1 लाख का मिक्सर 3 लाख में

आइटम	बाजार में	खरीदी
डेलीगेट यूनिट	8	21
बिना ब्रांड वायर	0.66	2.75
कॉलम माइक	1	6.50
मिक्सर	1	3
कॉन्फ्रेंस कंट्रोलर	0. 70	2.48

▪ कीमत लाख रु. में।

टेंडर फिक्सिंग : दिसंबर में करवा दिया काम... फरवरी में उसी कंपनी को टेंडर

विधानसभा में नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन (NeVA) प्रोजेक्ट के तहत कराए गए इलेक्ट्रिकल कामों में टेंडर फिक्सिंग के गंभीर आरोप सामने आए हैं। दस्तावेज बताते हैं कि काम पहले करा लिया गया और टेंडर बाद में निकाला गया। दिसंबर 2024 में विधानसभा परिसर में इलेक्ट्रिकल और संबंधित काम पूरे कर दिए गए थे।

जनवरी 2025 में 70 लाख रु. की निविदा GeM पोर्टल पर जारी की गई। जिस काम के लिए टेंडर निकाला गया, उसका बड़ा हिस्सा पहले ही हो चुका था। रिकॉर्ड के मुताबिक 10 जनवरी 2025 को जारी निविदा (GEM/2025/B/5804096) को फरवरी 2025 के आखिरी में फाइनल किया। टेंडर उसी कंपनी टेक्नो सॉल्यूशन प्रा.लि. को दिया गया, जिसने टेंडर जारी होने से करीब दो माह पहले ही विधानसभा में काम कर दिया था।इसका सीधा सबूत विधानसभा सुरक्षा शाखा का गेट पास नंबर 302 है, जो 13 जनवरी को जारी किया गया था। इसमें दर्ज है कि कंपनी काम पूरा करने के बाद सामग्री वापस ले जा चुकी थी। यह गेट पास पीडब्ल्यूडी शाखा के एसडीओ हेमंत झारिया ने अधिकृत किया था। इससे साफ होता है कि जब जनवरी में टेंडर प्रक्रिया चल रही थी, तब तक काम पूरा हो चुका था।

पीएमओ ने भी पत्र भेजा

मामले की शिकायत लोकायुक्त भोपाल व प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) तक की गई है। वहां से जांच के लिए विभाग को पत्र भी भेजा गया है, पर कार्रवाई नहीं हुई है।

पेज एक का शेष

बुजुर्ग दंपती को 15 दिन डिजिटल अरेस्ट रखा...

पीड़ित दंपती लंबे समय तक अमेरिका में रह चुके थे और 2016 में भारत लौटकर ग्रेटर कैलाश में बस गए थे। घटना के समय वे घर में अकेले रह रहे थे, जबकि उनके बच्चे विदेश में बसे हैं। इसी स्थिति का फायदा उठाकर ठगों ने उन्हें वीडियो कॉल और डिजिटल माध्यमों से नियंत्रित किया।डिजिटल अरेस्ट के दौरान ठगों ने दंपती को बैंक खातों, निवेश और संपत्तियों से जुड़ी जानकारी देने को कहा और अलग-अलग खातों में बड़ी रकम ट्रांसफर करवा ली। उन्हें किसी से संपर्क न करने की सख्त हिदायत भी दी गई थी। मामला सामने आने के बाद दंपती ने दिल्ली पुलिस की साइबर क्राइम यूनिट में शिकायत दर्ज कराई। गौरतलब है कि इससे पहले सितंबर में दिल्ली के एक सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी से भी डिजिटल अरेस्ट के नाम पर करीब 23 करोड़ रुपए की ठगी की गई थी।

ईडी और दीदी की लड़ाई...

उन्होंने आरोप लगाया कि ममता ने ईडी से दस्तावेज छीन लिए और सवाल उठाया कि आखिर उन कागजों में क्या छिपा था। सिंह ने कहा कि बंगाल को बचाने के लिए ममता को हटाना जरूरी है।

ममता बनर्जी का चुनावी गीत जारी, निशाने पर केंद्र-एजेंसियां: ईडी कार्रवाई के बीच टीएमसी ने आक्रामक चुनावी गीत जारी किया है। गीत में भाजपा और केंद्र सरकार पर लोकतंत्र कुचलने और बंगाल की पहचान पर हमला करने का आरोप है। एनआरसी, एसआईआर और वोटर लिस्ट के मुद्दे उठाते हुए कहा गया है कि बंगाल डरने वाला नहीं और हर हमले का जवाब देगा।

लखनऊ में प्रेमी और प्रेमिका वंदे भारत के आगे कूदे, सिर धड़ से अलग, हाथ कटे

लखनऊ| लखनऊ में युवक-युवती वंदे भारत ट्रेन के आगे कूद गए। उनकी टुकड़ों में कटी लाश ट्रैक किनारे पड़ी मिली। दोनों सदर में एक प्राइवेट ऑफिस में साथ काम करते थे। युवक पहले से शादीशुदा है और उसका एक साल का बेटा भी है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। घटना आलमनगर स्टेशन के पास रेलवे जलालपुर फाटक पर शनिवार दोपहर पौने 2 बजे हुई। युवक की पहचान नीलमथा के रहने वाले सूर्यकांत (35) के रूप में हुई। वहीं, युवती अर्जुनगंज के शाह खेड़ा गांव की रहने वाली दीपाली (25) थी। दीपाली 8 जनवरी (गुरुवार) को ऑफिस के लिए अपने घर से निकली थी, लेकिन पहुंची नहीं। युवती के घरवालों ने 8 जनवरी को ही सुशांत गोल्फ सिटी थाने में गुमशुदगी की एफआईआर दर्ज कराई थी।

भास्कर ब्रेकिंग विभाग ने मांगा शिक्षकों के क्लास लेने का ब्योरा

स्थाई प्रोफेसर-प्रिंसिपल नहीं लेते क्लास, एडहॉक शिक्षकों के ही भरोसे उच्च शिक्षा

एजुकेशन रिपोर्टर | रांची

राज्य के विश्वविद्यालयों और अंगीभूत महाविद्यालयों में उच्च शिक्षा की स्थिति गंभीर होती जा रही है। इसका खुलासा उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग के निदेशक सुधीर बाड़ा की ओर से राज्य के सभी विश्वविद्यालयों को भेजे गए पत्र से हुआ है। पत्र में साफ तौर पर कहा गया है कि स्थाई यूनिवर्सिटी शिक्षक और प्रिंसिपल नियमित रूप से कक्षाएं नहीं ले रहे हैं। पढ़ाई का पूरा भार नीड बेस्ड (एडहॉक) असिस्टेंट प्रोफेसरों पर डाल दिया गया है। निदेशक ने इसे अकादमिक व्यवस्था के लिए खतरनाक बताते हुए सभी विश्वविद्यालयों से स्थाई शिक्षकों, नीड बेस्ड शिक्षकों और प्रिंसिपलों द्वारा प्रतिदिन ली जा रही कक्षाओं की विस्तृत रिपोर्ट तत्काल उपलब्ध कराने को कहा है साथ ही इसे सर्वोच्च प्राथमिकता में रखने का निर्देश दिया गया है।

वह सबकुछ जो आपके लिए जानना जरूरी है

3 लाख सैलरी वाले नहीं पढ़ाते, 57 हजार वाले पर जिम्मा

उच्च शिक्षा विभाग को मिली शिकायत के अनुसार अंगीभूत महाविद्यालयों और पीजी विभागों में नियमित शिक्षण कार्य नीड बेस्ड असिस्टेंट प्रोफेसर ही कर रहे हैं। ये प्रतिमाह औसतन 64 से अधिक कक्षाएं लेते हैं और इन्हें प्रतिमाह 57,700 रुपए का मानदेय मिलता है। इसके विपरीत स्थाई शिक्षक प्रतिमाह 1 से 3 लाख रुपए तक वेतन उठा रहे हैं, लेकिन न्यूनतम निर्धारित कक्षाएं भी नहीं ले रहे। कई कॉलेजों में प्रिंसिपल तो कक्षा लेना भूल चुके हैं।

निदेशक का पत्र मिलते ही एक्शन में विवि प्रशासन

उच्च शिक्षा निदेशक का पत्र मिलते ही विश्वविद्यालय प्रशासन हरकत में आ गया है। सभी विभागों से शिक्षकों द्वारा ली गई कक्षाओं की विस्तृत रिपोर्ट शीघ्र भेजने को कहा गया है। मामले में एक वरीय शिक्षक ने बताया कि स्थाई शिक्षकों की कक्षा रिपोर्ट तैयार करना आसान नहीं होगा, क्योंकि कई प्रोफेसर व एचओडी ऐसे हैं जो महीने में दो–चार कक्षाएं ही लेते हैं।

भास्कर CLASSIFIED

आवश्यकता

APPOINTMENT

सेल्स /मार्किटिंग

Plywood Industry Based at Punjab Required Site Sales Persons for Haryana State, Experience Preferred, Freshers Welcome. Contact: 81299-69326 , 97281-08032

ऑफिस स्टॉफ

वन विभाग तहसील स्तरीय भर्ती, पद- 1148, प्रभागीय अधिकारी, वृक्षारोपण अधिकारी, फील्ड ऑफिसर, वन सिपाही, क्लर्क, ड्राइवर, योग्यता- (8वीं- ग्रेजुएट) वेतन- (28500- 42500) आवेदनकर्ता- नाम पता, पिनकोड/ WHATTSAPP 7607890065

अन्य

Ex-Army Servicemen Requirement मेजर, कैप्टन, सूबेदार 55000/- हवलदार, सिपाही, कान्स्टेबल , नायक 40000/- ITBP, CRPF, BSF, गनमैन PSO. 32000/- 7837474812

वर्क फ्राम होम

TELECOM 5G कंपनी में (SMS JOB) करके लड़के-लडकिया,गृहणिया घर बैठे कमाए (21500-78500) महीना (लैपटॉप+मोबाइल मुफ़्त) NAME, पता WHATSAPP करे: 8873451196, 7478920046

PROPERTY भास्कर से मैंने बेची अपनी प्रॉपर्टी सही रेट पर

दैनिक भास्कर में प्रॉपर्टी संबंधित विज्ञापन बुकिंग का सबसे सरल माध्यम

BhaskarAd.com

बनाए विज्ञापन बुकिंग आसान

- घर बैठे ऐड बुकिंग
- आसान ऑनलाइन पेमेंट

9772019222

अब आप क्लासीफाइड, वैवाहिकी, शोक संदेश और जाहिर सूचना के विज्ञापन भी सीधे बुक कर सकते हैं

प्रॉपर्टी

PROPERTY

जमीन

नेशनल हाईवे 152 पिहोवा- कैथल रोड़ पर स्थित 16 एकड़ ज़मीन बिकाऊ (तकसीम व कंट्रोल एरिया से बाहर)। मोबाइल 79881-01681

ज्योतिष

ASTROLOGY

ज्योतिष

फीस नहीं ईनाम लूंगा। पंडित रविशंकर (गोल्ड मेडलिस्ट) मनचाहा प्यार/शादी, गृहक्लेश, पति-पत्नी अनबन, सौतन-दुश्मन छुटकारा, प्रेमविवाह। घर बैठे सभी समाधान #7055429792

बिजनेस

BUSINESS

डीलर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर

कृषि आधारित क्षेत्र में निवेश पर सालाना 24% का मुनाफा गारंटी से पाएं व डीलर डिस्ट्रीब्यूटर बनकर अतिरिक्त लाभ कमाए कृपया व्हाट्सएप नंबर पर वार्तालाप के बाद कॉल करें होतवानी रिसाइकलर्स फाउंडेशन मध्य प्रदेश -छत्तीसगढ़ 7974717629

Notice : Ads have not been verified factually and Bhaskar does not stand responsible for the sales propositions.

अभियान

सिद्धांत के बिना अनुभव अंधा होता है, लेकिन अनुभव के बिना सिद्धांत महज बौद्धिक खेल है।
- इमैनुएल कांट

amarujala.com
अमर उजाला

Hindi@mithelesh
■ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

तुम भी इसी हवा में सांस ले रही होगी कहीं,
चलो कुछ तो है एक जैसा हममें...
थूकना, कचरा फेंकना हम चाहते हैं सब
गुनाह माफ हो,
फिर ये उम्मीद भी कि सरकारी अस्पताल
एकदम साफ हो...
सब तजुर्बे नहीं थे,
कुछ गलतियां भी थीं...

पहली बार इन्सुलिन का प्रयोग

1922 में आज के ही दिन चिकित्सा विज्ञान के इतिहास में एक क्रांतिकारी घटना घटी, जब पहली बार इंसुलिन का प्रयोग टाइप-1 डायबिटीज से पीड़ित एक मरीज 14 वर्षीय लियोनार्ड थॉम्पसन के इलाज में किया गया।

झरोखा
11 जनवरी

टाइप-1 डायबिटीज वह बीमारी है, जिसमें पैंक्रियाज पर्याप्त इन्सुलिन नहीं बना पाता है। इससे रक्त में शर्करा का स्तर खतरनाक रूप से बढ़ जाता है। पहली बार इन्सुलिन का इंजेक्शन दिए जाने पर कुछ ही घंटों में लियोनार्ड का ब्लड शुगर काफी घट गया, हालांकि कीटोन्स अधिक बने रहे। 11 दिन बाद जब अधिक शुद्ध इन्सुलिन दिया गया, तो उसका शुगर लेवल सामान्य हो गया और कोई साइड इफेक्ट नहीं दिखा। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का श्रेय सर फ्रेडरिक जी. बैंटिंग को जाता है। जिनके साथ चार्ल्स एच. बेस्ट और प्रोफेसर जॉन मैकलियोड ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बैंटिंग ने पैंक्रियाज में मौजूद आइलेट्स कोशिकाओं के महत्व को समझते हुए इन्सुलिन को शरीर के बाहर निकालने का तरीका विकसित किया। इसके लिए 1923 में बैंटिंग को नोबेल पुरस्कार दिया गया।

■ रमेश सिंह, कुल्लू

मां के साथ की बात ही अलग है...

एक पुरानी तस्वीर में अपने जमाने की मशहूर अभिनेत्री और गायिका सुरैया अपनी मां मलिका बेगम के साथ।

■ राकेश यादव, हिसार

छायानट

रौबदार आवाज और गजब का अभिनय

अपनी रौबदार आवाज और अलग पहचान वाले अभिनय के लिए मशहूर अभिनेता सईद जाफरी का नाम भारतीय सिनेमा के यादगार कलाकारों में शुमार है। भले ही वे आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका अभिनय आज भी लोगों के दिलों पर छाया हुआ है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद और लखनऊ में हुई, जहां से उनमें साहित्य और रंगमंच के प्रति गहरी रुचि जगी। अपने कैरिअर की शुरुआत उन्होंने अमेरिका में रेडियो से की और बाद में नाटकों में सक्रिय हुए। भारत लौटकर उन्होंने दिल्ली के यूनिटी थिएटर से अभिनय की औपचारिक शुरुआत की, जहां उनके नाटकों को खूब सराहना मिली। दिल्ली में काम करने के बाद वे लंदन चले गए और वहां पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा किया। लंदन में रहते हुए उन्हें ब्रिटिश फिल्मों और धारावाहिकों में काम करने का अवसर मिला। सईद जाफरी ने भारत में 'शतरंज के खिलाड़ी', 'गांधी', 'मासूम', 'मंडी', 'त्रिमूर्ति' और 'दिल' जैसी चर्चित फिल्मों में यादगार भूमिकाएं निभाईं। अपने फिल्मी कैरिअर में उन्होंने पिता, दादा, खलनायक और चरित्र अभिनेता जैसे विविध किरदारों को बखूबी निभाया।

■ विवेक शर्मा, जम्मू

संस्कृति या सभ्यता के विकास के लिए ज्ञान चाहिए। ज्ञान किताबों से भी मिलता है। तभी तो पुस्तकों को बदलाव का सारथी माना जाता है। विश्व पुस्तक मेले में आपको ऐसी ढेर सारी किताबें मिल सकती हैं।

पुस्तकें तो बदलाव का इंजन हैं

जिंदगी में किताबों का महत्व

अमेरिकी इतिहासकार बारबरा डब्ल्यू तुचमन ने कहा है कि पुस्तकें सभ्यता की वाहक होती हैं। इनके बिना इतिहास मौन है, साहित्य गूंगा, विज्ञान अपंग, विचार और अटकलें स्थिर हैं। पुस्तकें परिवर्तन का इंजन होती हैं। यह दुनिया की खिड़की और समय के समुद्र में खड़ा प्रकाश स्तंभ है। देश की राजधानी दिल्ली में कल यानी 10 जनवरी से विश्व पुस्तक मेले का आयोजन शुरू हो चुका है। यह मेला 18 जनवरी तक चलेगा।

इस पुस्तक मेले में वैसे तो हर वर्ग के लोगों को जाना चाहिए लेकिन खासतौर पर युवा वर्ग को इसमें जरूरी रूचि लेनी चाहिए, हो सकता है इस पुस्तक मेले में आपको कई ऐसी पुस्तकें मिल जाएं, जो आपके कॅरिअर के लिए मार्गदर्शक बन जाएं। इस मेले में विभिन्न प्रकाशकों द्वारा बुक स्टॉल लगाए जाएंगे। जिनमें विद्यार्थियों को परीक्षा तैयारी करने से संबंधित पुस्तकें भी होंगी।

चिट्ठी 1

आज इंटरनेट का जमाना है। सारी सामग्री वहां उपलब्ध है, बावजूद इसके पुस्तकों का बहुत महत्व है। खासतौर पर धर्म, संस्कृति और अन्य प्राचीन इतिहास से संबंधित जितनी जानकारी हमें पुस्तकों से मिल सकती है, उतनी शायद इंटरनेट पर न प्राप्त हो पाए। इतिहास की पुस्तकों में उन देशभक्तों को भी जगह दी जानी चाहिए, जिन्होंने निस्वार्थ भाव से अपना सब कुछ देश के लिए न्योछावर कर दिया था। देश को आजाद कराने वाले ऐसे गुमनाम चेहरे भी हैं, जिनका कहीं कोई जिक्र नहीं मिलता। इतिहास की पुरानी किताबों से उनके बारे में जानकारी मिल सकती है। शिक्षा का असली मकसद विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास भी होता है। सभी शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों को युवा पीढ़ी को धार्मिक, देशभक्ति और अन्य प्रेरक पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। और स्कूली पाठ्यक्रम में जो भी इससे संबंधित विषय हैं उन्हें भी गंभीरतापूर्वक पढ़ाएं, ताकि विद्यार्थियों में नैतिकता और मानवता की भावना ज्यादा से ज्यादा बढ़े। विश्व पुस्तक मेला पाठक संस्कृति को मजबूत करता है।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

पशुओं को पालने में भी दिखावा

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों को लेकर कुछ निर्देश दिए हैं, जिनमें राष्ट्रीय राजमार्ग, सार्वजनिक स्थानों जैसे स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, बस स्टैंडों और रेलवे स्टेशनों के परिसर से आवारा कुत्तों को हटाने और उन्हें टीकाकरण और नसबंदी के बाद नामित आश्रय गृह में भेजने का आदेश दिए गए हैं। मुख्य रूप से सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों द्वारा बच्चों, और आम नागरिकों को काटने की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए ये निर्देश दिए हैं। यह भी सत्य है कि जानवरों के अचानक सड़क पर आ जाने से दुर्घटनाएं हो जाती हैं। हालांकि भारतीयों में जानवरों के प्रति संवेदनशीलता और दया भावना पहले से ही बहुत गहरी है।

चिट्ठी 2

हां, यह सही है कि कुछ लोग आवारा जानवरों को पालने का दिखावा करके बाद में छोड़ देते हैं, यह गलत है। लेकिन इस विषय को विरोध रूप में देखने के बजाय इसे जागरूकता और जिम्मेदारी के रूप में देखना चाहिए। अब बहुत से लोग स्ट्रीट डॉग्स को अपनाने लगे हैं। एनजीओ और एनिमल वेलफेयर ग्रुप्स इस दिशा में अच्छा काम कर रहे हैं। जरूरत है कि हम जिम्मेदारी लेकर पशु को केवल ट्रेंड फॉलो करने की जगह सच में उनकी देखभाल करें। अगर हम किसी जानवर को पालते हैं, तो उसे जिंदगीभर निभाने की जिम्मेदारी भी लेनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट का आदेश सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और मनुष्यों और पशुओं दोनों के हितों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

■ लक्ष्मण पुंडीर, श्रीनगर गढ़वाल

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

बरेली से सीमा गुप्ता, अमरोहा से डॉ. महताब अमरोहवी, लखीमपुर खीरी से सुरेश सौरभ, मेरठ से डॉ. नरेन्द्र टोंक, फिरोजाबाद से शैलेंद्र कुमार चतुर्वेदी, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, दिल्ली से योगेश कुमार गोयल, गौतम बुद्ध नगर से रत्नेश सिंह, सूरत से कांतिलाल मंडोत, उज्जैन से हेमा हरि उपाध्याय, देवास से हरिप्रसाद चौरसिया, रायपुर से संजीव ठाकुर।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

लंगूर और समाज बंधन या विश्वास

मेरठ में नागरिकों को बंदरों के आतंक से छुटकारा दिलाने के लिए एक अनोखी पहल की गई।

उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद की सर्वोदय कॉलोनी में वर्षों पहले बंदरों का आतंक आम जनजीवन के लिए गंभीर समस्या बन गया था। बच्चों का बाहर खेलना कठिन, बुजुर्गों का छत पर जाना जोखिमपूर्ण और घरों की खिड़कियां हर समय भय से बंद रहने लगी थीं। ऐसे में कुछ जागरूक नागरिकों- सतीश शर्मा और विशाल चौधरी ने प्रशासनिक प्रतीक्षा के बजाय स्थायी और मानवीय समाधान खोजने का प्रयास किया। उन्होंने लंगूर की व्यवस्था करवाई। लंगूर को किसी क्रूरता या उपेक्षा के साथ नहीं, बल्कि सुरक्षित आवरण, नियमित दाना-पानी और खुले पार्क में सम्मानपूर्वक रखा गया। परिणाम आश्चर्यजनक थे। कुछ ही दिनों में बंदरों का आतंक समाप्त हो गया और कॉलोनी का जीवन पुनः सामान्य हो गया। समय बीतता गया। वर्षों तक लंगूर उसी स्थान, उसी व्यवस्था और उन्हीं लोगों के बीच रहा। वह केवल वहां रखा नहीं गया था, बल्कि स्वीकृत, संरक्षित और अपनाया गया था। परंतु बाहर से देखने वालों को यह दृश्य भिन्न लगा। कुछ स्थानीय और कुछ बाहरी लोगों ने बिना पूरी जानकारी के यह मान लिया कि लंगूर को 'बंधक' बनाकर रखा गया है। करुणा के आवेग में या शायद अधूरी समझ के कारण, किसी ने एक रात उसकी रस्सी काट दी और यह प्रचारित किया कि 'लंगूर को आजादी मिल गई।' लेकिन प्रकृति ने स्वयं उत्तर दिया।

दो दिन बाद वही लंगूर स्वेच्छा से लौट आया, उसी पार्क में, उसी स्थान पर, उन्हीं लोगों के बीच। न कोई विवशता थी, न कोई मजबूरी। यह वापसी इस बात का प्रमाण थी कि वह व्यवस्था बंधन नहीं थी, बल्कि आपसी भरोसे और सामंजस्य की परिणति थी। सर्वोदय कॉलोनी का लंगूर हमें यह सिखाता है कि आजादी का अर्थ केवल खुले आकाश में होना नहीं, बल्कि वहां होना है, जहां सम्मान, सुरक्षा और संतुलन मिले। यह घटना केवल एक लंगूर की नहीं, बल्कि हमारे समाज के निर्णयों, विरोधों और समझ की परिपक्वता की कसौटी है।

■ हंसराज हंस

नेतृत्व विवाद के बीच में जनता और शहर

सिद्धरमैया के दूसरे मुख्यमंत्रित्व काल में शासन की कहानी भटकाव, भ्रम और तीव्र गुटबाजी से भरी रही है। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के बीच के सत्ता संघर्ष में सरकार का प्रशासनिक प्रदर्शन निराशाजनक लगता है।

हाल के दिनों में मेरे गृह राज्य कर्नाटक के समाचार पत्रों में राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के बीच सत्ता संघर्ष की कई खबरें प्रकाशित हुईं। उपमुख्यमंत्री के समर्थकों का दावा है कि मई 2023 में जब कांग्रेस ने सत्ता में वापसी की, तो पार्टी हाईकमान ने कहा था कि सिद्धरमैया पहले ढाई साल तक मुख्यमंत्री के रूप में कार्य करेंगे, उसके बाद डीके शिवकुमार उनका पदभार संभालेंगे। सिद्धरमैया के समर्थक इस बात का खंडन करते हुए कहते हैं कि उनका नेता पूरे पांच साल तक सत्ता में रहेगा।

यह लेख नेतृत्व विवाद से आगे बढ़कर कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के समग्र प्रदर्शन का विश्लेषण करता है। अगर पिछले विधानसभा चुनाव से पहले के महीनों को याद करें, तो उस समय समाचारों में हिजाब, हलाल और लव जेहाद जैसे मुद्दे छाए हुए थे। तब सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी हमेशा की तरह ध्रुवीकरण को हवा देकर दोबारा चुनाव जीतने की कोशिश कर रही थी। उसका प्रशासनिक प्रदर्शन निराशाजनक रहा था, यह जानते हुए भी, उसे उम्मीद थी कि राज्य के हिंदुओं के बीच अपनी पकड़ मजबूत कर लेगी और दोबारा चुनाव जीत जाएगी।

लेकिन कर्नाटक में यह रणनीति विफल रही। कांग्रेस ने भारी बहुमत से चुनाव जीता और सिद्धरमैया ने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। सांप्रदायिक तनाव में उल्लेखनीय कमी उनकी सरकार के कार्यकाल की एक निर्विवाद विशेषता रही है। राज्य में मुसलमानों की आबादी कुल आबादी का लगभग 13 प्रतिशत है, साथ ही ईसाइयों की भी अच्छी-खासी संख्या है। ये दोनों समुदाय मई 2023 के बाद उससे पहले की तुलना में अपने आपको अधिक सुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

कांग्रेस को सत्ता में आने के लिए पांच वादे करने पड़े। पहला महिलाओं और लड़कियों के लिए मुफ्त बस यात्रा, दूसरा महिला प्रधान परिवारों को नकद हस्तांतरण, तीसरा प्रत्येक परिवार को अतिरिक्त अनाज, चौथा 200 यूनिट मुफ्त बिजली और पांचवां शिक्षित बेरोजगार युवाओं को भत्ता। हालांकि इन योजनाओं पर अभी तक कोई व्यापक शोध अध्ययन नहीं किया गया है कि ये पूरे हुए हैं या नहीं, लेकिन स्वतंत्र पर्यवेक्षकों की रिपोर्ट्स बताती हैं कि सामाजिक सुरक्षा जाल बनाने में इससे कुछ हद तक सफलता मिली होगी।

सापेक्ष सांप्रदायिक शांति और लक्षित कल्याणकारी नीतियां कर्नाटक में सिद्धरमैया सरकार की उपलब्धियां रही हैं। कर्नाटक में कांग्रेस के 31 महीनों के शासन के अन्य सकारात्मक परिणामों की कल्पना करना असंभव तो नहीं है, पर कठिन जरूर है। प्रशासनिक अंतर्विरोध और अक्षमता के संकेत राजधानी बंगलूरू में विशेष रूप से दिखाई देते हैं, जहां सड़कों की बदहाल स्थिति के कारण लगने वाले ट्रैफिक जाम ने शहरवासियों को परेशानी में डाल दिया है। राष्ट्रीय, यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय प्रेस ने भी भारत की आईटी क्रांति का गढ़ माने जाने वाले शहर के ध्वस्त होते बुनियादी ढांचे और पतन से जुड़ी खबरें छापी हैं।

जनता की नाराजगी का सामना करते हुए बंगलूरू के

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

प्रभारी मंत्री और उपमुख्यमंत्री ने शहर के उत्तरी भाग जहां हवाई अड्डा है और दक्षिणी भाग जहां प्रमुख सॉफ्टवेयर और बायोटेक कंपनियां हैं, उन दोनों को एक भूमिगत सुरंग बनाकर जोड़ने का प्रस्ताव दिया है। दावा यह है कि भूमिगत सुरंग के बन जाने से इंजीनियरों और उच्च-स्तरीय कर्मचारियों को आने-जाने में आसानी होगी, साथ ही आम नागरिकों को भी लाभ होगा। भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलूरू में कार्यरत परिवहन विशेषज्ञों का स्पष्ट तौर पर कहना है कि उपमुख्यमंत्री की योजना पूरी तरह से अविवेकी और अव्यावहारिक है, क्योंकि यह शहर की जटिल भू-आकृति को ध्यान में रखे बिना सिर्फ निजी वाहन मालिकों को लाभ पहुंचाने की बात करती है।

इन विशेषज्ञों ने तर्क दिया कि शहर की परिवहन संबंधी समस्याओं को हल करने के लिए बसों के बेड़े का विस्तार करना और उसे मौजूदा मेट्रो प्रणाली के साथ समन्वित करना ज्यादा बेहतर विकल्प होगा। हैरानी की बात यह है कि उपमुख्यमंत्री ने इन विशेषज्ञों से मिलने तक से इनकार कर दिया। अब वे सरकारी खजाने पर भारी बोझ डालते हुए भूमिगत सुरंग बनाने वाली अपनी परियोजना को ही आगे बढ़ाने की योजना बना रहे हैं।

शिवकुमार की राजनीति महत्वाकांक्षी और जल्दबाजी की है, जबकि सिद्धरमैया, जिन्हें कभी जनसमर्थन से अधिकार प्राप्त था, अब वे अपने पद को बरकरार रखने और राज्य के इतिहास में दो पूर्ण कार्यकाल पूरे करने वाले एकमात्र मुख्यमंत्री बनने की चिंता में डूबे हुए मालूम पड़ते हैं। दोनों नेताओं की आपसी खींचतान ने राज्य के शासन को काफी प्रभावित किया है। राष्ट्रीय नेतृत्व की अक्षमता के कारण कर्नाटक कांग्रेस की समस्याएं और भी बढ़ गई हैं। इसका कारण सत्ता के कई केंद्र होना है। मल्लिकार्जुन खरगे तकनीकी रूप से कांग्रेस के अध्यक्ष हैं और क्योंकि वे कर्नाटक से हैं, तो यह उम्मीद की जा सकती है कि मुख्यमंत्री को लेकर आलाकमान के सामने उनकी निर्णायक भूमिका होगी। हालांकि खरगे सोनिया और राहुल गांधी के प्रति बेहद विनम्र हैं, दूसरी तरफ ऐसा लगता है कि प्रियंका गांधी भी अपनी बात मनवाना चाहती हैं। इस तरह से देखा जाए तो नई दिल्ली में सत्ता के चार केंद्र हैं, जहां सिद्धरमैया और शिवकुमार तथा उनके समर्थकों को अपनी बात मनवाने के लिए अपील करनी पड़ती है। अगर यह कहा जाए कि राज्य कांग्रेस की यही स्थिति है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

अगर स्थानीय प्रेस की बात करें तो राज्य के कई महत्वपूर्ण मुद्दों में से किसी को भी मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के बीच के विवाद जितना ध्यान नहीं मिलता है। सचमुच कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि दोनों नेता को भी इसके अलावा किसी और चीज में कोई रुचि ही नहीं है। सिद्धरमैया ने कभी राज्य के लिए एक परिकल्पना की थी, लेकिन वे रास्ते में ही उसे भूल गए। जहां तक शिवकुमार की बात है, मुख्यमंत्री बनने की उनकी प्रबल इच्छा के अलावा, एकमात्र चीज जो उन्हें पसंद है, वह है कुप्रबंधित और महंगी सुरंग परियोजना।

राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास से जुड़े ये बड़े सवाल विपक्ष को जरा भी चिंतित करते हुए नहीं दिखते। भाजपा कर्नाटक में लगातार अधिक संकीर्ण और सांप्रदायिक होती गई है। वह केंद्र में नरेंद्र मोदी और अमित शाह द्वारा तय किए गए रास्ते तथा उत्तर प्रदेश में आदित्यनाथ जैसे प्रभावशाली मुख्यमंत्रियों के उदाहरण का अनुसरण कर रही है। कर्नाटक के मतदाताओं के सामने भाजपा के पास कोई सकारात्मक दृष्टि या स्पष्ट कार्यक्रम नहीं है। जहां तक जनता दल (सेक्युलर) का सवाल है, वह केवल एचडी देवगौड़ा और उनके वंशजों के निजी हितों को आगे बढ़ाने का माध्यम बनकर रह गया है।

2013 से 2018 के बीच अपने पहले कार्यकाल में सिद्धरमैया ने एक स्थिर और अपेक्षाकृत सक्षम प्रशासन प्रदान किया था, लेकिन उनके दूसरे कार्यकाल में शासन की कहानी भटकाव, भ्रम और तीव्र गुटबाजी से भरी रही है। मगर इस मामले में, यदि मई 2028 में होने वाले अगले विधानसभा चुनाव में भाजपा-नेतृत्व वाला विपक्ष सत्ता में आता है, तो उसके द्वारा गठित कोई भी सरकार न केवल वर्तमान सरकार जितनी ही अक्षम होगी, बल्कि उससे कहीं अधिक दुर्भावनापूर्ण भी साबित होगी। फिर भी, अगले चुनाव में अभी दो साल से अधिक का समय है। इतना समय कि कर्नाटक कांग्रेस स्वयं को पुनर्गठित कर सके, अपनी प्राथमिकताओं को स्पष्ट कर सके और राज्य तथा उसके नागरिकों को वैसा प्रशासन दे सके, जिसकी वे अपेक्षा करते हैं और जिसके वे हकदार हैं। कांग्रेस ऐसा कर पाएगी या नहीं, यह एक बिल्कुल अलग सवाल है।

सर्दियों की विदाई और वसंत का आगमन

लोहड़ी उत्तर भारत का एक प्रमुख और लोकप्रिय लोकपर्व है, जिसे विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में मकर संक्रांति की पूर्व संध्या पर नई फसल के उत्सव के रूप में मनाया जाता है। सिख तथा हिंदू समुदाय इसे समान उत्साह के साथ मनाते हैं। लोहड़ी को सर्दियों की विदाई और वसंत के स्वागत का प्रतीक भी माना जाता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में यह पर्व लोगों को कुछ सुकून भरे पल देता है, जब परिवार और समाज एक साथ मिलकर उल्लास मनाते हैं। लोहड़ी की सबसे प्रमुख परंपरा अलाव जलाने की है। रात के समय खुले स्थान पर लोग आग जलाकर उसकी परिक्रमा करते हैं और उसमें गुड़, रेवड़ी, मूंगफली, खील, मक्का तथा तिल अर्पित करते हैं। मान्यता है कि यह अग्नि ठंड को दूर करने के साथ-साथ नकारात्मक शक्तियों का भी नाश करती है। किसानों के लिए लोहड़ी का विशेष महत्व है क्योंकि यह रबी फसलों से जुड़ा पर्व है। किसान इस दिन अपनी फसलों, गेहूं, मक्का, सरसों, चना और तिल को अग्नि को समर्पित कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं और इसे अपने नववर्ष की शुरुआत मानते हैं। गन्ने की कटाई के बाद बने गुड़ का उपयोग भी इस पर्व की खास पहचान है।

लोहड़ी पर विशेष
श्वेता गोयल

खुला आकाश

लोहड़ी रबी फसलों की बुआई और कटाई से जुड़ा है। यह एक ऐसा त्योहार है, जो व्यस्तता भरे माहौल में सुकून के कुछ पल लेकर आता है। इसे सर्दियों की विदाई और वसंत के आगमन के संकेत के रूप में भी देखा जाता है।

लोहड़ी को कई स्थानों पर 'तिलोड़ी' भी कहा जाता है, जो तिल और रोड़ी (गुड़) से मिलकर बना शब्द है। पंजाब के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में इसे 'लोई' कहा जाता है। इस पर्व से जुड़ी सबसे लोकप्रिय लोककथा दुल्ला भट्टी की है, जिन्हें पंजाब का नायक माना जाता है। अकबर के शासनकाल में दुल्ला भट्टी गरीबों के मददगार थे और उन्होंने कई हिंदू लड़कियों को गुलामी से बचाकर उनका विवाह कराया। लोहड़ी के गीतों में दुल्ला भट्टी का स्मरण किए बिना यह पर्व अधूरा माना जाता है। लोहड़ी से जुड़ी अन्य धार्मिक और पौराणिक मान्यताएं भी हैं। कुछ लोग इसे संत कबीर की पत्नी लोही से जोड़ते हैं, तो कुछ इसे 'लौह' अर्थात लोहे से उत्पन्न मानते हैं, क्योंकि फसल से बनी रोटियां लोहे के तवे पर सेंकी जाती हैं। पौराणिक कथाओं में इसे होलिका की बहन लोहड़ी, सती के यज्ञ-दहन और राक्षसी लोहिता के वध से भी जोड़ा गया है।

समय के साथ लोहड़ी मनाने के तरीके बदल रहे हैं, जहां पहले मूंगफली और रेवड़ियां बांटी जाती थीं, अब चॉकलेट और गज्जक ने जगह ले ली है। ढोल और भांगड़े की जगह अब डीजे ने ले ली है। फिर भी गांवों में बच्चों का घर-घर जाकर लोहड़ी गीत गाना आज भी इस पर्व की जीवंत परंपरा को बनाए हुए है।

न्यूज डायरी

सांबा में ड्रोन की घुसपैठ खेत में गिराए हथियार

सांबा। जम्मू-कश्मीर में गणतंत्र दिवस से पहले आतंकी षड्यंत्र को अंजाम देने की कोशिश हुई। सांबा में शुक्रवार में आधी रात को पाकिस्तानी घुसे ड्रोन से अंतरराष्ट्रीय सीमा में पांच किलोमीटर अंदर घुसकर हथियार गिराए गए। इन हथियारों को आतंकियों के हाथ लगने से पहले ही सुरक्षाबलों ने इन्हें जब्त कर लिया। सांबा सेक्टर में पिछले एक वर्ष में ड्रोन गोला-बारूद और मादक पदार्थ गिराने की ये चौथी घटना है। संवाद

म्यांमार ले जाए गए 27 भारतीय स्वदेश लौटे

नई दिल्ली। फर्जी नौकरी के वादों के जरिये म्यांमार भेजे गए 27 भारतीय नागरिकों को सुरक्षित भारत वापस लाया गया है। यह राहत कार्रवाई नागरिक उड्डयन मंत्री और श्रीकाकुलम सांसद राम मोहन नायडू के आग्रह के बाद तेज हुई, जिन्होंने विदेश मंत्री एस जयशंकर को पत्र लिखकर त्वरित कूटनीतिक हस्तक्षेप की मांग की थी। इनमें आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और अन्य राज्यों के नागरिक शामिल हैं। एजेंसी

कन्नड़ लेखिका आशा की संदिग्ध परिस्थिति में मौत

बंगलूरू। कन्नड़ साहित्यकार आशा रघु (46) का शनिवार को बंगलूरू के मल्लेश्वरम इलाके में स्थित उनके आवास पर शव मिला। पुलिस ने बताया कि इस संबंध में अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज कर लिया गया है। आशा ने कन्नड़ टेलीविजन धारावाहिकों के लिए संवाद लेखन भी किया था। साहित्य जगत में उनकी पहचान संवेदनशील और सशक्त लेखिका के रूप में थी। दो साल पहले उनके पति का निधन हो गया था। एजेंसी

पुलिस के आपात वाहन चालक ने दोस्तों के साथ युवती से किया दुष्कर्म

कोरबा। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में एक युवती से सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। आरोप है कि पुलिस आपातकालीन प्रतिक्रिया सेवा वाहन-डायल 112 के चालक समेत पांच दोस्तों ने युवती से दरिंदगी की और फिर फरार हो गए। इस सिलसिले में निजी चालक समेत दो आरोपियों को पकड़ लिया गया है जबकि अन्य की तलाश जारी है। एजेंसी

बांग्लादेश के नाम पर मुंह पर लगा टेप

जगद्गुरु रामानंदाचार्य के प्राकट्य उत्सव में शामिल हुए सीएम ने विपक्ष पर साधा निशाना

अमर उजाला ब्यूरो

प्रयागराज। धर्मनिरपेक्षता के नाम का ठेका लेकर चलने वाले जिन लोगों ने हिंदू समाज को तोड़ने में पूरी ताकत लगा दी, उनके मुंह बांग्लादेश के नाम पर बंद हैं। ऐसा लगता है कि उनके मुंह पर किसी ने फेविकोल या टेप लगा दिया है। विपक्ष पर हमलावर सीएम योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को ये बातें माघ मेला स्थित खाक चौक के शिविर में जगद्गुरु रामानंदाचार्य के 726वें प्राकट्य उत्सव में कहीं।

सुबह करीब 10:30 बजे पहुंचे सीएम ने सबसे पहले संगम पर स्नान किया और बंधवा स्थित बड़े हनुमान जी के दर्शन किए। इसके बाद प्राकट्य उत्सव में शामिल हुए। समाज को जोड़ने में रामानंदाचार्य की भूमिका पर चर्चा में विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने रामानंदाचार्य का मूल मंत्र 'जात-पात पूछे ना कोई, हरि को भजे सो हरि का होई' को दोहराया। कहा कि जाति व धर्म के आधार पर विभाजन उसी तरह सर्वनाश का कारण बन जाएगा, जैसा कि बांग्लादेश में हो रहा है। सीएम ने आह्वान किया कि मत व संप्रदाय के आधार पर मत बंटो। भगवान रामानंदाचार्य जी हैं जिन्होंने एक नहीं, द्वादश शिष्य बनाए और अलग-अलग जाति के बनाए।

योगी ने संगम में लगाई डुबकी, बोले-बांटने वालों को कभी पनपने न दें

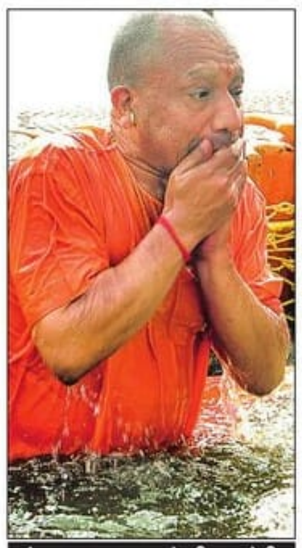

संगम पर स्नान करते सीएम योगी।

पौष पूर्णिमा की तरह पूरी भव्यता से होंगे मेले के सभी प्रमुख स्नान

सीएम ने कहा, पौष पूर्णिमा की तरह आने वाले पांचों प्रमुख स्नान पर्व भी पूरी भव्यता और सुरक्षा के साथ संपन्न कराए जाएंगे। प्रशासन का अनुमान था कि पौष पूर्णिमा पर करीब 15 लाख श्रद्धालु आएंगे लेकिन लगभग 31 लाख श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी में आस्था की डुबकी लगाई।

एकजुट रहे तो आने वाला समय सनातन का होगा

सीएम ने साधु-संतों से कहा कि आपका दायित्व है कि बांटने व तोड़ने वालों को कभी पनपने न दें। कमजोर करने वालों को किसी भी स्थिति में आगे नहीं बढ़ने देना है। अगर हम एकजुट रहे तो आने वाला समय सनातन धर्म का होगा। तब बांग्लादेश में कोई निरीह व दलित हिंदू को काटने का काम नहीं कर पाएगा। सीएम ने कहा कि जो लोग आज भी आपको बांट रहे हैं वे आपके हितैषी नहीं हो सकते। जब सत्ता में थे तो स्वयं अपने परिवार के बारे में सोचते थे। उससे बाहर उनकी दृष्टि नहीं थी। ये नारे देंगे, स्लोगन देंगे पर जब भी मौका मिलेगा, यह वही करेंगे जो पहले किया करते थे। पहचान का संकट होगा, दंगों की आड़ में लोगों को झुलसाने का काम करेंगे। हमें इसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी देनी चाहिए।

सनातम धर्म की ध्वजा और पताका का आरोहण करने वाले मोदी पहले पीएम

सीएम ने कहा कि जब संत समाज एकजुट होकर उद्घोष करता है तो इसका परिणाम भी सामने आता। राम मंदिर निर्माण का इसका उदाहरण है। देश 1947 में आजाद हुआ। 1952 में पहला चुनाव हुआ और तब से देश ने कई पीएम देखे पर रामलला को स्थापित कर नरेंद्र मोदी ने भारत की मूल आत्मा को सम्मान दिलाया। ऐसे में सनातन धर्म की ध्वजा-पताका का आरोहरण करने वाले वह पहले पीएम बने।

सीएम ने कहा कि गंगाजल इतना स्वच्छ और पावन है कि यहां आने वाला हर व्यक्ति दिव्य स्नान का आनंद ले रहा है। उन्होंने पूछा कि आज से आठ साल पहले क्या ऐसा जल मिल पाता था। जब कोई राम भक्त सत्ता में रहता है तो ही दिव्य अवसर मिलता है। हां कि व्यवस्थाओं का नतीजा है कि पौष पूर्णिमा पर अपेक्षा से अधिक 31 लाख श्रद्धालु संगम स्नान के लिए पहुंचे। सीएम ने कहा कि यहां गंगा, यमुना, सरस्वती हैं। साथ ही यहां धर्म, न्याय और ज्ञान भी है। विदेशी आक्रांताओं ने समाज को तोड़ने की साजिश रची थी।

यहां आने वाला हर व्यक्ति ले रहा दिव्य स्नान का आनंद

हिंदुओं पर हमले को लेकर सरकार मौन क्यों : अजय राय

माघ मेला क्षेत्र में पहुंचे कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं की लगातार हत्या हो रही है, उनके घर-मंदिरों पर हमले किए जा रहे हैं पर देश की मोदी सरकार इस गंभीर मुद्दे पर आंखें मूंदे बैठी है। पीएम बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को भारत में विशेष संरक्षण दे रहे हैं।

38 घुसपैठियों को बांग्लादेश किया गया रवाना

2023 में किए गए थे गिरफ्तार, सजा पूरी होने के बाद प्रत्यर्पण प्रक्रिया शुरु

आगरा। विदेशी अधिनियम में सजा पूरी कर चुके 38 बांग्लादेशी नागरिकों को शनिवार को बांग्लादेश रवाना किया गया। सभी को जिला जेल से पश्चिम बंगाल भेजा गया। वहां बीएसएफ और आईबी के सुपुर्द किया जाएगा। 13 जनवरी को बांग्लादेश भेजा जाएगा।

डीसीपी सिटी सैयद अली अब्बास ने बताया कि फरवरी 2023 में पुलिस ने सिकंदरा की आवास विकास कॉलोनी में झोपड़ी बनाकर रहने वाले 27 अवैध रूप से भारत आए बांग्लादेशियों को पकड़ा था। इनमें 15 पुरुष और 12 महिलाएं थीं। इनके साथ आठ नाबालिग और तीन बच्चे भी थे। न्यायालय ने विदेशी अधिनियम के तहत 27 लोगों (महिला-पुरुषों) को तीन वर्ष की सजा सुनाई थी। सजा पूरी होने के बाद स को वापस भेजने की प्रक्रिया शुरू की गई। शनिवार को कड़ी सुरक्षा में सभी 38 बांग्लादेशियों को बस से पश्चिमी बंगाल के लिए रवाना किया गया। संवाद

मेरठ से अपहृत किशोरी हरिद्वार में मिली, आरोपी पारस भी गिरफ्तार

पुलिस से धक्कामुक्की, विपक्षी नेताओं का धरना-प्रदर्शन

धरने पर बैठे ग्रामीण।

सरधना (मेरठ)। कपसाड़ कांड में तीन दिनों से जारी तनाव के बीच शनिवार देर शाम पुलिस ने मामले के मुख्य आरोपी पारस सोम को हरिद्वार से गिरफ्तार कर अपहृत किशोरी रूबी को ढूंढ लिया है। एसएसपी डॉ. विपिन ताडा ने बताया कि पुलिस टीम दोनों को लेकर मेरठ रवाना हो गई है। इससे पूर्व शनिवार को दिनभर घमासान हुआ।

विपक्षी नेताओं ने कपसाड़ कूच की कोशिश की लेकिन पुलिस ने किसी को भी गांव में प्रवेश नहीं करने दिया। इससे नाराज होकर सपा सांसद रामजी लाल, आसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद चंद्रशेखर आजाद और विधायक अतुल प्रधान धरने पर बैठ गए। इस दौरान पुलिस और नेताओं के बीच खूब धक्कामुक्की हुई। सरधना थाना क्षेत्र के कपसाड़ में पारस सोम ने साथियों के साथ बृहस्पतिवार को सुनीता की हत्या कर उसकी बेटी रूबी का अपहरण कर लिया था। तीन दिन से इस मामले में विपक्षी दल लगातार सरकार को घेरने में लगे रहे। शनिवार सुबह पुलिस ने सभी सीमाओं को सील कर दिया। संवाद

कपसाड़ गांव में मां की हत्या कर बेटी को किया गया था अगवा

बेहतर शासन कागजों पर नहीं, जनता के जीवन में दिखना चाहिए : साय

छत्तीसगढ़ के सीएम ने ई-प्रगति पोर्टल को किया लॉन्च

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि सुशासन का वास्तविक अर्थ केवल कागजी कार्यवाही नहीं, बल्कि आम जनता के जीवन में आने वाला सकारात्मक बदलाव है। उन्होंने नवा रायपुर में आयोजित मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार 2025-26 समारोह में कहा कि प्रशासन की पहुंच समाज के अंतिम व्यक्ति तक होनी चाहिए, ताकि उन्हें बुनियादी सुविधाओं के लिए भटकना न पड़े।

ई-प्रगति पोर्टल की शुरुआत के अवसर पर मुख्यमंत्री ने ई-प्रगति पोर्टल को लॉन्च किया। अब 25 करोड़ रुपये से अधिक की सभी निर्माण परियोजनाओं की सीधी मॉनिटरिंग मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) से होगी। इससे बजट, भुगतान और कार्य की गुणवत्ता में पारदर्शिता सुनिश्चित होगी। उन्होंने नवाचार को बढ़ावा देने के लिए पहल और प्रेरणा योजनाओं की घोषणा भी की। ब्यूरो

5 विभाग व 5 जिले पुरस्कृत

सुशासन और तकनीकी नवाचारों के लिए 5 विभागों और 5 जिलों को मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कृत जिलों में दंतेवाड़ा (ब्लॉकचेन भूमि रिकॉर्ड), जशपुर (निर्माण निगरानी), मोहला-मानपुर (कुपोषण मुक्ति), गरियाबंद (हाथी अलर्ट ऐप) और नारायणपुर (सुरक्षा ड्रोन) शामिल हैं।

लेह एयरपोर्ट बनेगा देश का पहला भू-तापीय और सौर ऊर्जा संचालित हवाई अड्डा

लेह। लेह के कुशोक बकुला रिनपोछे हवाई हवाई अड्डे का बड़े पैमाने पर नवीनीकरण किया जा रहा है। इससे यह भारत का पहला हवाई अड्डा बन जाएगा जो भूतापीय और सौर ऊर्जा दोनों का उपयोग करेगा।

नए घरेलू टर्मिनल के जुलाई तक खुलने की उम्मीद है। 640 करोड़ रुपये की इस परियोजना के साथ चार नए विमान पार्किंग वे के लिए अतिरिक्त 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। यह सतत विमानन की दिशा में एक बड़ा मील का पत्थर माना जा रहा है। एयरपोर्ट निदेशक एवं महाप्रबंधक ए. उमाशंकर के अनुसार निर्माण अंतिम चरण में है। यह टर्मिनल भारत की सबसे बड़ी भू-तापीय हीटिंग और कूलिंग प्रणाली से लैस होगा। संवाद

अनिवार्य सेवा शुल्क वसूली पर सीसीपीए सख्त, 27 रेस्तरां पर लगाया जुर्माना

नई दिल्ली। केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने ग्राहकों से अनिवार्य रूप से सेवा शुल्क वसूलने के मामले में देशभर के 27 रेस्तरां के खिलाफ स्वतः संज्ञान लेते हुए कार्रवाई की है। प्राधिकरण ने इन रेस्तरां पर 50,000 रुपये तक का जुर्माना लगाया है और ग्राहकों से वसूली गई सेवा शुल्क राशि वापस करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही, बिलिंग सिस्टम में बदलाव कर डिफॉल्ट सेवा शुल्क हटाने को कहा गया है।

उपभोक्ता मामलों का विभाग के अनुसार, यह कार्रवाई उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की धारा 2(47) के तहत अनुचित व्यापार व्यवहार पाए जाने पर की गई। जांच में सामने आया कि कई रेस्तरां भोजन के बिल में स्वतः 10 प्रतिशत सेवा शुल्क जोड़ रहे थे। शिकायतें राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन पर प्राप्त हुई थीं, जिनके साथ बिलों की प्रतियां भी संलग्न थीं। पटना के कैफे ब्लू बॉटल के मामले में सीसीपीए ने उपभोक्ता को पूरा सेवा शुल्क लौटाने, यह प्रथा तुरंत बंद करने और 30,000 रुपये का जुर्माना भरने का आदेश दिया। वहीं, मुंबई के चाइना गेट रेस्तरां प्राइवेट लिमिटेड (बोरा बोरा) ने सुनवाई के दौरान राशि लौटाई, लेकिन उसे 50,000 रुपये का जुर्माना भरने और बिलिंग सॉफ्टवेयर में संशोधन करने को कहा गया। ब्यूरो

प्राधिकरण ने ग्राहकों से वसूली गई सेवा शुल्क राशि वापस करने के दिए निर्देश

सिक्किम में विदेशी पर्यटकों के लिए ऑनलाइन परमिट अनिवार्य

गंगटोक। सिक्किम सरकार ने राज्य के संरक्षित और प्रतिबंधित क्षेत्रों में आने वाले विदेशी नागरिकों के लिए भौतिक परमिट जारी करना औपचारिक रूप से बंद कर दिया है। अब विदेशी सैलानियों को के लिए ऑनलाइन परमिट लेना अनिवार्य कर दिया है।

पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग की ओर से इस संबंध में एक आधिकारिक सूचना जारी की गई है। इसमें राज्य सरकार ने कहा कि यह निर्णय गृह मंत्रालय के सख्त निर्देशों के अनुपालन में लिया गया है। निर्देश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी भी परिस्थिति में संरक्षित क्षेत्र परमिट या प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट भौतिक रूप में जारी नहीं किया जाएगा।संशोधित दिशा-निर्देशों के अनुसार, विदेशी नागरिकों को पूर्वी सिक्किम में केवल त्सोमगो (चांगू) झील और उत्तरी सिक्किम में युमथांग घाटी के साथ-साथ जीरो प्वाइंट पर जाने की अनुमति होगी। वह भी तब जब वह नामित परमिट सेल के माध्यम से आवश्यक ऑनलाइन परमिट प्राप्त करें। एजेंसी

दिल्ली-एनसीआर

नोएडा मेट्रो के कैलेंडर पर विवाद के बाद कार्यकारी निदेशक को हटाया

कैलेंडर में प्रदेश या केंद्र सरकार के जनप्रतिनिधि की फोटो नहीं होने पर उठे सवाल

नोएडा। नए साल 2026 के लिए छपवाया गया नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (एनएमआरसी) का कैलेंडर विवादों में आ गया है। कैलेंडर में अप्रैल के पन्ने पर प्रबंध निदेशक (एमडी) डॉ. लोकेश एम और जुलाई के पन्ने पर कार्यकारी निदेशक महेंद्र प्रसाद की दो-दो तस्वीरें प्रकाशित की गई हैं। पूरे कैलेंडर में प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री या किसी अन्य जनप्रतिनिधि की तस्वीर या नाम शामिल नहीं किया गया है।

सवाल उठने के बाद अधिकारियों ने कहा कि कैलेंडर उनकी जानकारी और मंजूरी के बिना छपवाया गया। एमडी ने इस मामले में संबंधित अधिकारियों से स्पष्टीकरण मांगा है। विवाद के बीच कार्यकारी निदेशक महेंद्र प्रसाद को पद से हटाकर उनकी जगह नोएडा प्राधिकरण के एसीईओ कृष्णा करुणेश को कार्यकारी निदेशक नियुक्त कर दिया गया है। सूत्रों के अनुसार यह कैलेंडर शासन और मंत्रालय दोनों जगह भेजा गया था। ब्यूरो

अप्रैल के पन्ने पर डॉ. लोकेश एम की तस्वीर।

जुलाई के पन्ने पर महेंद्र प्रसाद की तस्वीरें। स्रोत: सोशल मीडिया

केंद्र और राज्य सरकार का संयुक्त उपक्रम है एमआरसी

नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन केंद्र और राज्य सरकार का संयुक्त उपक्रम है। केंद्र में परियोजनाओं की मंजूरी आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय और कैबिनेट स्तर से होती है। राज्य में औद्योगिक विकास विभाग और कैबिनेट स्तर से मंजूरी दी जाती है। तय व्यवस्था के अनुसार नोएडा प्राधिकरण का सीईओ ही एनएमआरसी का प्रबंध निदेशक होता है।

चार तस्वीरों से शुरू हुआ विवाद

पद से हटाए गए कार्यकारी निदेशक आईएएस महेंद्र प्रसाद नोएडा प्राधिकरण में ओएसडी के पद पर तैनात हैं। उनका जन्मदिन 5 जुलाई को पड़ता है। कैलेंडर में जुलाई के पन्ने पर उनकी दो तस्वीरें छपी हैं। एक में वह सेक्टर-29 स्थित एनएमआरसी कार्यालय के कॉरिडोर में टहलते हुए और दूसरी में बैठक को संबोधित करते हुए। वहीं एमडी डॉ. लोकेश एम का जन्मदिन अप्रैल में आता है। कैलेंडर में उस माह के पन्ने पर उनकी एक तस्वीर सितार बजाते हुए और दूसरी बैठक में संबोधन करते हुए दिखाई गई है।

बदलाव को प्राधिकरण कार्यहित में बताया

कार्यकारी निदेशक पद पर फेरबदल का आदेश प्राधिकरण के कार्मिक विभाग की प्रभारी एसीईओ वंदना त्रिपाठी ने जारी किया। आदेश में लिखा गया है कि प्राधिकरण कार्यहित में ओएसडी महेंद्र प्रसाद की जगह एसीईओ कृष्णा करुणेश को कार्यकारी निदेशक नामित किया जाता है।

यूपी और हरियाणा में घर खरीदारों से धोखाधड़ी के मामले में अहम कार्रवाई

ईडी ने 585 करोड़ के भूखंड किए अटैच

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने घर खरीदारों से धोखाधड़ी के आरोप में दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में स्थित रियल एस्टेट कंपनी के खिलाफ दर्ज मनी लॉन्ड्रिंग मामले में हरियाणा और उत्तर प्रदेश में 585 करोड़ रुपये की सैकड़ों एकड़ जमीन अटैच की है।

एजेंसी ने एक बयान में कहा कि एडेल लैंडमार्क्स लि. और इसके प्रवर्तक हेम सिंह भड़ाना व सुमित भड़ाना के खिलाफ दर्ज मामले के तहत यह कार्रवाई की गई है। शुक्रवार को धनशोधन निवारण अधिनियम के तहत हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद, पलवल और बहादुरगढ़ व मेरठ और गाजियाबाद में स्थित 340 एकड़ भूमि की अस्थायी कुर्की का आदेश जारी किया गया था। मनी लॉन्ड्रिंग का यह मामला हरियाणा और दिल्ली पुलिस की ओर से कंपनी और उसके प्रवर्तकों के खिलाफ दर्ज 74 एफआईआर और आरोपपत्रों से जुड़ा है। इसमें उन पर 12-19 साल की देरी के बाद भी वादे के अनुसार फ्लैट और यूनिट्स सौंपने में विफल रहकर सैकड़ों घर खरीदारों को धोखा देने का आरोप लगाया गया है। एजेंसी

4,771 खरीदारों से जुटाए 1,075 करोड़

ईडी ने बताया कि रियल एस्टेट कंपनी ने हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद और पलवल में कई आवासीय ग्रुप हाउसिंग प्रोजेक्ट लॉन्च किए और आठ प्रोजेक्ट्स कॉस्मोकोर्ट, कॉस्मोसिटी-1, कॉस्मोसिटी-3, स्काईविले, रेडवुड रेजिडेंसी, एरा ग्रीन वर्ल्ड, एरा डिवाइन कोर्ट और एडेल डिवाइन कोर्ट से 4,771 लोगों से एडवांस बुकिंग अमाउंट के तौर पर 1,075 करोड़ रुपये इकट्ठा किए। एजेंसी ने कहा कि 2006-2012 में शुरू किए गए ये प्रोजेक्ट आज तक अधूरे हैं।

पूर्व सीएमडी ने दायर की जमानत याचिका

नई दिल्ली। जेपी इंफ्राटेक लि. के पूर्व सीएमडी मनोज गौर ने मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में पटियाला हाउस कोर्ट में रेगुलर जमानत याचिका दायर की है। गौर को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 13 नवंबर, 2025 को गिरफ्तार किया था। वह 18 नवंबर, 2025 से न्यायिक हिरासत में हैं। याचिका में उनके वकील ने कहा कि 61 साल के गौर की गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हैं और उनकी हिरासत लंबी और अनुपातहीन है। ब्यूरो

कार सवार एएसआई ने वाहनों को मारी टक्कर

मोदीनगर। निवाड़ी मार्ग पर मोदीनगर थाना क्षेत्र स्थित फायर स्टेशन के समीप शनिवार सुबह शराब के नशे में धुत कार सवार दिल्ली पुलिस के एएसआई ने तीन वाहनों को टक्कर मार दी। हादसे में एक युवती समेत छह लोग घायल हो गए। दो घायलों को गंभीर हालत के चलते मेरठ रेफर कर दिया गया। भीड़ ने आरोपी एएसआई सतेंद्र मलिक को पीटने के बाद पुलिस के हवाले कर दिया।

मोदीनगर के किदवईनगर क्षेत्र में रहने वाले सब्बल और मोहम्मद असलम मित्र हैं। सब्बल और असलम सुबह करीब 11 बजे निवाड़ी मार्ग पर बाइक ठीक कराने गए थे। जैसे ही वह फायर स्टेशन के सामने पहुंचे तभी तेज रफ्तार कार ने जोरदार टक्कर मार दी। इसके बाद बेकाबू कार बाइक और ई-रिक्शा को टक्कर मारते हुए नाले की दीवार से जा टकराई।

हादसे में सब्बल और मोहम्मद असलम के अलावा कामरान, पवन व ई-रिक्शा सवार युवक-युवती घायल हो गए। मौके पर चीख-पुकार मच गई। बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। निवाड़ी मार्ग पर जाम की स्थिति बन गई। किसी तरह घायलों को उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया। संवाद

मौसम

अगले 24 से 48 घंटे में बदले का मौसम का मिजाज, मौसम विभाग का पूर्वानुमान- देशभर में व्यापक फेरबदल के आसार नजर आ रहे

एनसीआर समेत कई राज्यों में तेज हवा के साथ बारिश के आसार

अमर उजाला नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के ताजा पूर्वानुमान के मुताबिक, अगले 24 से 48 घंटे देश के बड़े हिस्से में मौसम के मिजाज में बड़ा बदलाव आने की संभावना है। उत्तर भारत में जहां कड़ाके की सर्दी, घना कोहरा और शीतलहर का असर और तेज होगा, वहीं दक्षिण और तटीय राज्यों में भारी बारिश, तेज हवाओं और समुद्री उथल-पुथल का खतरा जताया गया है।

दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और मध्य भारत के कई हिस्सों में यह पूर्वानुमान खास तौर पर अहम माना जा रहा है। आईएमडी के अनुसार, दिल्ली-एनसीआर, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बादलों की आवाजाही के बीच हल्की बारिश या बूंदाबांदी की संभावना बनी हुई है। घना से अति घना कोहरा छाए रहने के कारण विजिबिलिटी बेहद कम रहेगी, जिससे रेल और हवाई सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं। बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में शीतलहर के साथ कोल्ड डे जैसी स्थिति का अलर्ट जारी किया गया है। कई इलाकों में दिन का तापमान सामान्य से काफी नीचे रहने का अनुमान है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर के ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी का सिलसिला जारी रहने की संभावना है। कश्मीर घाटी में तापमान शून्य से नीचे बना रह सकता है, जिससे सड़कों पर जमी बर्फ और पानी जमने की स्थिति बनी रहेगी। 40 दिनों की अवधि वाले चिल्लेकलां के चलते सर्दी और तीखी होने का अनुमान है।

मध्य भारत : शीतलहर और कोहरे की दोहरी मार : मध्य प्रदेश और आसपास के राज्यों में घना कोहरा, शीतलहर और दिन में ठंडक बनी रहने की संभावना है। कई जिलों में सुबह और रात के समय विजिबिलिटी बेहद कम रह सकती है। ने चेतावनी दी है कि 10 और 11 जनवरी को बंगाल की खाड़ी के ऊपर डीप डिप्रेशन बनने की आशंका है। इसके असर से तमिलनाडु में आंधी-तूफान के साथ मूसलाधार बारिश हो सकती है। कर्नाटक, केरल, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के तटीय हिस्सों में भी हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है। तमिलनाडु और आसपास के तटीय जिलों में 55 से 65 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं, जबकि समुद्र में ऊंची लहरें उठने का अनुमान है। मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी गई है।

नई दिल्ली में शीत लहर के कारण कोहरे से ढंका कर्तव्य पथ। एजेंसी

एनसीआर में ठंड के साथ प्रदूषण की चिंता

दिल्ली में हल्की बारिश के बाद रातें और अधिक सर्द होने लगी हैं। न्यूनतम तापमान 4 से 6 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है, जबकि कोहरे और कम हवा की गति के कारण अगले कुछ दिनों में वायु गुणवत्ता सूचकांक के बिगड़ने की भी आशंका जताई गई है।

मौसम विभाग की सलाह : *आईएमडी ने लोगों को सतर्क रहने, अनावश्यक यात्रा से बचने और मौसम से जुड़े ताजा अपडेट पर नजर रखने की अपील की है। विशेषकर पहाड़ी और तटीय इलाकों में रहने वाले लोगों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की सलाह दी गई है।*

प्रमुख राज्यवार अलर्ट : *दिल्ली-एनसीआर, यूपी, पंजाब, हरियाणा: घना कोहरा, शीतलहर, कोल्ड डे।*

भारत क्लाइमेट फोरम 2026 में टेरी ने सौर पैनल विनिर्माण पर जारी की रिपोर्ट

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत क्लाइमेट फोरम (बीसीएफ) 2026 में द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) ने भारत की पीवी मैन्युफैक्चरिंग और इसके रणनीतिक मोड़ बिंदु शीर्षक से एक अहम रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट भारत की सौर ऊर्जा विनिर्माण क्षमता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को मजबूत करने के लिए नीति, वित्त और औद्योगिक हस्तक्षेपों की रूपरेखा पेश करती है।

टेरी की महानिदेशक डॉ. विभा धवन ने कहा कि भारत में सौर ऊर्जा की कुल क्षमता 10,800 गीगावाट से अधिक है और अब सवाल ये है कि क्या देश विनिर्माण, तकनीक और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं के जरिए इसका पूरा लाभ उठा सकता है।

इस दौरान नई और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के सचिव संतोष सारंगी ने बताया कि भारत ने 2014 में केवल 2.63 गीगावाट सौर क्षमता से बढ़कर अब 134 गीगावाट पार कर लिया है। उन्होंने कहा कि लक्ष्य न केवल क्षमता बढ़ाना, बल्कि आत्मनिर्भर और लचीले सौर ऊर्जा इकोसिस्टम का निर्माण करना है।

रिपोर्ट में कहा गया कि भारत ने मॉड्यूल विनिर्माण में ताकत हासिल की है, लेकिन पॉलीसिलिकॉन और वेफर्स का अधिकतर आयात करता है। इसके लिए अपस्ट्रीम निवेश, घरेलू उपकरण निर्माण और अनुसंधान पर ध्यान देना जरूरी है। किफायती और मिश्रित वित्त, ग्रीन बॉन्ड, विकास वित्त संस्थानों और जोखिम-शमन उपकरणों से इसे बढ़ावा दिया जा सकता है। फोरम में केंद्रीय मंत्री और वैश्विक नेता शामिल हुए।

भारत में सौर ऊर्जा की कुल क्षमता 10,800 गीगावाट से अधिक है

डोनाल्ड ट्रंप को अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की भी कोई 'परवाह' नहीं। साल भर पहले तक यह सब कुछ अकल्पनीय था। हम अकल्पनीयता को असलियत बनते देखने को अभिशप्त हैं। ऐसे में, कोई यह दावा नहीं कर सकता कि ट्रंप का अगला कदम क्या होगा और उस पर दुनिया की प्रतिक्रिया कैसी होगी? बिला शक हम संघर्षों से एक महासंघर्ष की ओर खिसक रहे हैं।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

नई चुनौतियों के दौर में भारत

शशि शेखर

'वेनेजुएला मेरी हुकूमत में है और जल्द हम ग्रीनलैंड पर कब्जा करेंगे। अमेरिका के लिए यह जरूरी है।' यह 16वीं शताब्दी के किसी तानाशाह की शेखी नहीं, बल्कि खुद को लोकतंत्र का मदीना बताने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का बयान है। वह कनाडा को भी अमेरिका का 51वां राज्य बताते हैं, तो क्या वह वहां भी फौजी दस्ते भेजेंगे? क्या यह इतना आसान है?

इन सवालों के जवाब पिछले हफ्ते की कुछ घटनाओं में छिपे हैं। पहले अन्य देशों की प्रतिक्रिया पर गौर फरमा देखिए।

वेनेजुएला पर हमले के तत्काल बाद बीजिंग ने कई अमेरिकी उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिए और उसके बैंकों ने डॉलर की जगह युआन में तिजारत करने की पेशकश बढ़ा दी। जिनपिंग की हुकूमत ने चेतावनी के अंदाज में हालात न सुधरने पर अमेरिकी कंपनियों पर बंदिशें बढ़ाने की मंशा बुलंद की, नतीजतन चीन के साथ व्यापार करने वाली कंपनियों के शेयर 'वॉल स्ट्रीट' में लड़खड़ा गए। उधर, रूस ने अपने बेहद घातक हथियारों की नई तैनाती शुरू कर दी। उसने अपनी सबसे ताकतवर परमाणु पनडुब्बी को वेनेजुएला के पास तैनात कर दिया है।

आजकल

इसी बीच अमेरिका के कुछ शहरों में हैकर्स ने विद्युत, संचार और यातायात संसाधनों के साथ अस्पतालों पर हमला बोलकर उनको कुछ देर के लिए ठप कर दिया। अमेरिकी इसे चीन की करतूत बताते हैं, हालांकि बीजिंग ने इससे इनकार किया है। ध्यान दें, हैकर्स ने महज नागरिक सुविधाओं को निशाना बनाया, सैन्य संस्थान नहीं छेड़े। ऐसा इसलिए किया गया, ताकि अमेरिका को सैनिक कार्रवाई का अवसर न मिले। इसके बावजूद जो संदेश दिया जाना था, वह सही स्थान पर पहुंच गया।

सवाल उठता है कि क्या अमेरिका एक साथ इतने मोर्चों पर जूझ सकता है?

अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो से प्रस्तावित मुलाकात से पूर्व डेनिश रक्षा मंत्रालय ने एक सनसनीखेज बयान दिया। रक्षा विभाग के प्रवक्ता के अनुसार, हमने अपने सैनिकों को आदेश दिया है कि वे किसी भी आक्रामक को पहले गोली मारें, फिर सवाल पूछें। इस सबसे बेखबर ट्रंप प्रशासन ग्रीनलैंड वासियों को उनकी संपत्ति के एवज में भारी-भरकम रकम चुकाने की तैयारी कर रहा है। यह प्रस्ताव 'फूट डालो, राज करो' नीति का नया संस्करण है। इसके साथ-साथ पेंटागन ने मंगलवार को रूस का झंडा फहराते दो जलयानों को कब्जे में ले लिया। अमेरिका जताना चाहता है कि हमें रूसी परमाणु पनडुब्बी की कोई परवाह नहीं। वाशिंगटन में चर्चा है कि वेनेजुएला जैसा कुछ क्यूबा या कोलंबिया में हो सकता है।

यही नहीं, एक बिल के जरिये डोनाल्ड ट्रंप इस सप्ताह किसी भी देश पर 500 प्रतिशत तक शुल्क थोपने का हक हासिल कर सकते हैं। इस अधिकार का इस्तेमाल वह 'पुतिन के रक्त-पिपासु यूक्रेन अभियान' में रूसी पेट्रो पदार्थ खरीदकर 'सहयोग' देने वाले देशों के विरुद्ध करेंगे। मतलब साफ है। वह भारत, चीन और ब्राजील पर निशाना साध रहे हैं। अमेरिका ने भारत की अगुवाई वाले 'सोलर अलायंस' सहित 66 ऐसे मंचों से नाता तोड़ लिया है, जो पर्यावरण, सेहत, शिक्षा और पोषण जैसे जरूरी मसलों पर महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। ट्रंप पहले से ही संयुक्त राष्ट्र और उसके कल्याणकारी संगठनों को फिजूलखर्ची बताते आए हैं। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की भी कोई 'परवाह' नहीं।

साल भर पहले तक यह सब कुछ अकल्पनीय था। हम अकल्पनीयता को असलियत बनते देखने को अभिशप्त हैं। ऐसे में, कोई यह दावा नहीं कर सकता कि ट्रंप का अगला कदम क्या होगा और उस पर दुनिया की प्रतिक्रिया कैसी होगी? बिला शक हम संघर्षों से एक महासंघर्ष की ओर खिसक रहे हैं।

क्या ट्रंप यह नहीं जानते? क्या उन्हें नहीं मालूम कि चीन ने वेनेजुएला में पिछले दो दशक में 62.5 बिलियन डॉलर का जो

निवेश किया है, उसे बचाने के लिए वह किसी भी हद तक जाएगा? इसी तरह, लातिन अमेरिका में चीन और रूस के तमाम हित अमेरिकी कार्रवाइयों से टकरा रहे हैं। इससे अनजानी गोलबंदियों को आकार मिलना शुरू हो गया है। हर गोलबंदी के साथ नई आश्वस्तियां और नए तनाव उपजते हैं।

मसलन, पिछली 6 जनवरी के पेरिस घोषणापत्र को ही ले लीजिए। यूक्रेन और यूरोपीय संघ के बीच हुए समझौते में फ्रांस, ब्रिटेन और अन्य सहयोगियों ने यूक्रेन को भविष्य में रूसी हमलों से बचाने के लिए सुरक्षा-कवच प्रदान करने की गारंटी ली है। युद्ध-विराम के बाद वे वहां न केवल अपनी सेनाएं तैनात करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, बल्कि यूक्रेन की भूमि पर सैनिक अड्डे भी बनाना चाहते हैं। इस समझौते के तहत अमेरिका इस तंत्र का नेतृत्व करेगा, लेकिन ऐसा कहते वक्त समझौते के साझीदार मुल्क जानते हैं कि उन्हें यह काम खुद करना पड़ेगा।

उम्मीद के मुताबिक, मॉस्को ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि हम यूक्रेन की धरती पर किसी भी यूरोपीय देश या नाटो की सैन्य मौजूदगी स्वीकार नहीं करेंगे। यदि ऐसा होता है, तो रूस उन पर हमला करने से भी नहीं हिचकेगा। इसके साथ ही क्रेमलिन ने समझौते की पेशकश ठुकरा दी है। हंगरी ने भी यूरोप और यूक्रेन की जुगलबंदी के खिलाफ आवाज उठाई है। मतलब साफ है कि यूक्रेन बनाम रूस का संघर्ष कभी भी पश्चिम बनाम रूस में तब्दील हो सकता है। वेनेजुएला के बाद पनपता यह दूसरा ज्वालामुखी दुनिया के लिए शुभ संकेत नहीं है।

यहां भारत की बात करना जरूरी है। हमने 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान चीन और पाकिस्तान की जुगलबंदी देखी थी, अब इसे अगले मुकाम पर पहुंचाने की तैयारी हो रही है। पाकिस्तान और बांग्लादेश के वायुसेना अध्यक्षों ने पिछले हफ्ते तय किया कि रावलपिंडी का सुरक्षा तंत्र जल्दी ही ढाका को जेएफ-17 लड़ाकू विमान के साथ आवश्यक प्रशिक्षण भी मुहैया कराएगा। बांग्लादेश में जेएफ-17 की मौजूदगी नई चुनौतियां खड़ी करती है।

आपको यहां मोहम्मद यूनुस के उस बयान की याद दिलाना चाहूंगा, जो उन्होंने बीजिंग में दिया था। उन्होंने न केवल 'चिकन नेक', बल्कि समूचे उत्तर-पूर्व को शेष भारत से काटने की बात कही थी। तय है, इन सारी खुराफातों के सूत्रधार बीजिंग में बैठे हैं। इससे उत्साहित बांग्लादेश ने भारतीय कॉटन यार्न पर 10 से 20 फीसदी का कस्टम शुल्क लगाने का इरादा जाहिर किया है। बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा कॉटन आयातक है।

यदि ऐसा होता है, तो अमेरिकी शुल्कों से जूझ रही हमारी अर्थव्यवस्था के लिए नया मोर्चा खुल जाएगा। यह पहला मौका है, जब बीजिंग और वाशिंगटन अलग-अलग कारणों से भारत की घेराबंदी में जुटे हुए हैं। हमारे पुराने दोस्त रूस की हालत बहुत देर और दूर तक मदद करने की नहीं है। ऐसे में, क्या भारत चीनी कंपनियों पर लगे प्रतिबंध शिथिल कर नए रास्ते खोलेगा? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पिछली बीजिंग यात्रा के बाद सीमाओं पर बर्फ पिघली थी। इस सिलसिले को आगे बढ़ाना होगा। सप्ताह के मध्य में विदेश मंत्री एस जयशंकर की पेरिस यात्रा और राष्ट्रपति मैक्रों से मुलाकात भी सार्थक संदेश देती है। विश्व राजनीति का नया दस्तूर है- दुश्मन का दुश्मन दोस्त भले न हो, पर साझीदार जरूर बन सकता है।

तेजी से बदलती इस दुनिया में अपना स्थान सुरक्षित रखने के लिए हमें 'री पोजिशनिंग' करनी होगी। नई दिल्ली ऐसा ही कर रही है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

जूलिएन लुसेंगे
मानवाधिकार कार्यकर्ता

नाकाम देश में भी औरतों के हक की लड़ाई लड़तीं लुसेंगे

लुसेंगे पर कई बार जानलेवा हमले हुए। उन्हें शहर ही नहीं, सूबे तक बदलने पड़े। इन सबसे जब-जब इस अपराध-बोध ने घेरा कि उनके कारण पूरे परिवार को भुगतना पड़ रहा है, तब-तब पति और बच्चों ने यह कहते हुए हौसला बढ़ाया, ये हमले इसलिए हो रहे हैं, क्योंकि आप अच्छा काम कर रही हो।

जिस दौर में दुनिया हर कुछ दिन पर एक नई जंग, तनाव के किसी नए कारण से दो-चार हो रही है, ठीक उसी वक्त में संसार के अलग-अलग खित्तों में अमन की हिफाजत, मानव अधिकारों की बहाली के लिए अपनी जान दांव पर लगाने वाले भी कम नहीं हैं। खासकर कांगों जैसे एक विफल देश में मानवाधिकारों की रक्षा और महिलाओं की भलाई के लिए काम करना किसी हिमाकत से कम नहीं; मगर जूलिएन लुसेंगे ने यह हिमाकत की, इसकी कीमत भी चुकाई, पर उन्होंने इंसानियत का रास्ता नहीं छोड़ा, तभी तो प्रतिष्ठित *टाइम* मैगजीन ने उन्हें दुनिया की सौ सबसे प्रभावशाली हस्तियों में शुमार किया और संयुक्त राष्ट्र ने उनकी मानवीय भूमिका के लिए उन्हें बार-बार सम्मानित किया।

मध्य अफ्रीका के कांगो गणराज्य में आज से 67 साल पहले लुसेंगे पैदा हुईं। यह वह दौर था, जब कांगो बेल्जियम का उपनिवेश हुआ करता था और औपनिवेशिक सत्ता स्थानीय नागरिकों की बगावत दबाने व उनमें दहशत पैदा करने के लिए दमन के बर्बर रास्ते अख्तियार करती। इनमें से एक रास्ता कांगोलियाई औरतों की अस्मत लूटना था। सन् 1960 में कांगो तो स्वतंत्र हो गया, मगर वहां की औरतें आजाद न हो सकीं। दरअसल, कुदरत ने कांगों को खनिज संपदा से भरपूर नवाजा है। कोबाल्ट, तांबा, टिन, यूरेनियम और हीरे के वहां बड़े भंडार हैं। कई आधुनिक उत्पादों में जरूरी कोबाल्ट का कांगो सबसे बड़ा स्रोत है, बल्कि वैश्विक आपूर्ति का 70 प्रतिशत कोबाल्ट यहीं से आता है। ऐसे में, यूरोपीय व अफ्रीकी देशों की नजर उन कुदरती खजानों पर लगातार पड़ती रही। कांगों में कभी स्थायित्व न आ सका। लगातार राजनीतिक अस्थिरता और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन ने वहां ऐसा माहौल बनाए रखा कि औरतों के खिलाफ यौन हिंसा का सिलसिला टूट ही नहीं सका। इसी त्रासद माहौल में लुसेंगे पली-बढ़ीं।

जैसे-जैसे वह बड़ी होती गईं, उन्हें ऐसी-ऐसी घटनाओं की जानकारी मिली, जिनमें हमलावरों ने नन्ही बच्चियों को भी नहीं बख्शा था। कई बच्चियां मौत की शिकार हो गई थीं, तो कई की जिंदगी में यौन हिंसा के बाद बेफिक्री कभी न लौट पाई। वे हमेशा सहमी-सहमी, खौफजदा रहती थीं। लुसेंगे को यह बात विचलित करती थी कि युद्ध शुरू करने में जब स्त्रियों की कोई भूमिका ही नहीं, तो फिर उन्हें इसकी सर्वाधिक पीड़ा क्यों भोगनी पड़ती है?

साल 1998 की बात है। लुसेंगे उन दिनों एक रेडियो पत्रकार थीं और अपने कार्यक्रम के सिलसिले में उन्हें कांगों गणराज्य के सुदूर इलाकों में भटकना पड़ता था। वहां के लोगों की बुनियादी समस्याओं को जानने-समझने के बाद वह उसे अपने प्रसारण में उठातीं, ताकि प्रशासन उनकी भी सुध ले। लुसेंगे अपने रेडियो कार्यक्रम में लोगों को उनके इलाके की

स्वास्थ्य सुविधाओं के बारे में भी आगाह करतीं। इसी साल कांगों में बड़े पैमाने पर गृहयुद्ध भड़का। इसमें स्थानीय बागी गुटों के साथ-साथ पड़ोसी देश युगांडा और रवांडा भी कूद पड़े थे। फिर से स्त्रियां दुश्मन संपत्ति के रूप में रौंदी जाने लगीं।

लुसेंजे को लगा कि इस जुल्म के खिलाफ खामोश रहना अब गुनाह होगा, क्योंकि चुप्पी यौन उत्पीड़न की शिकार स्त्री को दो बार मारती है- एक दुष्कर्म के वक्त और दूसरी बार, जब समाज उसे खामोश रहने को कहता है। उन्होंने युद्धग्रस्त इलाकों की स्त्रियों, खासकर यौन हिंसा की शिकार बनी महिलाओं का इंटरव्यू लेना शुरू कर दिया। वह उनका दस्तावेजीकरण, बल्कि उनके साथ हुए भयावह दुष्कृत्य का प्रसारण भी करने लगीं। जाहिर है, यही काफी नहीं था। इन महिलाओं को उपचार, मनोचिकित्सकीय सलाह और कानूनी मदद की दरकार थी। लुसेंगे ने साल 2000 में 22 हमख्याल लोगों के साथ मिलकर 'सॉलिडैरिटी फेमिनिन पोर ला पैक्स एट ले डेवलपमेंट इंटीग्रल' (एसओएफईपीएडीआई) संस्था की स्थापना की, ताकि ऐसी बच्चियों व महिलाओं को ट्रोमा से बाहर निकाला जा सके और दोषियों को सलाखों के पीछे भिजवाया जाए।

यह काम आसान नहीं था। लुसेंगे पर कई बार जानलेवा हमले हुए। अनेक बार उनके घर को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया गया। उन्हें शहर ही नहीं, सूबे तक बदलने पड़े। इन सबसे जब-जब वह इस अपराध-बोध की शिकार हुईं कि उनके कारण पूरे परिवार को यह सब भुगतना पड़ रहा, तब-तब पति और बच्चों ने यही कहते हुए हौसला बढ़ाया कि ये हमले इसलिए हो रहे हैं, क्योंकि आप अच्छा काम कर रही हो। परिजनों के इस अटूट भरोसे ने लुसेंगे के इरादे को फौलादी बना दिया।

लुसेंगे जानती थीं कि महिलाएं जब तक नेतृत्व की भूमिका में नहीं आएंगी, तब तक समाज का उनके प्रति नजरिया नहीं बदलेगा। इसलिए साल 2007 में उन्होंने एक नए गैर-लाभकारी संगठन 'फंड फॉर कांगोलीज वीमेन (एफसीसी) की नींव रखी। एफसीसी ने अब तक 27 करोड़ रुपये दान में एकत्र किए हैं, जिनसे 16 प्रांतों में सक्रिय 255 से अधिक महिला संगठनों को मदद मिली है। ये तमाम संगठन यौन हिंसा रोकने, साफ पेयजल मुहैया कराने और औरतों को स्वावलंबी बनने में मदद करते हैं। एसओएफईपीएडीआई के तहत चलने वाले अस्पतालों व मोबाइल क्लिनिकों ने अब तक 7,500 से अधिक यौन हिंसा पीड़ित महिलाओं को निःशुल्क शारीरिक व मानसिक इलाज मुहैया कराया है और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लौटने का हौसला थमाया है।

हमलावरों ने नन्ही बच्चियों को भी नहीं बख्शा था। कई बच्चियां मौत की शिकार हो गई थीं, तो कई की जिंदगी में बेफिक्री फिर कभी न लौट पाई। वे हमेशा डरी-डरी रहतीं। लुसेंगे को यह बात विचलित करती कि युद्ध शुरू करने में जब स्त्रियों की कोई भूमिका ही नहीं, तो फिर उन्हें इसकी सर्वाधिक पीड़ा क्यों भोगनी पड़ती है?

कांगो जैसे नाकाम मुल्क में, जहां 78 लाख लोग बेघर हैं, जहां की 50 प्रतिशत पत्नियां उत्पीड़ित हैं और जहां दो साल पहले की एक रिपोर्ट के मुताबिक, हर चौथे मिनट एक औरत दुष्कर्म की शिकार बनाई जाती है, वहां जूलिएन लुसेंगे की इस हिमाकत को भला कौन नहीं सराहेगा? उनकी कहानी सिर्फ जिंदा रहने की नहीं, बल्कि कांगो की बेटियों के बेहतर भविष्य के लिए एक पक्के इरादे की दास्तां भी है।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

भगवान दास
भारत रत्न विद्वान

देश, धर्म के लिए मैं क्या कर रहा हूं

वह बनारस के बेहद अमीर उद्यमी परिवार के कुल दीपक थे। वह ऐसे अफसरों में नहीं थे, जो ईमानदारी की शपथ लेते हैं और कामचोरी से काम लेते हैं। गुलामी का दौर था, तो पूरे दिल से अंग्रेज सरकार के लिए काम करते थे और स्वभाव से परम संतोषी थे।

किताबों से ही उनकी जिंदगी की राह रोशन थी और किताबें जब किसी की परवरिश करती हैं, तब वह शख्स कुछ ज्यादा ही मुकम्मल होकर आगे बढ़ता है। उन डिप्टी कलेक्टर साहब के साथ भी ऐसा ही था। तालीम की बदौलत उनकी जिंदगी में कामयाबी की दर दोगुनी-तिगुनी थी। महज 12 की उम्र में हाई स्कूल और 18 की उम्र में मास्टर डिग्री पाने के बाद वह महज 24 की उम्र में उत्तर भारत के बेहतरीन प्रशासकों में गिने जाने लगे थे।

वह बनारस के बेहद अमीर उद्यमी परिवार के कुल दीपक थे। वह ऐसे अफसरों में नहीं थे, जो ईमानदारी की शपथ लेते हैं और कामचोरी से काम लेते हैं। गुलामी का दौर था, तो पूरे दिल से अंग्रेज सरकार के लिए काम करते थे। अक्सर देखा जाता है कि अच्छा काम करने वाले लोग संतोषी होते हैं और यह डिप्टी कलेक्टर तो परम संतोषी थे। कृष्ण की नगरी मथुरा में उनकी पोस्टिंग थी और वहीं एक दिन अचानक एक विदुषी महिला के बयान पर वह अटक गए। वह विदुषी विदेशी थीं। भारत के बारे में उनके ज्ञान के विस्तार में डिप्टी कलेक्टर मानो खो गए। विदुषी बता रही थीं, 'हिंदू धर्म भारत की आत्मा है। उसके बिना भारत का अस्तित्व नहीं है। हिंदू धर्म वह मिट्टी है, जहां पहुंचकर अनेक धर्म और जातियां फल-फूल रही हैं। अगर हिंदू धर्म लुप्त हो जाए, तो क्या भारत रह जाएगा? अगर हिंदू ही अपने धर्म का पालन-पोषण नहीं करेंगे, तो उसे कौन बचाएगा? अगर भारत के अपने बच्चे अपने धर्म से जुड़े नहीं रहेंगे, तो उसकी रक्षा कौन करेगा?'

यह बात डिप्टी कलेक्टर साहब के दिल में ठहर गई कि भारत के बच्चे अगर अपने धर्म को नहीं बचाएंगे, तो कौन बचाएगा? तत्काल दूसरा सवाल पैदा हुआ कि मैं खुद क्या कर रहा हूं?

फिर क्या था? डिप्टी कलेक्टर साहब तफ्तीश में जुट गए, तो पता चला कि विदुषी महिला एनी बेसेंट खुद अंग्रेजों की धरती से आई हैं और थियोसॉफी समाज की नेता हैं। यह भी पता किया कि एनी बेसेंट का तात्पर्य संकीर्ण, अंग्रेजीकृत, कट्टरपंथी हिंदू धर्म से नहीं, उनका तात्पर्य प्रबुद्ध, स्फूर्तिवान और शक्ति से परिपूर्ण प्राचीन हिंदू धर्म से है। अब तो रूबरू मुलाकात की बेचैनी बढ़ गई। जल्दी ही एनी बेसेंट से सामना हुआ और युवा अधिकारी ने अपना परिचय दिया, 'मैं भगवान दास आपके विचारों का बड़ा प्रशंसक हूं। मैं भी अपने देश और धर्म के लिए कुछ करना चाहता हूं।' तब एनी बेसेंट ने कहा, 'हर कोई अच्छे काम की तमन्ना रखता है, पर यह उम्मीद करता है कि वह काम कोई और कर दे। होना यह चाहिए कि अगर किसी काम को आप अच्छा मानते हैं, तो उसकी शुरुआत खुद ही कीजिए।'

एनी बेसेंट की उम्र भगवान दास से लगभग दोगुनी थी, लेकिन उनके बीच ज्ञान का जो तालमेल बना, उसने युग परिवर्तन का काम कर दिया। महज 25 की उम्र में भगवान दास ने शानदार सरकारी सेवा को अलविदा कह दिया और अपने शहर बनारस लौट गए। एनी बेसेंट भी बनारस आ बसीं। जल्दी ही दोनों के बीच वैचारिक मतभेद हुए, जैसा कि दो विद्वानों के बीच हो ही जाता है, पर दोनों ने मिलकर बहुत काम किए। *भगवत् गीता* की दोनों ने मिलकर अंग्रेजी में सुंदर व्याख्या की। अंग्रेजियत से बचते हुए दोनों ने साल 1898 में शुद्ध भारतीय शिक्षा संस्थान सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की। इसी कॉलेज का विस्तृत रूप आज दुनिया बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में देख रही है।

भगवान दास ने अपना पूरा जीवन धर्म और राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। वह मानते थे कि इंसानी रूह एक ही है, हमारे परस्पर रिश्ते इस रूह की बुनियाद पर बनने चाहिए। धर्म-मजहब तो इंसानों ने वक्त के मुताबिक गढ़े हैं। सभी धर्मों के उसूल एक हैं। हर धर्म में तीन अंग हैं- ज्ञान, भक्ति और कर्म। खुदा को ला-मकान और निराकार कहते हुए भी सभी उसके लिए खास-खास मकान बनाते हैं, जैसे मंदिर, मस्जिद, चर्च। मेरा मजहब सबसे अच्छा है, दूसरे मजहब वालों को जबरन अपने मजहब में लाना चाहिए, यह अहंकार सबमें है, लेकिन इससे बचना चाहिए।

12 जनवरी को जन्मे भगवान दास (1869-1958) ने अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना की। वह इतने लोकप्रिय थे कि एक तरह से बनारस के मेयर चुने गए। जब मन ऊब गया, तब सब छोड़कर गंगा जी के तट पर तपस्वी जीवन जीने लगे। जब लगा कि देश को उनकी जरूरत है, तो लौट आए। सदा स्वतंत्रता सेनानी रहे। गांधी से नेहरू तक, उनका अनुपम स्नेह विस्तार रहा। उनके भारतीय दर्शन ने अनेक दार्शनिक दिए। सर्वपल्ली राधाकृष्णन भी उन्हें गुरु मानते थे। देश की स्वतंत्रता के बाद जब भारत रत्न सम्मान की शुरुआत हुई, तब ऋषितुल्य भगवान दास को राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने पहले तो भारत रत्न से नवाजा और फिर परंपरा तोड़कर उनके चरण स्पर्श कर लिए।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

स्टॉक जब तक पुस्तक तब तक

'मेरी पुस्तक आ रही है, आप आ रहे हैं न?... मेरा तीसरा संकलन आ रहा है, आपका आना जरूरी है... मैं अमुक दिन पुस्तक मेले में होऊंगा, आप होंगे न?... मैं इस तारीख को मेले के इस स्टॉल नंबर पर पूरे दिन रहूंगा... इस दिन, इतने बजे इस प्रकाशन स्टॉल में हमारे साथ 'चाय पर चर्चा' में आना न भूलें... मेले में पधारें और अपने इस प्रिय लेखक की कलम से निकली नई पुस्तक की एक प्रति तीस फीसदी की विशेष छूट के साथ खरीदें। प्रिय लेखक के दस्तखत मुफ्त, सेल्फी अलग से।... इस लेखक की एक पुस्तक के साथ एक फ्री। स्टॉक जब तक, पुस्तक तब तक!'

सोशल मीडिया में आए इन 'इनवाइट्स' में एकाध ही प्रकाशक का है, बाकी सब लेखकों के हैं। जब-जब पुस्तक मेला आता है। आम लेखक यही कामना करता है कि कोई आए, उसकी पुस्तक देखे, फिर पढ़े, उसको जाने और यह माने कि वही इस दौर का 'नंबर वन लेखक' है। किसी बड़े सेलिब्रिटी की तरह लेखक संदेश देता रहता है कि आपका हीरो मेले में आ रहा है, चाय पर चर्चा में आ रहे हैं न?

स्पष्ट है, सोशल मीडिया के इस दौर में लेखक बदल गया है, उसके लेखन में कुछ 'एक्स्ट्रा' तत्व आ गए हैं। लेखक की भूमिका बदल गई है, रचना-प्रक्रिया बदल गई है। वह अपनी रचना की 'सेल्फ सेल' व 'सेल्फ प्रमोशन' में शामिल होने लगा है। इस तरह लेखक का रोल और रवैया भी बदल गया है। लेखक और लेखन के बीच के सबंध बदल गए हैं। पाठक से उसके संबंध बदल गए हैं। अपने रचे के प्रति ही लेखक का भरोसा उठ गया है!

लेखक या रचनाकार के लिए सिर्फ लिखना काफी नहीं है, अपने लिखे को 'प्रमोट' करना भी जरूरी हैं। इसीलिए आज बहुत से लेखक अपनी पुस्तक को सपोर्ट करते हैं, सेल भी करते हैं और मेले में 'हाई टी' पर बहस भी कराते हैं, विद लड्डू, बरफी, गुलाब जामुन ऐंड समोसा! हर मेले के आस-पास बहुत से लेखक इसी तरह से अपने को वाट्सएप, फेसबुक आदि के जरिये 'प्रमोट' करते दिखते हैं, मानों पुस्तक न हों, लेखक के बच्चे-बच्चियां हों।

सच! हिंदी साहित्य बूढ़ा हो गया, लेकिन बचपना न गया। साहित्यकार का उसकी कृति से संबंध न बदला। हर रचना रचनाकार की नजर में एक 'प्राइवेट', 'पर्सनल' और 'जेनेटिकल एक्सटेंशन' है। हर रचना लेखक की संतान है और हर चर्चा संतान का प्रमोशन। फिर भी, हर लेखक यही दावा करता दिखता है कि उसकी हर रचना, हर पुस्तक वर्ग-संघर्ष, सामाजिक-संघर्ष, विचारधारात्मक-संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए न केवल प्रतिश्रुत है, बल्कि प्रतिबद्ध भी है!

आप किसी भी गोष्ठी, सेमिनार, उद्घाटन, लोकार्पण, थोकार्पण, धोखार्पण, माल्यार्पण या ताल्यापर्ण में चले जाइए; आप किसी भी साहित्य चर्चा, साहित्य परचा, साहित्य खर्चा, साहित्य रिसर्चा में चले जाइए और एक-दो घंटे के भीतर दो दर्जन वर्ग-संघर्ष व बीस दर्जन क्रांतियों को सामने घटित होता पाइए। हर संघर्ष की 'सब-टेक्स्ट' के रूप में लेखक को 'मैं-मैं' करता, मिमियाता हुआ पाइए कि यह मैं हूं और यह है मेरी पहचान, मेरी जान कविता... यह है मेरी कहानी, शीला की जवानी... आपने पढ़ी कि नहीं?

अगर साहित्य-कर्म इतना निजी न होता, तो लेखकों के बीच इतनी दोस्तियां और दुश्मनियां न होतीं और हर कोई यह शिकायत न करता कि इसने मेरा नाम क्यों नहीं लिया, उसने क्यों नहीं लिया?... यह घोर प्रतिक्रियावाद है। यह वर्गभेद है, जातिभेद है, यहां प्रतिभाओं को जान-बूझकर उपेक्षित किया जाता है। यह शुद्ध गुटबाजी है।

इस नजर से हिंदी के हरेक लेखक का दिल टूटा रहता है। आज भी अधिकांश हिंदी लेखक 'अपने-अपने छायावाद' में रहते हैं। उनकी हर रचना उनसे जेनेटिकली जुड़ी है। वह उन्हीं के 'ईगो' का विस्तार है, उन्हीं से नाभिनालबद्ध है, उन्हीं का जीव है, उन्हीं का नन्हा मुन्ना-मुन्नी है। उन्हीं की 'फैमिली' है!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

मेरी यादों में रह गया इलाहाबाद

नई यथार्थवादी दृष्टि को अपनी रचनाओं के माध्यम से सामने लाने वाले ज्ञानरंजन साठोत्तरी पीढ़ी के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। उन्होंने भले ही कम लिखा, लेकिन जितना भी लिखा, वह उनकी कीर्ति को बनाए रखने के लिए पर्याप्त है। हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका 'पहल' के संपादक रहे। हाल ही में नब्बे वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। श्रद्धांजलि स्वरूप यहां प्रस्तुत है प्रगतिशील धारा के उल्लेखनीय रचनाकार ज्ञानरंजन के संस्मरण 'तारामंडल के नीचे एक आवारागर्द' से संपादित अंश...

श्रद्धांजलि

ज्ञानरंजन

जन्म: 21 नवंबर, 1936, निधन: 07 जनवरी, 2026

14 अगस्त, 1960 को मैंने लंबे समय के लिए इलाहाबाद छोड़ा था। उसके बाद यहां असंख्य बार आया गया। बार-बार वहां जाता हूं। उसे कभी छूकर, कभी उसमें आधा-अधूरा विलीन होकर वापस आ जाता हूं। पिछली बार जब गया, तो 41 साल बिछुड़े हुए हो गए थे। वहां आज भी लोग अपनी बोली बोल रहे थे। यह बोली किस तरह बची है, समझ में नहीं आता। दारागंज और लोकनाथ में तो बोल ही रहे थे, अल्फ्रेड पार्क में भी सुबह-सुबह बोल रहे थे। अब एक जीवन में सारा कुछ तो जान नहीं लिया जा सकता किसी शहर का। मरते-मरते भी कुछ बचा ही रह जाता है। कभी-कभी तो यह भी होता है, मर भी वे ही जाते हैं, जो सब कुछ बचा लेना चाहते हैं।

मैंने कई बार अपने भीतर इलाहाबाद को कुचलना चाहा, क्योंकि जब आप किसी दूसरे शहर में बसने जाते हैं, तो वहां के लोग कभी यह पसंद नहीं करते कि आप दोहरी नागरिकता चलाते रहें। पत्नी कोई हो और प्रेमिका कोई और, यह मंद शहरों में स्वीकृत नहीं है। यहां पत्नी को ही प्रेम करो और प्रेमिका को ही पत्नी बनाओ वाला नियम है, इसलिए मैं जबलपुर में अब कभी इलाहाबाद का नाम नहीं लेता।

अंततः भारती भी बंबई के बाद इलाहाबाद कभी लौट कर नहीं आए। हरिप्रसाद चौरसिया कुछ दिन तो अपनी मलाई की दुकान वाले दोस्त विश्वंभर के पास जाते रहे पर एक ऐसा दिन आया, जब वे भी अलविदा हो गए इलाहाबाद से। ओंकारनाथ, अजित कुमार सब बैरंग लौट गए। जिस तरह दो स्त्रियां बुलंदी के साथ आपके जीवन में बराबर कभी नहीं रह सकतीं, उसी तरह एक साथ दो शहरों को प्यार नहीं किया जा सकता। अपवादों को छोड़ दिया जाए, तो दो भाषाओं में और कभी इस शहर और कभी उस शहर में लिखना भी प्रायः असंभव है। अंततः जिसने भी इलाहाबाद छोड़ा, उसको इलाहाबाद ने भी छोड़ दिया।

अब बिल्कुल सही बंटवारा तो हो नहीं सकता, लेकिन अगर इलाहाबाद को दो टुकड़ों में बीच से फाड़ दें, तो महात्मा गांधी मार्ग बचेगा या सुप्रसिद्ध ग्रांट ट्रंक रोड। इसके एक पहलू में सुंदर और लकदक इलाहाबाद है और दूसरी तरफ गरीब भीड़ वाला पुराना इलाहाबाद। जिस तरह गंगा-यमुना के रंग अलग-अलग हैं, उसी तरह इन दो हिस्सों की अलग-अलग दुनिया है। एक तरफ पढ़-लिख कर कुछ कमा-धमा कर निकल गए भद्रजनों की दुनिया है। दूसरी तरफ पुराने बाशिंदों, क्लर्कों, कारीगरों की सघन बस्तियां।

इलाहाबाद के तीन तरफ नदी है। एक तरफ दिल्ली तक सड़क ही सड़क चले जाइए। तीन तरफ पुल हैं, अंग्रेजों के बनाए हुए। नदियां जब निर्जल हो जाएंगी, तो ये पुल और अधिक काम के होंगे। ऋतुराज की कविता 'पुल पर पानी' का और नरेश सक्सेना की कविता 'पुल पार करने से नदी पार नहीं होती' का मतलब तब क्या होगा, जब हमारी संतानें पुल से नीचे देखेंगी। उनके हाथ में माताओं के दिए हुए सिक्कें होंगे पर नीचे पानी नहीं सैकत राशि होगी और धड़धड़ाती हुई रेलगाड़ी गुजर जाएगी।

पश्चिमी इलाहाबाद में गरीबी है, इसलिए सराय ही सराय हैं। गलियां-दर-गलियां हैं। हिंदू मोहल्लों में भी गलियां और मुहाल हैं। मुसलमान बस्तियां भी गलियों की भूलभुलैया में खोई हैं। सराय आकिल, सुलेम सराय, गढ़ी सराय से लेकर शहर के हृदय स्थलों तक सरायों की कतार हैं। इस तरफ मुसाफिर और यात्रियों का संसार है।

कुंभ मेला हो या मुहर्रम के जुलूस, सबके लिए यह समान क्षेत्र है। गलियों के मुहानों पर रात-दिन चलते ऐसे चायघर हैं, जो मुझे ताशकंद और तजाकिस्तान में हर जगह, यहां तक कि एयरपोर्ट पर भी मिले थे। आटे की बिस्किट मिलती है और चाय के लिए आग हमेशा जलती रहती है। बंद दुकानों के बाहर देर शाम तक पतंग, डोर, मांझा बिक रहा है।

सन् तीस-चालीस के जमाने के 'तवे' लगातार बजते रहते हैं। कबाब के सीके लगे हैं। घोड़े पक्की चरहियों में पानी पी रहे हैं। इक्के मनौरी से संगम तक दौड़ रहे हैं। रूई धुनी जा रही है। रंगरेज हंडों में रंग उबाल रहे हैं। रंग कर कपड़े सुखा रहे हैं। इत्र-फुलेल तांत की थैलियों में बिक रहा है। सब्जी और फलों की मंडी है। तरबूजों को स्टूल बना कर दुकानदार बैठे-बैठे पंखा झल रहे हैं। ये लोग अपनी ग्रांट ट्रंक रोड छोड़ कर सिविल लाइंस की तरफ कभी नहीं जाते। इनको किसी और दुनिया का अता-पता नहीं है। ये ऊबते नहीं। इस क्षेत्र में लगता है, एक जीवंत तमाशा निरंतर चलता रहता है। जिस तरह से मेलों में लोग मंद-मंथर कदमताल करते हैं, कुछ वैसी चाल यहां सदा सर्वदा होती है।

इलस्ट्रेशन: यशवंत नामदेव

इलाहाबाद शांत, संतुष्ट और बेपरवाह था। यहां बड़ी मांग नहीं उठती थी। यहां चवन्नी जेब में रहे, तो काफी हाउस की लंबी शाम निकल जाती थी और न भी हो, तो काफी हाउस में पैसा मांगा नहीं जाता था। लोग पैसा कभी-न-कभी दे देते थे। प्रबंधक, बेयरा भी इस बात के लिए निश्चिंत थे। सातवें दशक तक बिना करेंसी के भी दिन मिलजुल कर निकल जाते थे। मुझे खयाल है कि मेरे पास साइकिल नहीं थी और तीन साल में यूनिवर्सिटी अबाध आता-जाता रहा। कोई गम नहीं था।

यहां कविता पर लोगों का गहरा भरोसा था। लक्ष्मीकांत वर्मा ने कविता पर मूलभूत किताब की रचना की। उससे पता नहीं कितनी और किताबें निकलीं। मुझे रघुवंश जी, रामस्वरूप चतुर्वेदी, भारती और जगदीश गुप्त जैसे नई कविता के महारथियों ने पढ़ाया पर मैं उनकी राह पर नहीं चल सका। वहां शिक्षा से गुलामी कभी पैदा नहीं हुई।

यहां मौत के मुंह में गंगाजल के बाद सर्वाधिक उम्मीद कविता पर ही लोगों ने की। घर बार की चिंता सताती नहीं थी लोगों को। शास्त्रार्थ कभी टूटा नहीं। नव्यतम रूपों में जारी रहा। देश के सर्वोत्तम दिमागों और रचनाकारों का आगमन यहां अबाध था। जिस शहर में राजापुर के विशाल कब्रिस्तान में शोक पंक्तियों को पढ़ते हुए या गंगा तट पर चिताओं के जलते हुए रत्ती भर भी उद्विग्नता आगामी जीवन को लेकर नहीं हुई। सवाल यह है कि उस इलाहाबाद में भगदड़ कैसे मच गई? वहां कोई अब रचने के लिए नहीं आ रहा है। आगमन यहां बंद है।

दुनिया ने अपने भावी को बचाने के लिए जिन जिन मार्गों को चुना, अब इलाहाबाद भी उन सबको स्वीकार कर रहा है। गर्वीले लोगों की गर्दन पर पक्षाघात हो गया है। अब केवल जनसंख्या है और हिंसा। कालकूट मचा हुआ है। फिराक साहब की शायरी का रोमांटिक धुआं धुआं हो गया है। जनसंख्या और हिंसा इस शहर को सपाट बनाते हैं। यहां कविता बची अवश्य है पर उसके रचनाकार हिंस्र हैं। कविता का शास्त्र कवियों से छिन गया है।

समय बीतता रहा, उलटपुलट होता रहा तमाम दुनिया की तरह, लेकिन शहर हिंसा को वशीभूत नहीं कर सका। उन मार्गों पर आपका सांस्कृतिक प्रदर्शन छीन लिया गया है। अब पाकड़, इमली, बबूल और नीम के विशाल वृक्षों के नीचे से निकलती छायादार सड़कें लहू से लथपथ हैं। असंख्य लोगों ने सबसे सस्ते सुलभ अपने चाकू को चमकाया हुआ है। सवाल है कि क्या कभी संसार के कवियों, चित्रकारों और विचारकों ने हिंसा की जबरदस्त तरफदारी की थी। अगर की थी, तो अब उनके हाथ से यह तरफदारी भी छिन चुकी है। कविता, अकविता, प्रगतिशील कविता के जबरदस्त विमर्श इस शहर में तीस साल तक होते रहे। 'माध्यम', 'क ख ग' और 'निकष' जैसी पत्रिकाएं निकलती रहीं। कविता दर-दर और कदम-कदम लिखी गई। इतना प्यार, इतनी कविता और इतना दीवानापन हुआ, लेकिन इलाहाबाद बचा नहीं। अब सब ओर दीवाने मारे जा रहे हैं।

मैं इलाहाबाद से भागा। बार-बार दिल्ली, बंबई, कलकत्ते गया। मुझे आज भी महानगरों से उम्मीद बनी हुई है, क्योंकि इलाहाबाद से उम्मीद टूट गई है। वह मरियल बेचारा न गांव है, न कस्बा, न शहर। उसकी श्रेणी ही पिघल गई है, भंग हो गई है। इलाहाबाद अपने पिछले रूप में न वापस आ सकता है और न नया रास्ता फोड़ सकता है।

(साभार: 'हिंदी समय', महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से संपादित अंश)

रणजीत सिंह और कोहिनूर की कहानी

'गौरव गाथा' उन वीरों, संतों और समाज सुधारकों की प्रेरणादायी कहानी है, जिन्होंने भारत की संस्कृति और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर किए थे। राजा महेंद्र प्रताप सिंह, महाराजा रणजीत सिंह, भगत सिंह, स्वामी दयानंद, पंडित लेखराम जैसे नायकों की गौरवपूर्ण गाथाएं इस पुस्तक का हिस्सा हैं। हाल में आई पुस्तक 'गौरव गाथा' से प्रस्तुत है एक संपादित अंश...

पुस्तक अंश

महाराजा रणजीत सिंह का जन्म 13 नवंबर, 1780 को गुजरांवाला (वर्तमान पाकिस्तान) में सुकरचकिया मिसल के प्रमुख महासिंह और रानी राजकौर के यहां हुआ था। उनका मूल नाम बुध सिंह था, लेकिन 10 वर्ष की आयु में सरदार पीर मुहम्मद के विरुद्ध युद्ध जीतने पर उन्हें रणजीत सिंह नाम दिया गया। चेचक के कारण उनकी बायीं आंख की रोशनी चली गई, लेकिन उनकी वीरता पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

12 वर्ष की आयु में पिता की मृत्यु के बाद रणजीत सिंह ने सुकरचकिया मिसल का नेतृत्व संभाला। उन्होंने 1799 में लाहौर पर कब्जा कर सिख साम्राज्य की नींव रखी। 1801 में उन्हें 'पंजाब का महाराजा' घोषित किया गया। उनके साम्राज्य ने खैबर दर्रे से पश्चिमी तिब्बत और कश्मीर से मिथनकोट तक विस्तार किया। उन्होंने अफगान शासकों, जैसे जमान शाह और अता मोहम्मद को पराजित किया। 1819 में कश्मीर और 1823 में पेशावर पर कब्जा उनकी प्रमुख उपलब्धियां थीं।

रणजीत सिंह की सेना, जिसमें हरिसिंह नलवा जैसे सेनापति थे, ने आधुनिक हथियारों और रणनीतियों का उपयोग किया। उन्होंने फ्रांसीसी और जर्मन अधिकारियों को नियुक्त कर सेना को संगठित किया।

सन् 1813 में रणजीत सिंह ने कोहिनूर हीरा शाहशुजा की पत्नी वफा बेगम से प्राप्त किया। उनकी इच्छा थी कि इसे जगन्नाथपुरी मंदिर में अर्पित किया जाए, लेकिन यह पूरी नहीं हई। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर को दो टन सोने से स्वर्ण मंडित करवाया और हरमंदिर साहिब को सजाया। 27 जून, 1839 को लकवे के कारण रणजीत सिंह का निधन हुआ। उनके पुत्र खड़क सिंह और दलीप सिंह के शासन में सिख साम्राज्य कमजोर हुआ। 1849 में अंग्रेजों ने पंजाब पर कब्जा कर लिया। रणजीत सिंह की धर्मनिरपेक्षता और सैन्य शक्ति आज भी प्रेरणा देती है।

रणजीत सिंह ने सिख साम्राज्य को एकजुट कर भारत को अफगान आक्रमणों से बचाया।

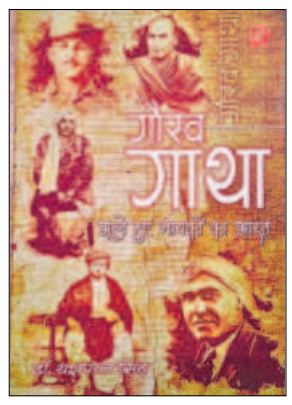

गौरव गाथा

(भूले हुए नायकों का भारत)
लेखक: डॉ. यशपाल सिंह
प्रकाशक: प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, गाजियाबाद
मूल्य: ₹500

उनकी धर्मनिरपेक्षता और प्रशासनिक कुशलता आधुनिक भारत के लिए प्रासंगिक हैं।

कोहिनूर हीरा, जिसका अर्थ है- 'रोशनी का पर्वत', 105.6 कैरेट का विश्व का सबसे मूल्यवान रत्न है। इसका उद्गम गोलकुंडा की खान (आंध्र प्रदेश) से माना जाता है। हिंदू कथाओं में इसे स्यमंतक मणि कहा गया, जो भगवान कृष्ण से जुड़ा था। ऐतिहासिक रूप से, यह 1304 में मालवा के राजा महलाक देव के पास था। सन् 1323 में अलाउद्दीन खिलजी ने काकतीय राजा प्रतापरुद्र से इसे लूटा।

मुगल: 1526 में बाबर ने इसे प्राप्त किया। शाहजहां ने इसे मयूर सिंहासन में जड़वाया। औरंगजेब ने इसे आगरा किले में रखा।

नादिर शाह: 1739 में नादिर शाह ने इसे फारस ले जाकर 'कोहिनूर' नाम दिया।

दुर्रानी और सिख: 1813 में रणजीत सिंह ने शाहशुजा से इसे प्राप्त किया।

ब्रिटिश: 1849 में दलीप सिंह से अंग्रेजों ने इसे छीना और महारानी विक्टोरिया के ताज में जड़ा।

कोहिनूर को शापित माना जाता है, क्योंकि इसके पुरुष स्वामी सत्ता खोते या मरते थे। यह मान्यता काकतीय, मुगल और सिख शासकों के पतन से जुड़ी है। महिलाओं के लिए यह सौभाग्यकारी माना गया।

कोहिनूर वर्तमान में लंदन के टावर में ब्रिटिश क्राउन ज्वेल्स का हिस्सा है।

पुस्तकें आई हैं

फांसी
(उपन्यास)
लेखक द्वय: उद्भ्रांत और शैलेश पंडित
प्रकाशक: न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य: ₹375

दशकों पहले राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी ने प्रयोग के तौर पर 'एक इंच मुस्कान' के रूप में साझा उपन्यास लिखा था। ये दोनों एक ही पीढ़ी के लेखक थे। इसी परंपरा में हाल में आया उपन्यास 'फांसी' है। यहां उल्लेखनीय यह है कि इसके दोनों लेखक अलग-अलग पीढ़ी के हैं। इसका शिल्प भी अलग है। अपराध पर केंद्रित इस उपन्यास की कथा प्रेम के सहारे परवान चढ़ती है। इस प्रेम कथा में प्रेम के साथ-साथ नफरत, मिलना-बिछुड़ना सभी हैं। फांसी की सजा के औचित्य-अनौचित्य के प्रश्न से जूझती यह एक सुखांत अपराध कथा है।

नेपाल उर्फ लट्ठा पार की डायरी
(रिपोर्ताज)
लेखक: रवींद्र भारती
प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य: ₹495

'ने' माने मंडी, 'पाल' माने ऊन। नेपाल यानी ऊन की मंडी, लेकिन नेपाल का सिर्फ यही परिचय नहीं है। भारत के लोगों के लिए नेपाल 'सानी मां' यानी मौसी का घर है। हाल में आई पुस्तक 'नेपाल उर्फ लट्ठा पार की डायरी' भारत-नेपाल की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ ही वहां की ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि पर भी व्यापक प्रकाश डालती है। इस डायरी के केंद्र में 1940 से लेकर 1980 के बीच का समय है। जब नेपाली जन-गण ने राजशाही के विरुद्ध निर्णायक संघर्षों के द्वारा लोकतांत्रिक अधिकार हासिल किए थे।

मतलब हिन्दू
('हिन्दू त्रयी' का पहला भाग)
(उपन्यास)
लेखक: अम्बर पाण्डेय
प्रकाशक: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य: ₹399

'मतलब हिन्दू' पिछले दिनों आए उपन्यास का ऐसा शीर्षक है, जिसका अर्थ आप अपने-अपने हिसाब से लगा सकते हैं। इसके बावजूद लेखक के नजरिये से इसका अपना एक अर्थ है। इस उपन्यास की कहानी गांधी के दक्षिण अफ्रीका जाने और वापस लौटने के बीच के समय की कहानी है। इस उपन्यास का नायक संस्कारी ब्राह्मण घर का एक पढ़ाकू किशोर है, जो लेखक बनना चाहता है और पड़ोस में रह रहे बैरिस्टर गांधी से प्रभावित है। दरअसल, इस कहानी के माध्यम से इसमें उसकी हिंदू पहचान और आधुनिकता के बीच संघर्ष को दिखाया गया है।

खामोशी एक मुश्किल फन है
(कविता-संग्रह)
लेखक: दिनेश ठाकुर
प्रकाशक: कलमकार मंच, जयपुर
मूल्य: ₹220

शाइर और वरिष्ठ पत्रकार दिनेश ठाकुर का यह तीसरा गजल संग्रह है- 'खामोशी इक मुश्किल फन है।' इस संग्रह में 85 गजलें और कुछ मुतफर्रिक अशआर हैं। अपनी तमाम बेबसी, बेचैनी के बावजूद उनकी शाइरी सुकून से मरहम लगाती है। वह दोटूक सुनाते हैं- 'अश्क, उदासी, गम, तन्हाई/चार सहारों पर जिंदा हूं।' वह खामोशियों से लड़ते हैं और बिना उलझे-अटके उत्साह भी बढ़ाते हैं- 'दर्द इक उन्वान है, आगे चलो/कब सफर आसान है, आगे चलो।' वाकई, जब चारों ओर शोर हो, तब खामोश रहना भी एक फन या कला है। खामोशी खुद जवाब देती है। शाइर वक्त को चुनौती कुछ इस अंदाज में देता है-'लाख कोशिश की मगर बदला नहीं, वक्त भी चट्टान है, आगे चलो।'

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(11 जनवरी से 17 जनवरी 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
सप्ताह के प्रारंभ में मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। 15 जनवरी के बाद कार्यक्षेत्र में नौकरी के लिए साक्षात्कारादि कार्यों में सफलता मिलेगी।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
सप्ताह के प्रारंभ में मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। 13 जनवरी से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कारोबार में भागदौड़ बढ़ सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा।

मिथुन (21 मई-21 जून)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। कारोबार में वृद्धि होगी। 13 जनवरी के बाद संतान की सेहत का ध्यान रखें। आय में कमी आ सकती है।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। 13 जनवरी से माता की सेहत में सुधार होगा। नौकरी में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान रहेगा। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। 13 जनवरी के बाद नौकरी में बदलाव के अवसर मिल सकते हैं।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
सप्ताह के प्रारंभ में वाणी में मधुरता रहेगी। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। 13 जनवरी से नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
सप्ताह के प्रारंभ में मन तो प्रसन्न रहेगा, परंतु आत्मविश्वास में कमी रहेगी। 13 जनवरी के बाद आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें। आय में वृद्धि हो सकती है।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
सप्ताह के प्रारंभ में मन परेशान हो सकता है। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। 15 जनवरी के बाद नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
सप्ताह के प्रारंभ में मन परेशान रहेगा। धैर्यशीलता में कमी रहेगी। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। 13 जनवरी के बाद किसी मित्र के सहयोग से धन की प्राप्ति हो सकती है। सेहत का भी ध्यान रखें।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। सप्ताह के प्रारंभ में परिवार की सेहत का भी ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों में सुधार रहेगा। संतान सुख में वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान भी हो सकता है। 13 जनवरी के बाद नौकरी में स्थान परिवर्तन की संभावना बन रही है। 15 जनवरी से जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
सप्ताह के प्रारंभ में मन परेशान हो सकता है, परंतु आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। 13 जनवरी के बाद घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। संतान की सेहत का ध्यान रखें। कारोबार में वृद्धि होगी।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

वर्ग पहेली: 8206

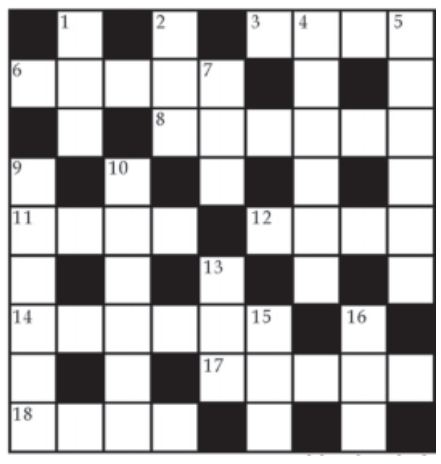

ऊपर से नीचे

1. बेचैन; व्याकुल; हतोत्साह; मुरझाया हुआ (3)
2. मथे हुए दही में बूंदी आदि डालकर बनाया गया खाद्य पदार्थ (3)
4. अधिकार क्षेत्र बढ़ाना; प्रसार करना; फैलना; विस्तृत होना (3,3)
5. बोलना आरंभ करना; बोलने लगना (3,3)
7. कपड़ा बुनने का यंत्र; कपड़ा बुनने की खुड्डी (3)
9. खिंचाव का कारण; तनाव का कारक; तनावकारी (6)
10. अनुकरण करना; स्वांग करना; टीपना (3,3)
13. तह; पपड़ी; सतह; स्तर (3)
15. अगुआ; अधिपति; श्रेष्ठ पुरुष; नेता; प्रधान; मुख्य अभिनेता (3)
16. भावपूर्ण; मधुर; मीठा; रसीला (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

बाएं से दाएं

3. अन्वेषण; ईजाद; खोज; नव कल्पना (4)
6. जननायक; लोगों का नेता (5)
8. जगह-जगह से उधड़ जाना; छिन्न-भिन्न होना; विदीर्ण होना (2,2,2)
11. नामजदगी; नाम लिखा जाना; पंजी में लिखा जाना (4)
12. स्वर और ताल; सुर और ताल; संगीत (4)
14. कान काटना; चकमा देना; नीचा दिखाना; मात करना (2,4)
17. ठहराना; नियत करना; सुनिश्चित करना; निर्णय करना (2,3)
18. दिक्कत; दुस्साध्यता; मुश्किल; संकट; दुर्लभता (4)

वर्ग पहेली 8205 का उत्तर

सुडोकू: 8188

*आसान

	3	9	7		6	2		
						4		8
5				4	1			
9	6	8						2
				1				
3						6	5	4
			5	3				1
7		3						
		4	9		7	8	6	

खेलने का तरीका: दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल: सुडोकू नं. 8187

1	4	6	8	2	7	9	3	5
8	3	2	5	9	4	6	1	7
7	5	9	1	3	6	8	2	4
9	7	5	2	1	8	4	6	3
2	8	3	4	6	5	7	9	1
4	6	1	3	7	9	5	8	2
5	1	7	9	8	3	2	4	6
6	2	8	7	4	1	3	5	9
3	9	4	6	5	2	1	7	8

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

11 जनवरी, रविवार, **शक संवत्:** 21 पौष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 28 पौष मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 21 रज्जब, 1447, **विक्रमी संवत्:** माघ कृष्ण अष्टमी तिथि प्रातः 10.21 मिनट तक पश्चात नवमी तिथि, चित्रा नक्षत्र सायं 06.12 मिनट तक पश्चात स्वाती नक्षत्र, सुकर्मा योग सायं 05.27 मिनट तक पश्चात धृति योग, कौलव करण। चंद्रमा तुला राशि में (दिन-रात)।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य दक्षिण गोल। हेमंत ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मैं सरकारी नौकरी में जाना चाहती हूं। कृपया बताएं कि मुझे वास्तु के अनुसार क्या ध्यान रखना चाहिए? -निहारिका प्रत्यूष, रांची

- सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए सबसे पहले आपकी पूर्व दिशा खुली होनी चाहिए।
- आपकी उत्तर दिशा में भी कोई दोष नहीं होना चाहिए। उत्तर दिशा में कोई भारी या ऊंचा निर्माण नहीं होना चाहिए।
- आपके अग्नि कोण में कोई शौचालय नहीं होना चाहिए। साथ ही वहां पर कोई भी पानी की स्टोरेज या गड्ढा, टंकी आदि नहीं होनी चाहिए।
- अपनी पढ़ाई की किताबें भी वायव्य दिशा में न रखकर पूर्व या पश्चिम दक्षिण पश्चिम दिशा में रखें।

संपादकीय जागरण

रविवार, 11 जनवरी, 2026 : माघ कृष्ण - 8 वि. 2082

स्वार्थ संबंधों को दीमक की भांति खोखला करता है

वायु प्रदूषण से संघर्ष

यह स्वागतयोग्य है कि देर से ही सही, दिल्ली और एनसीआर के सभी राज्यों ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सतत रूप से सक्रिय रहने का निर्णय किया। इसके सकारात्मक परिणाम निकलने चाहिए, पर ऐसा तब होगा, जब दिल्ली संग एनसीआर के राज्य वास्तव में वर्ष भर वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। समझना कठिन है कि अभी तक इसकी आवश्यकता क्यों नहीं समझी गई? अभी स्थिति यह है कि जब वायु प्रदूषण सिर उठा लेता है, तब अलग-अलग राज्य अपने-अपने स्तर पर उससे निपटने के लिए सक्रिय होते हैं। यह सक्रियता निष्प्रभावी ही रहती है। यह किसी से छिपा नहीं कि इन दिनों दिल्ली-एनसीआर वायु प्रदूषण से त्रस्त है और उससे निपटने के लिए जो भी उपाय किए जा रहे हैं, वे अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हैं। वायु प्रदूषण की गंभीर स्थिति के बीच दिल्ली एवं एनसीआर के राज्यों ने वायु की गुणवत्ता संभालने के लिए साल भर प्रदूषण रोधी उपायों पर काम करने के लिए अपनी जो योजना केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय और वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को सौंपी है, उसके तहत सभी राज्य 15 जनवरी से वायु प्रदूषण पर लगाम लगाने का काम शुरू कर देंगे, जो वर्ष भर चलेंगे। अच्छी बात यह है कि इन कामों की हर महीने समीक्षा होगी। इस सबके बावजूद प्रश्न यह है कि आखिर केवल दिल्ली एवं उससे सटे राज्य ही वायु प्रदूषण से पार पाने के लिए आगे क्यों आए हैं? यह कार्य तो हर राज्य और विशेष रूप से उत्तर भारत के सभी राज्यों को करना चाहिए।

अब वायु प्रदूषण केवल दिल्ली-एनसीआर की ही समस्या नहीं है, भले ही उसकी चर्चा अधिक होती हो। सच यह है कि अब सर्दियों में उत्तर भारत के करीब-करीब सभी राज्य वायु प्रदूषण से ग्रस्त रहने लगे हैं। इसी कारण भारत की गिनती उन देशों में होने लगी है, जहां की वायु सर्वाधिक प्रदूषित बनी रहती है। उचित यह होगा कि केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय देश के सभी राज्यों से वायु प्रदूषण से निपटने की ऐसी किसी योजना पर काम करने को कहे, जो वर्ष भर चलती रहे। फिलहाल यह कहना कठिन है कि दिल्ली एवं एनसीआर के राज्यों ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए 12 महीने सक्रिय रहने की जो तैयारी की है, उसके कैसे नतीजे कब तक सामने आएंगे, लेकिन यह समझा जाए कि वायु प्रदूषण से मुक्ति तभी मिलेगी, जब आम जनता उसके प्रति सजग होगी और साथ ही अपना योगदान देने के लिए भी तत्पर रहेगी। लोगों को अपने जनप्रतिनिधियों पर इसके लिए दबाव डालना होगा कि वे जानलेवा साबित होते वायु प्रदूषण को गंभीरता से लें। उन्हें नगर निकायों पर भी दबाव बनाना होगा, क्योंकि स्थानीय स्तर पर जिन कारणों से वायु प्रदूषण बढ़ता है, उनका निवारण करने में वे नाकाम ही हैं।

बड़ी कामयाबी

दिल्ली समेत देश-विदेश के अनेक लोगों से सौ करोड़ तक की साइबर ठगी करने वाले अंतरराष्ट्रीय गिरोह का भंडाफोड़ किया जाना सराहनीय है। दिल्ली पुलिस की आइएफएसओ यूनिट ने इस अंतरराष्ट्रीय गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए राजधानी में संचालित किए जा रहे इस गिरोह के पांच ठिकानों को चिह्नित कर इसके दो सदस्यों को गिरफ्तार किया। इनसे पूछताछ के आधार पर एक ताइवानी नागरिक को दिल्ली के आइजीआइ एअरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया, जिसके बाद मोहाली से दो और कोयंबटूर व मुंबई से गिरोह के एक-एक सदस्य गिरफ्तार किए गए, जिसे दिल्ली पुलिस की एक बड़ी कामयाबी कहना गलत नहीं होगा।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों का इस्तेमाल कर साइबर ठगों को विदेश से लाकर पूरे गिरोह को तहस-नहस किया जाना जरूरी है

इस मामले में महत्वपूर्ण ये भी है कि इस गिरोह के तार ताइवान के साथ ही चीन, पाकिस्तान, कंबोडिया और नेपाल से भी जुड़े हुए हैं। ये गिरफ्तारियां दर्शाती हैं कि किस तरह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठित गिरोह साइबर ठगी की वारदातों को अंजाम दे रहे हैं और इनके कई सदस्य भारत में ही बैठकर ठगी कर रहे हैं। इस गिरोह के भंडाफोड़ के बाद दिल्ली पुलिस को साइबर ठगों पर अपनी नकेल और प्रभावी तरीके से कसनी चाहिए। जहां आवश्यकता हो, अंतरराष्ट्रीय संबंधों का इस्तेमाल कर साइबर ठगों को विदेश से पकड़कर लाना चाहिए और साइबर ठगी के पूरे सिंडीकेट को तहस-नहस कर देना चाहिए, ताकि भविष्य में कोई इनके चंगुल में न फंसने पाए।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या आइपैक के दफ्तर पर ईडी की छापेमारी का मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा विरोध का तरीका सही है?

आज का सवाल

क्या यूरोपीय देश ट्रंप को ग्रीनलैंड पर कब्जा करने से रोकने में समर्थ दिख रहे हैं?

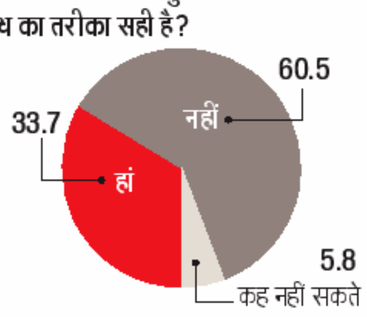

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

विश्व को खतरे में डालते ट्रंप

संजय गुप्त

ट्रंप किस तरह अहंकार से भरे हुए हैं, इसका पता उनके इस कथन से चलता है कि उनकी आक्रामकता को सिर्फ वही रोक सकते हैं

नए वर्ष का आगमन होते ही एक अप्रत्याशित घटनाक्रम में अमेरिकी सेना वेनेजुएला पर हमला कर वहां के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को उनकी पत्नी समेत उठाकर अमेरिका ले आई। विश्व को हैरान करने वाली इस घटना को पहले तो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति के कथित संरक्षण में चल रहे नारकोटिक्स आतंक से जोड़ा, लेकिन शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि इस हमले का मूल उद्देश्य वेनेजुएला के तेल भंडारों पर कब्जा करना था। वेनेजुएला में कच्चे तेल के सबसे अधिक भंडार हैं। ट्रंप ने जिस तरह यह कहा कि अब वेनेजुएला के तेल को अमेरिका बेचेगा और वहां की अंतरिम राष्ट्रपति को उनका सहयोग करना होगा, उससे साफ है कि अमेरिकी राष्ट्रपति दादागीरी पर उतर आए हैं। वे संयुक्त राष्ट्र चार्टर के साथ अंतरराष्ट्रीय नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। इसकी कल्पना करना कठिन था कि लोकतंत्र की दुहाई देने वाला अमेरिका किसी देश के राष्ट्रपति का अपहरण कर लेगा, लेकिन ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका ने ऐसा ही किया। यह चोरी और सीनाजोरी ही है। अमेरिका ऐसी हरकतें पहले भी करता रहा है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद से उसने अपने संकीर्ण स्वार्थों को पूरा करने के लिए अनेक देशों पर हमले किए अथवा वहां छल-छद्म से तख्तापलट कराया। इस कोशिश में उसे कई बार मुंह की खानी पड़ी, लेकिन वह सबक सीखने को तैयार नहीं। अमेरिका को वियतनाम में मात मिली। इसके बाद अफगानिस्तान, इराक और लीबिया में भी वह वैसा कुछ नहीं कर सका, जिसका दावा कर उसने इन देशों पर हमला किया था। वह इन देशों में कुल मिलाकर नाकाम ही रहा। उसकी इस नाकामी का दुष्परिणाम इन देशों ने अस्थिरता और अशांति के रूप में देखा।

वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले की विश्व के अनेक देशों ने निंदा की, लेकिन कई देश ऐसे भी रहे, जिन्होंने ट्रंप की सैन्य कार्रवाई का समर्थन किया अथवा जो मौन बने रहे। चूंकि अमेरिका एक बड़ी आर्थिक एवं सैन्य शक्ति है, इसलिए कोई भी देश एक सीमा से अधिक उसका विरोध करने की स्थिति में नहीं। ट्रंप इसी का लाभ उठाकर मनमानी कर रहे हैं। उनके बेलगाम होने का एक कारण यह है कि उसे चुनौती दे सकने वाला रूस यूक्रेन युद्ध में उलझा है। करीब चार साल पहले यूक्रेन पर रूस का हमला उसकी मनमानी ही था। लगता है उसकी इस हरकत ने ट्रंप को भी मनमानी करने का मौका दिया। अब वे बेलगाम हैं। वेनेजुएला पर हमले के बाद वे डेनमार्क के स्वायत्तशासी क्षेत्र ग्रीनलैंड पर कब्जा करने की बात कर रहे हैं। ग्रीनलैंड दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है। ट्रंप इस बहाने ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहते हैं कि उस पर रूस और चीन की निगाह है। उनका कहना है कि अमेरिकी हितों की रक्षा के लिए ग्रीनलैंड अमेरिका का हिस्सा होना चाहिए। ग्रीनलैंड में अकूत प्राकृतिक संपदा है, जिसका अभी तक दोहन नहीं किया गया है। अमेरिका के अंदर यह विचार पहले भी रहा है कि जिस तरह अलास्का उसके नियंत्रण में आया, उसी तरह ग्रीनलैंड भी आए। ट्रंप उस पर सैन्य कार्रवाई के जरिये कब्जा करने के अलावा उसे खरीदने की बात भी कह रहे हैं। हालांकि वहां के लोग इसका विरोध कर रहे हैं, लेकिन वे बेपरवाह हैं। उन्हें डेनमार्क के साथ यूरोपीय देशों की नाराजगी की भी चिंता नहीं, जबकि वे नाटो के भविष्य को खतरे में बता रहे हैं।

ट्रंप किस तरह अहंकार से भरे हुए हैं, इसका पता उनके इस कथन से चलता है कि उनकी आक्रामकता को सिर्फ वही रोक सकते हैं और अमेरिकी हितों के आगे किसी अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून का कोई महत्व नहीं। यह तानाशाही वाला रवैया है। ट्रंप आक्रामक रणनीति पर इसलिए चल रहे हैं, क्योंकि अमेरिकी अर्थव्यवस्था बुरे दौर से गुजर रही है। उसे पटरी पर लाने के लिए उन्होंने अमेरिका आयात होने वाली वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ा दिया है। उनका दावा है कि उनकी टैरिफ नीति से अमेरिका की आय बढ़ी है, लेकिन सच्चाई कुछ और है। ट्रंप इसलिए भी बौखलाए हुए हैं, क्योंकि डालर का प्रभुत्व कमजोर हो रहा है। डालर का प्रभुत्व तब बढ़ना शुरू हुआ, जब अमेरिका ने 1970 के दशक में सऊदी अरब से समझौता किया कि तेल का व्यापार डालर में होगा। इससे अमेरिका को लाभ मिला और डालर का प्रभुत्व बढ़ा, लेकिन बीते कुछ वर्षों में वह टूटा है। इसका कारण दुनिया के कई देशों का डालर से इतर मुद्रा में व्यापार करना है। रूस, वेनेजुएला, ईरान आदि देश तो अपना तेल डालर के बजाय अन्य मुद्रा में बेच रहे हैं। अमेरिका से आजिज आए कई देश डालर के बजाय अन्य मुद्रा में व्यापार करने की राह तलाश रहे हैं। ट्रंप को यह रास नहीं आ रहा है। उन्हें लगता है कि वे दुनिया को धमकाकर उसे डालर में व्यापार करने के लिए मजबूर कर लेंगे, लेकिन इसके उलटे नतीजे आएं तो हैरानी नहीं।

अवधेश राजपूत

ट्रंप ने हाल में उस विधेयक को सहमति दी, जो उन्हें उन देशों पर 500 प्रतिशत टैरिफ लगाने की अनुमति देगा, जो रूस से तेल खरीदते हैं। इन देशों में चीन, भारत और ब्राजील प्रमुख हैं। ट्रंप का मानना है कि रूस से तेल खरीदने वाले देश उसे यूक्रेन के खिलाफ युद्ध जारी रखने में मदद कर रहे हैं। यदि ट्रंप रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर सचमुच 500 प्रतिशत टैरिफ लगाते हैं, तो इससे भारत समेत अन्य देशों की कठिनाई बढ़ जाएगी। ट्रंप ने भारत पर पहले ही सबसे अधिक 50 प्रतिशत टैरिफ लगा रखा है। इसमें 25 प्रतिशत व्यापार समझौता न हो पाने और 25 प्रतिशत रूस से तेल खरीदने के कारण है। ट्रंप प्रधानमंत्री मोदी को महान नेता और अपना दोस्त तो बताते हैं, पर उनके प्रति अशालीन भाषा का प्रयोग करने से भी नहीं हिचकते। वे ऐसा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि मोदी उनकी मनमानी के समक्ष झुकने को तैयार नहीं। ट्रंप अपनी मनमानी से दूसरे विश्व युद्ध के बाद बनी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने में लगे हैं। उनकी मनमानी के कारण संयुक्त राष्ट्र आप्रसंगिक हो गया है। हालांकि अमेरिका में अनेक जाने-माने लोग यह चेता रहे हैं कि उनकी मनमानी के दुष्परिणाम अमेरिका को उनके सत्ता से हटाने के बाद भी भोगने पड़ेंगे, लेकिन वे किसी की सुनने के लिए तैयार नहीं।

response@jagran.com

एआइ के दौर में त्रस्त सेल्फी-वीर

हास्य-व्यंग्य

अरुणेंद्र नाथ वर्मा

अब तो फिल्मी सितारे हों या केंद्रीय मंत्री, सबके साथ गाल से गाल मिलाकर ली गई सेल्फी ही चलती है

कहते हैं कि असली सूरमा कभी युद्ध की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ धर कर बैठा नहीं रहता। उसके लिए तो हर पल चुनौतियों से भरा होता है। सूरमाओं की ऐसी ही एक श्रेणी है सेल्फी-वीरों की। असली सेल्फी-वीर वे उसे समझते थे जो किसी शीर्षस्थ नेता, फिल्मी सितारे या करोड़ों में बिके किसी आइपीएल खिलाड़ी के साथ सेल्फी लेने के लिए अपनी जान दांव पर लगा दे। वे उसे अपना जुनून और जीवन का मकसद मानते हैं। जो ऐसी भीड़ में घुसने से कतराए नहीं, जो किसी भी क्षण कुरुक्षेत्र में बदलने वाली हो। जो अपने स्मार्टफोन को प्रतिद्वंद्वियों के सिर के ऊपर से गुजार कर सबके आगे कर देने के लिए सदा तैयार रहे और इसके लिए मोड़कर छोटी कर देने वाली सेल्फी स्टिक हमेशा अपनी पाकेट में कलम की तरह खोंस कर रखे, जो सेल्फी के निशाने पर आए व्यक्ति के बेहोश होकर गिर जाने पर भी सेल्फी लेने का पावन कर्तव्य न भूले।

ऐसे ही एक सेल्फी-वीर के ड्राइंग रूम की हर दीवार उनकी सेल्फी के बड़े-बड़े प्रिंट्स से ढकी हुई थी। ड्राइंग रूम की दीवार देखकर लगता था, मानो आगंतुकों की घूरती निगाहों से त्रस्त होकर उसने अपने आराध्य को गुहार लगाई थी और उसने लाज बचाने के लिए उसका तन इन सेल्फियों से ढक दिया था। इन सुसज्जित दीवारों के बीच बिना तस्वीर वाले दरवाजे उन बैरों जैसे लगते जो किसी शानदार पार्टी में पकवानों से लदी ट्रे लेकर घूमते रहते हैं, लेकिन जिनके अपने पेट पसलियों से गाल मिला रहे होते हैं।

सेल्फी-वीर समय के साथ चलते थे। समय रहते ही चेत गए थे कि किसी वीआइपी के साथ खड़े या हाथ मिलाते हुए उनकी फोटो जो दूसरों ने खींची थीं, अब 'आउट आफ डेट' हो चुकी थीं। इंटरनेट मीडिया से पता चला या उन्होंने यूं ही जमाने की हवा को भांपकर सूंघ लिया था। इसमें मुद्दे की बात यह थी कि अनौपचारिकता के इस युग में जब सीनियर अफसर अपने जूनियर से कहता है कि उसे सर न कहकर प्रथम नाम से पुकारे, तो उस पुराने ढब की तस्वीरों की कोई बकत नहीं बची थी। जूनियर अफसर खूब समझता है कि पब्लिक के सामने की बात और है, लेकिन जिस दिन वह बास को अकेले में भी प्रथम नाम से पुकारेगा तो उसकी खटिया खड़ी कर दी जाएगी। इस घोषित अनौपचारिकता के युग में ऐसी औपचारिक फोटो अब पुराने जमाने के एक हजार रुपये वाले करेंसी नोट जैसी हो चुकी थीं। अब तो फिल्मी सितारे हों या केंद्रीय मंत्री, सबके साथ गाल से गाल मिलाकर ली गई सेल्फी ही चलती है।

जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर वे चले और खूब चले। बहुत जल्द ही उनके बैठक की हर दीवार नई-नई सेल्फियों से ढक गई। नौबत यहां तक आई कि अब उनके पास सिर्फ प्रधानमंत्री के साथ की सेल्फी नहीं थी। उनकी सबसे बड़ी अभिलाषा थी कि किसी महीने के अंतिम रविवार में वे अपने मन की बात उनके मन तक पहुंचा दें और किसी तरह उनके साथ सेल्फी ले लें। इसी बीच पड़ोसी उस दिन आश्चर्यचकित रह गए, जब वे अपनी बैठक की दीवारों पर चिपकी सेल्फियों के चित्र बेरहमी से उखाड़ कर फेंकने लगे। कारण किसी को नहीं पता था। तभी उनका पौत्र सिसकते हुए बोला कि मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। मैंने दादू को वह फोटो दिखा दी, जिसमें प्रधानमंत्री जी मुझे बहुत आत्मीयता से गले लगा रहे हैं। मुझसे बहुत गुस्से में पूछा 'ये सेल्फी कब ली' तो मैंने सच बता दिया कि यह एआइ का कमाल है। दादू ने अपनी चप्पल उतारकर मुझे दौड़ा लिया। मैं भाग कर बच निकला। घंटे भर बाद लौटा तो देखा वे बकते-झकते हुए दीवार की सारी सेल्फियां उखाड़ने और फाड़ने में लगे हैं।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

रिजर्व बैंक की ओर से सरकार को दिया जाने वाला लाभांश

(राशि करोड़ रुपये)

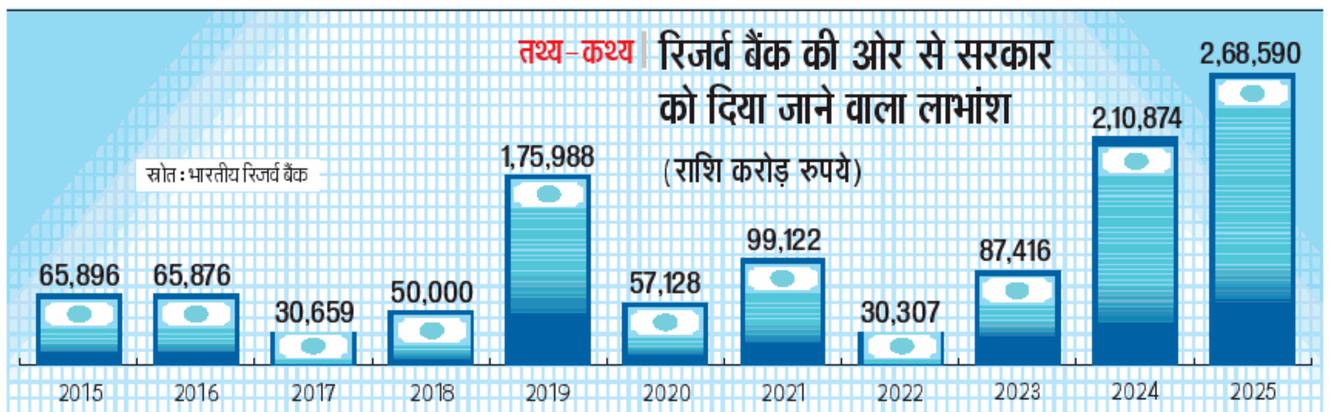

ऊर्जा

विपश्यना

विपश्यना का अर्थ है विशेष रूप से देखना या अंतर्दृष्टि प्राप्त करना। अर्थात यह एक गहन मानसिक प्रशिक्षण है, जो जीवन की सच्चाइयों का अनुभव कराकर सुखी और संतुलित जीवन जीने में सहायक होता है। इस ध्यान-विधि का उद्देश्य आत्मज्ञान और आत्मशुद्धि प्राप्त करना है। इस पद्धति में वस्तुओं की स्वाभाविक संरचना और भाव को स्वीकार करते हुए, जो जैसा है उसे उसी स्वरूप में जानने का प्रयास किया जाता है, जिससे हम अपने तन-मन को गहराई से देखकर-समझकर जीवन को अधिक सचेत और जागरूक बना सकें। बदलती दिनचर्या और बिगड़ते खानपान ने मनुष्य को कई व्याधियों का शिकार बना दिया है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी चिंता से परेशान है। इन सभी स्थितियों में विपश्यना एक अद्भुत ध्यान-प्रयोग है। इसमें क्रिया की प्रतिक्रिया शून्य हो जाने पर चित्त शांत हो जाता है। इस अभ्यास से राग-द्वेष से ऊपर उठकर समता का भाव विकसित होता है।

आरामदायक स्थिति में भी विपश्यना का अभ्यास संभव है। दोनों आंखें बंद कर प्राकृतिक श्वास पर ध्यान केंद्रित करें। जब मन भटके तो उसे धीरे-धीरे श्वास या शरीर की संवेदनाओं पर वापस ले आएं। मानसिक विचारों में आ रहे सकारात्मक परिवर्तनों पर केवल दृष्टि रखें-न तो उनमें लिप्त हों और न ही उनका विरोध करें।

इस मानसिक व्यायाम के अभ्यास से मानसिक तनाव और चिंता में कमी, एकाग्रता में वृद्धि, नकारात्मकता का शमन, व्यसनों से मुक्ति तथा आत्मविश्वास में वृद्धि का अनुभव किया जा सकता है। आवश्यक है कि जो कुछ भी अनुभव हो, उसे बिना किसी पूर्वाग्रह के ठीक वैसे ही देखा जाए, जैसा वह है। यह साधना आत्म-दर्शन की साधना है, जिसे स्व-दर्शन एवं सत्य-दर्शन भी कहा जा सकता है। यह अपनी ही अनुभूतियों के माध्यम से दुर्गुणों का निवारण करने वाली, सुखी जीवन की एक अद्वितीय कला है।

एसएन दुबे 'स्नेही'

प्रतिस्पर्धा

मोदी सरकार के कार्यकाल में एक बात बार-बार दोहराई जाती रही है-सकारात्मक प्रतिस्पर्धा। राज्यों से कहा जाता है कि वे आपस में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करें और मंत्रियों एवं सांसदों को भी प्रधानमंत्री समय-समय पर इसकी याद दिलाते रहते हैं। नए साल की शुरुआत में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जिस पहल की घोषणा की है, वह कई अन्य मंत्रियों के लिए बड़ी चुनौती बनने वाली है। दरअसल उन्होंने 52 हफ्तों यानी एक वर्ष में कुल 52 सुधारों को जमीन पर उतारने का एलान किया है। इसका अर्थ है कि रेलवे में तेजी से व्यापक बदलाव देखने को मिलेंगे। बताया जाता है कि इस घोषणा के बाद अन्य मंत्रालयों में भी सक्रियता बढ़ी है और उनसे ऐसे मुद्दों की पहचान करने तथा सुधार की दिशा तय करने को कहा गया है। यह प्रतिस्पर्धा देश के लिए अत्यंत लाभकारी साबित हो सकती है। हालांकि इससे कई लोगों की सांसें भी फूलना स्वाभाविक है।

मौके का इंतजार है

बंगाल की टीएमसी सरकार को इन दिनों चुनाव आयोग की कोई भी बात रास नहीं आ रही है, चाहे वह आम लोगों की सहूलियत से जुड़ी क्यों न हो। एसआइआर के दौरान जब चुनाव आयोग ने बुजुर्ग मतदाताओं, नौकरीपेशा लोगों और बाहर रहकर पढ़ाई कर रहे छात्रों को सुनवाई के समय व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट देने का एलान किया तो टीएमसी ने इस पर भी सवाल खड़े कर दिए। वहीं बीएलओ को मानदेय देने और एसआइआर में गड़बड़ी करने वाले अमले के खिलाफ कार्रवाई के चुनाव आयोग के निर्देशों पर भी राज्य सरकार बहाने बनाती नजर आ रही है। टीएमसी सरकार के इस रवैये को लेकर जब हाल में चुनाव आयोग से सवाल किया गया तो एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि बस मौके का इंतजार है। जब उनसे पूछा गया कि किस मौके की तलाश की जा रही है तो उनका कहना था कि चुनाव की घोषणा के बाद सब कुछ आयोग के नियंत्रण में होगा। अब देखना दिलचस्प होगा कि चुनाव की घोषणा के बाद आयोग इन अधिकारियों से किस तरह निपटता है और बीएलओ को उनका बकाया मानदेय कैसे दिलाता है।

राजरंग

सिस्टम से हारे

वे कद्दावर नेताओं में गिने जाते हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग जैसे बड़े मंत्रालय को संभालते हुए उन्हें दस वर्ष से अधिक समय हो चुका है, लेकिन लगता है कि सिस्टम का स्टीयरिंग अब तक पूरी तरह नितिन गडकरी के नियंत्रण में नहीं आ पाया है। अधिकतर लोग इसे मंत्री जी की मुखरता से जोड़ते हैं-कि वे खुलकर अफसरों की आलोचना करते हैं और सच स्वीकार करने से नहीं हिचकते। ऐसा ही उन्होंने हाल में बायो-बिटुमिन के लाइसेंस कंपनियों को वितरित करने के एक कार्यक्रम में किया। पहले शरद जोशी के एक व्यंग्य के सहारे प्रशासनिक व्यवस्था पर कटाक्ष किया। फिर खुलकर यह भी कहा कि सरकार को अंडर सेक्रेटरी, ज्वाइंट सेक्रेटरी और एडिशनल सेक्रेटरी चलाते हैं। कोई योजना लागू करानी हो तो पहले इन्हें ही 'पटाना' पड़ता है। इस बयान पर मंत्री जी ने तालियां जरूर बटोरीं, लेकिन सवाल यही है कि आखिर क्या कारण है कि मंत्री भी सिस्टम के सामने पस्त नजर आते हैं।

हसरत बाकी है

डिप्लोमेट से नेता बने पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी की भी यह चाहत रही है कि उन्हें एक संपूर्ण राजनेता के रूप में पहचाना जाए, लेकिन हर बार कुछ कसक बाकी रह ही जाती है। चेन्नई स्थित चेन्नई पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड के एक कार्यक्रम में भाग लेने के अगले ही दिन तमिलनाडु भाजपा ने उन्हें सार्वजनिक संवाद के लिए आमंत्रित किया। कुछ ही महीनों बाद तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव होने हैं और राज्य में राजनीतिक सरगर्मियां चरम पर हैं। राज्य भाजपा को उम्मीद थी कि मंत्री जी का यह संवाद स्थानीय स्तर पर सकारात्मक संदेश देगा और पार्टी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ेगा। हालांकि ऐसा लगता है कि स्थानीय मुद्दों पर उनके सहायकों ने उन्हें पूरी तैयारी नहीं कराई थी और संवाद के दौरान उपस्थित लोगों ने भी अधिकतर सवाल पेट्रोल और गैस की कीमतों जैसे विषयों तक ही सीमित रखे। नतीजतन राजनीतिक मुद्दों पर जोरदार संवाद की जो अपेक्षा थी, वह पूरी नहीं हो सकी और मंत्री को एक सशक्त राजनीतिक संदेश देने का अवसर हाथ से निकल गया।

पोस्ट

क्या कभी किसी ने यह कल्पना की होगी कि कोई रूसी राष्ट्रपति नहीं, बल्कि एक अमेरिकी राष्ट्रपति ही नाटो क्षेत्र में हमले की धमकी देगा।

रिचर्ड स्टेंगल@stengel

ईरान की कवरेज को लेकर पश्चिमी मीडिया का मौन अजीब लगता है। तेहरान के शासक हमेशा से पश्चिम की आंखों में चुभते रहे हैं, लेकिन ऐसे अप्रत्याशित संकट के दौरान कुछ भी न दिखाना हर दृष्टि से संदेह पैदा करता है। आखिर वे किस बात को छिपाना चाहते हैं?

यशवंत देशमुख@YRDeshmukh

क्रूज मिसाइलों से सत्ता परिवर्तन, युद्धपोतों से लोकतंत्र की स्थापना और स्वघोषित सिद्धांतों के माध्यम से संप्रभुता की नई इबारत लिखने जैसे जुमलों में नेतृत्व जैसा कुछ नहीं, बल्कि यह 21वीं सदी के शब्दों की चाशनी में लिपटा 19वीं सदी का साम्राज्यवाद ही है। अगर अंतरराष्ट्रीय कानून केवल कमजोरों पर लागू होते हैं तो फिर संयुक्त राष्ट्र को अपना बोरिया बिस्तर बांध लेना चाहिए। दुनिया को कायदे-कानून चाहिए, सनकी शासक नहीं।

अभिषेक सिंघवी@DrAMSinghvi

जनपथ

किसके-किसके घर धरी बंगलादेशी लिस्ट,
ममता जी बतलाइए क्यों जीवन है विलष्ट?
क्यों जीवन है विलष्ट और दिल करता धक-धक,
चोरी पकड़ न जाय बना रहता है ये शक!
मतदाता इस बार लग रहे खिसके-खिसके,
हरी फाइलें आप छुपाएंगी घर किसके??

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 177

> भारत की ऊर्जा योजना को हर दिन असल दुनिया की स्थितियों जैसे- घरों, सड़कों और काम करने की जगहों पर परखा जा रहा है, जहां अनुमान वास्तविकता से मिलते हैं। - **हरदीप सिंह पुरी,** केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री

सऊदी, यूएई व भारत मिलकर बनाएंगे ऊर्जा एक्सचेंज

भारत इस एक्सचेंज के लिए समुद्र के नीचे केबल बिछाएगा, परियोजना के लिए सरकार जल्द जारी करेगी निविदा

जयप्रकाश रंजन • जागरण

- सऊदी अरब और यूएई के साथ बड़े ऊर्जा सहयोग को तैयार भारत
- सऊदी अरब और यूएई को भारत बिजली की आपूर्ति कर सकेगा

नई दिल्ली: भारत ऊर्जा क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम उठाने की तैयारी में है। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के साथ मिलकर भारत एक अनोखे ऊर्जा एक्सचेंज प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है, जिसमें समुद्र के नीचे पावर केबल बिछाई जाएगी। इस परियोजना के तहत भारत सरकार जल्द ही निविदा जारी करेगी, जिससे इन दोनों खाड़ी देशों से भारत तक बिजली का निर्बाध आदान-प्रदान संभव हो सकेगा। बिजली मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने दैनिक जागरण को बताया कि इस एक्सचेंज से जरूरत पड़ने पर भारत इन देशों को बिजली की आपूर्ति भी कर सकेगा। यह परियोजना ऐसे समय में आ रही है जब तेल संसाधनों से समृद्ध सऊदी अरब और यूएई भविष्य में जीवाश्म ईंधन की खपत को कम करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

अधिकारी ने बताया कि हाल ही में समुद्र के नीचे बिजली आपूर्ति करने वाली केबल लाइन बिछाने के लिए निविदा प्रक्रिया शुरू करने का फैसला किया गया है। परियोजना पूरी होने पर यह दुनिया का सबसे सीमा-पार एनर्जी एक्सचेंज बन सकता है। यह कदम न केवल ऊर्जा क्रांति का प्रतीक है, बल्कि वैश्विक सहयोग की मिसाल भी पेश करेगा।

भारत अभी तक अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए सऊदी अरब और यूएई पर निर्भर है। भारत अपने कुल कच्चे तेल आयात का एक बड़ा हिस्सा इन दोनों देशों से करता है। लेकिन ये दोनों देश भविष्य में भारत को एक ऊर्जा आपूर्तिकर्ता देश के तौर पर भी देख रहे हैं। भारत की बढ़ती नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जैसे- सौर और पवन ऊर्जा, इस गठबंधन को मजबूती प्रदान करेगी। समुद्र के नीचे बिछाई जाने वाली हाई-वोल्टेज डायरेक्ट करेंट (एचवीडीसी) केबल्स से बिजली का कुशल ट्रांसमिशन सुनिश्चित होगा, जो ऊर्जा हानि को न्यूनतम रखते हुए लंबी दूरी तय कर सकेगी।

यह गठबंधन तीनों देशों के लिए आर्थिक, पर्यावरणीय और रणनीतिक लाभ भी सुनिश्चित करेगा। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और यहां ऊर्जा की खपत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही है। इस परियोजना से भारत को सऊदी अरब और यूएई से सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा आयात करने का अवसर मिलेगा। खासकर उन समयों में जब घरेलू उत्पादन में कमी हो। वैसे रेगिस्तानी इलाके में सौर ऊर्जा उत्पादन में कई तरह की चुनौतियां होती हैं लेकिन सऊदी अरब से भारत तीन घंटे आगे है। यानी सऊदी में देर शाम तक सौर ऊर्जा से तैयार बिजली को रियल टाइम में भारत आयात किया जा सकता है। दिन के अन्य समय भारत में तैयार सौर बिजली की आपूर्ति सऊदी अरब और यूएई को हो सकेगी। साथ ही सौर ऊर्जा में भारत इन दोनों देशों को प्रौद्योगिकी व मैन-पावर देगा।

यह एक्सचेंज तीनों देशों के बीच ऊर्जा ग्रिड को इंटरकनेक्ट करेगा, जिससे बिजली की कमी या अधिशेष की स्थिति में तत्काल सहायता संभव होगी। यह वैश्विक ऊर्जा बाजार में स्थिरता लाएगा और जलवायु परिवर्तन से लड़ाई में योगदान देगा। माना जा रहा है कि उक्त ऊर्जा गठबंधन भारत, सऊदी अरब और यूएई के बीच पहले से मजबूत रणनीतिक संबंधों को और गहराई प्रदान करेगा।

नवीकरणीय ऊर्जा पर फोकस कर रहा सऊदी अरब

तेल पर आधारित अर्थव्यवस्था वाला सऊदी अरब 'विजन 2030' के तहत जीवाश्म ईंधन से दूर हटकर नवीकरणीय ऊर्जा पर फोकस कर रहा है। इस गठबंधन से सऊदी को भारत से सौर और अन्य स्वच्छ ऊर्जा आयात करने का विकल्प मिलेगा, जो उसके घरेलू ग्रिड को स्थिर रखने में मदद करेगा। सऊदी अरब सरकार वैश्विक स्तर पर एक जिम्मेदार ऊर्जा उत्पादक देश के तौर पर अपनी छवि बनाने की कोशिश कर रही है। इसी तरह से यूएई ने 'नेट जीरो 2050' का लक्ष्य रखा है। वहां नवीकरणीय ऊर्जा में भारी निवेश किया जा रहा है। लेकिन बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिक मांग के कारण वहां वर्ष 20230 के बाद स्वच्छ ऊर्जा की जरूरत तेजी से बढ़ने की संभावना है। साथ ही, यह गठबंधन यूएई को ऊर्जा व्यापार में एक क्षेत्रीय हब बनाने में मदद करेगा, जहां वह अन्य खाड़ी देशों के साथ भी समन्वय कर सकेगा।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

पूर्वानुमानों को नजरअंदाज करें, प्रक्रिया को दुरुस्त करें

हर साल यही वह समय होता है, जब वित्तीय मीडिया अगले 12 महीनों के लिए अपने अनुमान सामने रख देता है। दिसंबर तक सेंसेक्स कहां होगा? कौन-से सेक्टर बेहतर प्रदर्शन करेंगे? ब्याज दरों का क्या होगा? यह सिलसिला पिछले तीन दशकों से देखते आ रहे हैं और इससे कभी कोई खास फायदा नहीं दिखा। फरवरी आते-आते ये अनुमान भुला दिए जाते हैं और अगर साल के अंत में कोई इन्हें हकीकत से मिलाकर देखे, तो नतीजे सभी के लिए असहज करने वाले होंगे।

धीरेंद्र कुमार, संपादक, हिंदी डाट वैल्यूरिसर्चआनलाइन डाट काम

बोनस

मुद्दा यह नहीं है कि अनुमान लगाने वाले अयोग्य हैं। उनमें से कई काफी समझदार भी होते हैं। असल समस्या यह है कि जिन चीजों का अनुमान लगाना वाकई मायने रखता है, वे मूल रूप से अनिश्चित होती हैं। और जो चीजें अनुमान के दायरे में होती हैं, वे ज्यादा काम की नहीं होतीं। 2020 में जिंदगी को बदल देने वाली महामारी को कोई नहीं देख पाया। बहुत कम लोगों ने रिकवरी की रफ्तार का अंदाजा लगाया था। नीतियों में बदलाव, रेगुलेटरी फैसले और बाजार के पसंदीदा नामों का उभरना और गिरना, सब समय पर होता है।

डेरिवेटिव ट्रेडिंग को लेकर रिटेल निवेशकों का उत्साह कम होने का नाम नहीं ले रहा। रेगुलेटर्स के आंकड़े बताते हैं कि वायदा एवं विकल्प में ज्यादातर व्यक्तिगत ट्रेडर पैसा गंवाते हैं। फिर भी इसका आकर्षण बना रहता है।

दूसरी ओर, म्यूचुअल फंड धीरे-धीरे मुख्य धारा की बचत का जरिया बन चुके हैं। एसआइपी अब मिडिल क्लास के वित्तीय व्यवहार का हिस्सा बन गई है, जो 20 साल पहले कल्पना जैसी लगती। अगली चुनौती लोगों को निवेश के लिए मनाने की नहीं है। चुनौती यह है कि उन्हें उस चीज को बेवजह जटिल बनाने से रोका जाए, जो असल में सरल रहनी चाहिए। ज्यादातर निवेशकों के लिए, तीन या चार सही चुने गए फंड काफी होते हैं।

अफसोस की बात है कि बीमा की गलत बिक्री अब भी बनी हुई है। परिवारों को जिस सुरक्षा की जरूरत होती है और जो उन्हें बेची जाती है, उसके बीच का फासला अब भी बड़ा है। तो इस साल क्या करना चाहिए? वही, जो पिछले साल और उससे पहले के सालों में करना चाहिए था।

अपनी वित्तीय जरूरतों को टाइमलाइन पर रखें। अगले दो या तीन साल में जिन पैसों की जरूरत है, उन्हें सुरक्षित, स्थायी-आय निवेश में रखें। लंबे समय के पैसे को कुछ गिने-चुने डाइवर्सिफाइड इक्विटी फंड्स में लगाएं, बेहतर है कि सिस्टमैटिक प्लान के जरिये ऐसा करें। पर्याप्त टर्म इंश्योरेंस और हेल्थ कवर बनाए रखें। इमरजेंसी फंड आसानी से उपलब्ध रहे।

यह सलाह उबाऊ लगती है, ठीक इसलिए क्योंकि यह काम करती है। यह चुनावी नतीजों, भू-राजनीति या किसी रणनीतिकार के लक्ष्य पर निर्भर नहीं करती। जिसने 2015, 2020 और 2022 में इसे लगातार अपनाया, वह आज लगभग तय तौर पर उस व्यक्ति से बेहतर स्थिति में है, जिसने बाजार को टाइम करने या हर साल के फैशनेबल सेक्टर के पीछे भागने की कोशिश की। आने वाले महीनों में सरप्राइज मिलेंगे, कुछ अच्छे, कुछ कम अच्छे। बाजार ऐसे तरीकों से हिलेंगे, जो बाद में तो साफ दिखेंगे, लेकिन पहले से अनुमान लगाना नामुमकिन होगा। समझदार निवेशक की प्रतिक्रिया बेहतर अनुमान नहीं, बल्कि ऐसा पोर्टफोलियो बनाना है, जो हर स्थिति का सामना कर सके।

'वित्तीय घाटे व कर्ज कम करने पर केंद्रित होगा आगामी बजट'

नई दिल्ली, एएनआइ: प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (पीएम-ईएसी) के चेयरमैन महेंद्र देव ने शनिवार को बताया कि केंद्रीय बजट 2026-27 वित्तीय घाटे के नियंत्रण और कर्ज कम करने पर केंद्रित हो सकता है। यह सरकार की व्यापक विकसित भारत योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। देव ने एक कार्यक्रम में कहा कि यह बजट विकसित भारत योजना का हिस्सा है और इसके रचनाकार वित्तीय घाटे पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

महेंद्र देव

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के चेयरमैन ने महेंद्र देव कहा, यह बजट विकसित भारत योजना का हिस्सा

महेंद्र देव ने बताया कि भारत ने कोरोना महामारी के बाद वित्तीय समेकन में महत्वपूर्ण प्रगति की है। वित्तीय घाटा कोरोना के दौरान लगभग नौ प्रतिशत से घटकर इस वर्ष लगभग 4.8 प्रतिशत हो गया है। सरकार का लक्ष्य वित्तीय घाटे को लगभग 4.4% तक लाना है।

विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने की जरूरतों का उल्लेख करते हुए देव ने कहा कि निरंतर उच्च वृद्धि, उच्च निवेश और बेहतर दक्षता पर निर्भर करती है। यदि आप 7-8 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको लगभग 35 प्रतिशत निवेश दर की आवश्यकता है। वर्तमान निवेश दर लगभग 30 प्रतिशत है, जिसे सुधारने की आवश्यकता है।

एनएसई आइपीओ को इसी माह मंजूरी संभव

चेन्नई, एएनआइ: कैपिटल मार्केट रेगुलेटर सेबी के चेयरमैन तुहिन कांत पांडे ने शनिवार को कहा कि नेशनल स्टाक एक्सचेंज (एनएसई) के बहुप्रतीक्षित आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आइपीओ) को इसी महीने मंजूरी मिल सकती है।

यहां एक प्रेस कान्फ्रेंस में पांडे ने कहा कि रेगुलेटर जल्द ही एनएसई को नो-आब्जेक्शन सर्टिफिकेट (एनओसी) जारी कर सकता है। इसके बाद आइपीओ की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना एनएसई पर निर्भर करेगा। एक कथित डार्क फाइबर बेस की वजह से एनएसई की आइपीओ योजना वर्षों से अटकी हुई है। इस मामले में आरोप थे कि 2010 से 2014 के बीच कुछ हाई-फ्रीक्वेंसी ट्रेडर्स को तेज प्राइवेट कम्युनिकेशन लाइनों के जरिए एनएसई के को-लोकेशन सर्वर तक खास पहुंच दी गई थी। इससे वे दूसरे बाजार भागीदारों की तुलना में ज्यादा तेजी से ट्रेड कर पाते थे।

2025 में रिकार्ड के करीब रहा चावल निर्यात

रायपुर, रायटर: प्रतिबंध हटने का भारत के चावल निर्यात पर सकारात्मक असर रहा है और इससे 2025 के दौरान भारत का चावल निर्यात रिकार्ड स्तर के करीब रहा है। सरकार अधिकारियों और उद्योग से जुड़े लोगों के अनुसार, भारत के चावल निर्यात में पिछले वर्ष 19.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो कि रिकार्ड में दूसरा सबसे उच्चतम स्तर है।

- प्रतिबंध हटने के कारण पिछले वर्ष भारत का चावल निर्यात 2.15 करोड़ टन रहा
- गैर-बासमती चावल निर्यात 25 प्रतिशत बढ़कर 1.51 करोड़ टन रहा

नाम ने प्रकाशित करने की शर्त पर एक सरकारी अधिकारी ने बताया कि सरकार की ओर से मार्च में प्रतिबंध हटाने के बाद भारतीय निर्यात तेजी से शुरू हुआ। रिकार्ड उत्पादन के साथ आपूर्ति में सुधार के चलते भारत ने 2022 और 2023 में लगाए गए अंतिम निर्यात प्रतिबंध हटा दिए।

अधिकारी ने कहा कि 2024 में 1.80 करोड़ टन के मुकाबले 2025 में भारत का चावल निर्यात 2.15 करोड़ टन रहा है। यह 2022 के रिकार्ड 2.23 करोड़ टन के करीब है। पिछले वर्ष गैर-बासमती चावल का निर्यात 25 प्रतिशत बढ़कर 1.51 करोड़ टन रहा है, जबकि बासमती निर्यात आठ प्रतिशत बढ़कर रिकार्ड 64 लाख टन रहा है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है और बेहतर आपूर्ति के चलते इसने थाईलैंड और वियतनाम जैसे प्रतिद्वंद्वियों के निर्यात को सीमित कर दिया है। इसी का नतीजा है कि एशिया में चावल की कीमतें लगभग एक दशक में सबसे निचले स्तर पर पहुंच गईं और अफ्रीका व अन्य क्षेत्रों में गरीब उपभोक्ताओं के लिए लागत कम हुई।

इन देशों के लिए बढ़ा भारत का गैर-बासमती चावल निर्यात

एक अन्य सरकारी अधिकारी ने बताया कि पिछले वर्ष भारत के गैर-बासमती चावल का निर्यात बांग्लादेश, बेनिन, कैमरून, आइवरी कोस्ट और जिबूती के लिए तेजी से बढ़ा है। वहीं, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात और ब्रिटेन ने वर्ष के दौरान प्रीमियम बासमती चावल की खरीद बढ़ाई। भारत आमतौर पर थाईलैंड, वियतनाम और पाकिस्तान के कुल निर्यात से अधिक चावल का निर्यात करता है।

राष्ट्रीय जागरण

एक नजर में

अंकिता हत्याकांड में वीआइपी का नाम उजागर करने के लिए केस

देहरादून: अंकिता हत्याकांड प्रकरण में वीआइपी का नाम उजागर करने के लिए वसंत विहार थाने में मुकदमा दर्ज किया गया है। माना जा रहा है कि पुलिस महानिदेशक उत्तराखंड को दी गई संबंधित शिकायत की जांच के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सीबीआइ जांच की संस्तुति की है। पुलिस महानिदेशक को दी गई शिकायत में पर्यावरणविद पद्मभूषण डा. अनिल प्रकाश जोशी ने कहा कि वर्तमान में चल रही चर्चा में अंकिता भंडारी हत्याकांड में कुछ अज्ञात व्यक्तियों, जिन्हें वीआइपी के रूप में संदर्भित किया जा रहा है, के विरुद्ध अपराध में संलिप्त होने का आरोप लगाया जा रहा है। (जासं)

राज्यपाल ने एससी कोटा सहित दो बिल लौटाए

बेंगलुरु: कर्नाटक विधानसभा द्वारा पारित दो बिलों को राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने स्पष्टीकरण के लिए राज्य सरकार को वापस भेज दिया है, जबकि 19 लंबित बिलों को मंजूरी दे दी। इन बिलों के अलावा, कर्नाटक नफरती भाषण और नफरती अपराध (रोकथाम) बिल राज्यपाल के पास विचाराधीन है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया ने कहा कि वह राज्यपाल से मिलेंगे व नफरती भाषण बिल के बारे में उन्हें स्पष्टीकरण देंगे। वहीं, भाजपा की कर्नाटक इकाई ने कहा कि वह राज्यपाल से नफरती भाषण बिल को मंजूरी न देने का आग्रह करेगी। (प्रेट्र)

पूर्व सैनिकों की बेटियों की शादी को मिल रही एक लाख की सहायता

नई दिल्ली: पूर्व सैनिकों की बेटियों की शादी के लिए अब एक लाख रुपये सहायता मिल रही है। विवाह अनुदान के अंतर्गत वित्तीय सहायता 50 हजार रुपये से बढ़ाकर एक लाख रुपये प्रति लाभार्थी कर दी गई है। यह अनुदान पूर्व सैनिकों की अधिकतम दो पुत्रियों को मिलेगा। रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि पूर्व सैनिक कल्याण विभाग की विभिन्न योजनाओं के तहत पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों के लिए वित्तीय सहायता में शत प्रतिशत वृद्धि की गई है। पूर्व सैनिकों को यह बढ़ी हुई सहायता केंद्रीय सैनिक बोर्ड के माध्यम से दी जा रही है। (एएनआइ)

यूपीएससी परीक्षाओं में उम्मीदवारों की अब चेहरे से होगी पहचान

- इससे और अधिक मजबूत होगी परीक्षा प्रक्रिया की शुचिता
- संघ लोक सेवा आयोग ने अपनी वेबसाइट पर जारी किया नोट

नई दिल्ली, प्रेट्र : संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा आयोजित भर्ती परीक्षाओं में शामिल होने वाले सभी अभ्यर्थियों का परीक्षा केंद्रों पर चेहरा प्रमाणीकरण किया जाएगा। यानी चेहरे के जरिये उनकी पहचान सत्यापित की जाएगी। अधिकारियों ने शनिवार को कहा कि इससे परीक्षा प्रक्रिया की शुचिता और अधिक मजबूत होगी।

आयोग की वेबसाइट पर जारी नोट में कहा गया, यूपीएससी परीक्षा में शामिल होने वाले सभी अभ्यर्थियों के चेहरे का परीक्षा केंद्र पर प्रमाणीकरण किया जाएगा। यूपीएससी सरकारी नौकरियों के लिए विभिन्न भर्ती परीक्षाएं आयोजित करता है, जिनमें भारतीय प्रशासनिक सेवा (आइएएस), भारतीय विदेश सेवा (आइएफएस) और भारतीय पुलिस सेवा (आइपीएस) परीक्षा भी शामिल हैं।

यूपीएससी ने 14 सितंबर, 2025 को आयोजित एनडीए (राष्ट्रीय रक्षा अकादमी) और एनए (नौसेना अकादमी) द्वितीय परीक्षा, 2025 तथा सीडीएस (संयुक्त रक्षा सेवा) द्वितीय परीक्षा, 2025 के दौरान त्वरित और सुरक्षित अभ्यर्थी सत्यापन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता-(एआइ) सक्षम चेहरा प्रमाणीकरण प्रौद्योगिकी का परीक्षण करने के लिए पायलट प्रोग्राम संचालित किया था। यह पायलट प्रोग्राम गुरुग्राम के चयनित केंद्रों पर किया गया, जहां अभ्यर्थियों की चेहरों का उनके पंजीकरण प्रपत्रों में उपलब्ध कराई गई तस्वीरों से डिजिटल रूप से मिलान किया गया था। यूपीएससी के अध्यक्ष अजय कुमार ने कहा, नए सिस्टम ने प्रत्येक उम्मीदवार के लिए सत्यापन समय को औसतन केवल आठ से 10 सेकंड तक कम कर दिया, जिससे प्रवेश प्रक्रिया काफी सरल हो गई।

90 की उम्र में चौथी शादी की तैयारी, पुत्र ने किया जानलेवा हमला

नईदुनिया प्रतिनिधि, रीवा : मध्य प्रदेश के रीवा में अजीब-ओ-गरीब मामला सामने आया है। यहां सिलपरा निवासी सेवानिवृत्त पटवारी रामरतन वर्मा 90 साल की उम्र में चौथी शादी करने की तैयारी में थे। पत्नियों को पता चला तो तीनों ने संपत्ति बंटवारे के लिए दावा ठोंक दिया।

शुक्रवार रात विवाद हुआ, जिसमें तीसरी पत्नी पार्वती देवी के पुत्र महेंद्र वर्मा ने हमला कर दिया। पटवारी रामरतन को गंभीर चोटें आई हैं। संजय गांधी अस्पताल के आइसीयू में उपचार चल रहा है।

जिले के बिछिया थानाप्रभारी मनीषा उपाध्याय के अनुसार, पटवारी रामरतन तीनों पत्नियों के साथ एक ही मकान में रहते हैं। तीनों के लिए अलग-अलग कमरे हैं। पार्वती का कहना है कि रामरतन ने पुत्र महेंद्र को अपनी संतान मानने से इन्कार कर दिया, जिससे आक्रोशित होकर उसने डंडे से हमला कर दिया। पुलिस ने महेंद्र को गिरफ्तार कर लिया है।

बांझपन के लिए पुरुष भी होते हैं जिम्मेदार

- भारत में किए गए एक अध्ययन में विज्ञानियों ने किया दावा
- गर्भधारण नहीं होने का कारण बताएगी जेनेटिक तकनीक

नई दिल्ली, प्रेट्र : आमतौर पर बच्चे नहीं होने के लिए महिलाओं को जिम्मेदार ठहराया जाता है, लेकिन एक अध्ययन में यह पता चला है कि बांझपन के लिए पुरुष भी जिम्मेदार होते हैं। जेनेटिक तकनीक से पुरुषों में बांझपन के कारण का पता लगाया जा सकता है। यह अध्ययन संतान के लिए तरस रहे दंपतियों के लिए उम्मीद की किरण है।

दरअसल बांझपन से जूझ रहे कई दंपतियों के लिए सबसे अधिक हताश करने वाली बात यह है कि इलाज के बावजूद गर्भधारण नहीं कर पाने का कारण डाक्टर उन्हें नहीं समझा पाते। भारत में किए गए इस अध्ययन में दावा किया गया है कि नई जेनेटिक तकनीक से उनके इस सवाल का जवाब मिल सकता है। यह अध्ययन भारत में विकसित नवाचार को भी उजागर करता है। 'जर्नल आफ असिस्टेड रिप्रोडक्शन एंड जेनेटिक्स' में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, 2021 और 2024 के बीच गंभीर शुक्राणु समस्याओं से ग्रस्त 247 भारतीय पुरुषों का विश्लेषण किया गया। यह अध्ययन अहमदाबाद स्थित फ्रिगे इंस्टीट्यूट आफ ह्यूमन जेनेटिक्स ने आइसीएमआर (भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद) के सहयोग से किया। अध्ययन में कहा गया कि पुरुष देखने में स्वस्थ लग सकता है, और नियमित ब्लड टेस्ट के परिणाम भी सामान्य हो सकते हैं, लेकिन वीर्य की जांच करने पर या तो शुक्राणु बिल्कुल नहीं मिलते या उनकी संख्या बहुत कम होती है। दुर्भाग्यवश, अधिकांश मामलों में इसका कारण पता नहीं चलता।

अधिकांश बांझपन क्लीनिक गुणसूत्र विश्लेषण व वाई-गुणसूत्र परीक्षण जैसे मानक जेनेटिक परीक्षणों पर निर्भर करते हैं। ये परीक्षण केवल बड़े जेनेटिक परिवर्तनों का पता लगाते हैं।

मुंबई स्थित आइसीएमआर-राष्ट्रीय प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के विज्ञानी और अध्ययन करने वाली टीम के सदस्य डा. दीपक मोदी ने बताया कि अध्ययन में केवल तीन पुरुषों में गुणसूत्र संबंधी असामान्यताएं और आठ पुरुषों में वाई-गुणसूत्र माइक्रोडिलीशन या सूक्ष्म विलोपन का पता चला। इसका मतलब यह है कि इस तरह के नियमित परीक्षण से 247 पुरुषों में से केवल 11 में ही बांझपन का कारण का पता चल सकता था। इसलिए अधिकांश पुरुषों को उनकी स्थिति का कोई स्पष्ट कारण नहीं मिल पाया। इसलिए शोधकर्ताओं ने डीएनए सीक्वेंसिंग की नई तकनीकों का उपयोग किया। 120 पुरुषों पर टारगेटेड सीक्वेंसिंग की प्रक्रिया की गई।

48 पुरुषों पर संपूर्ण एक्सोम सीक्वेंसिंग की प्रक्रिया की गई, जिसमें अक्सर रोगी और दोनों माता-पिता शामिल होते हैं। एक्सोम सीक्वेंसिंग जीन के सभी प्रोटीन-कोडिंग क्षेत्रों की सिक्वेंसिंग करने के लिए जीनोमिक तकनीक है। इनसे निदान की सफलता दर में छह से आठ प्रतिशत की अतिरिक्त वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप 247 पुरुषों में से 19 में जेनेटिक निदान की पुष्टि हुई।

नीतीश को भारत रत्न देने की मांग करने वाले त्यागी से जदयू ने किया किनारा

राब्यू, पटना : बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भारत रत्न देने की मांग करने वाले पूर्व सांसद केसी त्यागी से जदयू ने किनारा कर लिया है। त्यागी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिख कर कहा था कि नीतीश कुमार समाजवादी आंदोलन के अनमोल रत्न हैं।

त्यागी ने समाजवादी पृष्ठभूमि के संदर्भ में स्व. चौधरी चरण सिंह एवं स्व. कर्पूरी ठाकुर की चर्चा की थी, जिन्हें नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में भारत रत्न दिया गया। इससे पहले भी कई नेताओं ने नीतीश कुमार को भारत रत्न देने की मांग की थी। लेकिन, उन पर कभी जदयू की प्रतिक्रिया नहीं आई। जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा कि हाल के दिनों में केसी त्यागी के कई बयान आए हैं, ये पार्टी के आधिकारिक स्टैंड नहीं हैं। त्यागी इसे निजी क्षमता में दे रहे हैं। पार्टी के कार्यकर्ताओं को तो यह भी पता नहीं है कि केसी त्यागी जदयू में हैं या नहीं। उनके वक्तव्यों को जदयू से जोड़ कर नहीं देखा जाना चाहिए।

ओडिशा में विमान दुर्घटनाग्रस्त, पायलट समेत छह लोग घायल

विमान से रिस रहे ईंधन पर नियंत्रण करने का प्रयास करती दमकल टीम • जागरण

जागरण संवाददाता, राउरकेला (सुंदरगढ़) : ओडिशा में भुवनेश्वर से राउरकेला आ रहे 12 सीटर एक निजी विमान की तकनीकी खराबी के कारण खेत में आपात लैंडिंग करानी पड़ी। इस दौरान इंडिया वन एयर कंपनी का कैरावैन 208 श्रेणी का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में दोनों पायलट समेत छह लोग घायल हो गए। विमान में चार यात्री सवार थे।

विमान शनिवार अपराह्न 1.40 बजे दुर्घटनाग्रस्त हुआ। लैंडिंग के दौरान विमान का दाहिना विंग पास के एक पेड़ की डाल से टकराने के कारण टूट गया। इसके बाद विमान जमीन से टकराते हुए करीब 100 मीटर तक घिसटता चला गया। हादसे में नोएडा निवासी पायलट कैप्टन नवीन कडंगा और कैप्टन तरुण श्रीवास्तव के अलावा यात्रियों में राउरकेला के सुशांत कुमार बिस्वाल, सुंदरगढ़ की अनिता साहू तथा भुवनेश्वर के सुनील अग्रवाल व सबिता अग्रवाल घायल हो गए।

नागरिक उड्डयन निदेशालय ने एक बयान जारी कर कहा कि दोपहर 1.18 बजे विमान का संपर्क कोलकाता एटीसी रडार से टूट गया, था। पायलटों की सतर्कता से विमान में सवार सभी लोगों की जान बच गई। हादसे की जांच की जाएगी।

'अमेरिका की निंदा की जगह चुप रह हालात बदलना जरूरी'

साक्षात्कार

रुमनी घोष • जागरण

- वेनेजुएला में राजदूत रहे यूके सिन्हा ने पूरे प्रकरण को सिर्फ तेल का खेल बताया
- जिसकी लाठी, उसकी भैंस वाली प्रवृत्ति रोकने को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में रिफार्म जरूरी

यशवर्धन कुमार सिन्हा • जागरण

नई दिल्ली: अमेरिका द्वारा वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को उठा ले जाने की घटना से अंतरराष्ट्रीय कानून के दायरे के लिए खींची गई लकीरें मिटती दिख रही हैं। अराजकता और अनिश्चितता के बीच विश्व के सभी देशों के साथ भारत की कूटनीति व रणनीति दोनों की समीक्षा हो रही है। वर्ष 2007 से 2009 तक वेनेजुएला में राजदूत रहे यूके सिन्हा का मानना है कि इस मामले में भारत ने सधी प्रतिक्रिया दी है और यही सही रुख है। अमेरिका की निंदा से कुछ नहीं बदलेगा। इसके बजाय चुप रहकर हालात को बदलना ज्यादा जरूरी है। उन्होंने कहा, अगर प्रतिक्रिया देने पर अमेरिका 200 प्रतिशत टैरिफ लगा देता है, तो क्या हम उस स्थिति को संभाल पाएंगे?

एसोसिएशन आफ इंडियन डिप्लोमैट्स के अध्यक्ष सिन्हा का मानना है कि अमेरिका ने तेल भंडार पर कब्जे के लिए ही यह हमला किया है। अमेरिका के नार्कोटेरेरिज्म की दलील को खारिज करते हुए वह बताते हैं कि वेनेजुएला के पास दुनिया का सबसे बड़ा तेल भंडार है। यहां 303 बिलियन बैरल तेल भंडार है। यह सऊदी, कुवैत और रूस की तुलना में ज्यादा है। फर्क यह है कि इनका जो तेल है, उसे 'हैवी सावर क्रूड' कहते हैं। इसे रिफाइन करने की लागत ज्यादा है और प्रक्रिया थोड़ी लंबी है। भारत में रिलायंस या एसआर जैसी दो या तीन कंपनियां के पास ही इस क्रूड आयल को रिफाइन करने की सुविधा है। वेनेजुएला में 1999 से पहले अमेरिकी व यूरोपीय कंपनियों ने काफी दोहन किया, लेकिन उसके बाद पूर्व राष्ट्रपति ह्यूगो शेवाज ने तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर दिया। मुनाफा कम होने से अमेरिकी कंपनियां छोड़कर चली गईं। अब अमेरिका फिर से वहां कब्जा करना चाहता है।

अमेरिका की नजर सिर्फ तेल या अन्य संसाधनों पर भी होने के सवाल पर यूके सिन्हा ने कहा कि वेनेजुएला में सोना, लौह अयस्क, रेयर अर्थ मेटेरियल भी मौजूद हैं। ट्रंप की नजर इन चीजों पर भी होगी। अमेरिकी राष्ट्रपति ग्रीनलैंड को धमका रहे हैं। मैक्सिको, क्यूबा पर भी नजर है। जिसकी लाठी, उसकी भैंस... वाली प्रवृत्ति रोकने को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में रिफार्म मात्र रास्ता आता है।

चीन जैसी '1000 टैलेंट प्रोग्राम' की जरूरत

अमेरिका के साथ रिश्ते बिगड़ने पर भारत के रुख के बारे में पूछने पर सिन्हा ने सुझाव दिया कि भारत को चीन की तरह '1000 टैलेंट प्रोग्राम' चलाना चाहिए। इसके तहत अमेरिका गए प्रतिभाशाली युवा किसी और देश में जाने के बजाय भारत लौट सकेंगे। उनके लिए सरकार विशेष प्रोग्राम चलाए और नया क्षेत्र विकसित करे।

हम वेनेजुएला नहीं हैं...

क्या भारत के साथ अमेरिका कभी ऐसा व्यवहार कर सकता है? इस पर सिन्हा का कहना है पहला, हम वेनेजुएला नहीं हैं...। दूसरा, हम 145 करोड़ हैं और तीसरा, हम परमाणु शक्ति हैं। मुझे नहीं लगता कि हमारे साथ इस तरह के व्यवहार की कोई वजह है। अमेरिका के साथ अब भी हमारे गहरे संबंध हैं। हम चीन को प्रोत्साहन नहीं दे रहे हैं। जहां तक रूस से तेल खरीदने की बात है तो यदि वेनेजुएला का तेल बाजार में आ जाता है और वह सस्ता हो, तो हम रूस से तेल खरीदना कम करके अमेरिका से तेल खरीदने लगेंगे।

पूरा साक्षात्कार पढ़ने के लिए स्कैन करें।

शोध के पैसों से की 24 यात्राएं, कार, एसी, फ्रिज भी खरीदे

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर: जबलपुर स्थित नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय में पंचगव्य शोध के नाम पर करोड़ों रुपये की राशि के दुरुपयोग का मामला सामने आया है। जिस योजना का उद्देश्य गाय के दूध, गोबर और गोमूत्र से जनहितकारी उत्पाद विकसित करना था, उसकी राशि से जिम्मेदारों ने कार, एसी, फ्रिज सहित अन्य सुविधाजनक वस्तुएं खरीद ली। संभागायुक्त धनंजय सिंह ने जांच के निर्देश दिए थे। रिपोर्ट के अनुसार, पंचगव्य अनुसंधान योजना में वाहन खरीदी का कोई प्रविधान नहीं था। इसके बावजूद करीब 7.39 लाख रुपये की कार खरीदी गई। पेट्रोल-डीजल पर लगभग तीन लाख और वाहन मरम्मत के नाम पर दो लाख, 76 हजार रुपये खर्च कर दिए गए। 24 यात्राओं में करीब तीन लाख रुपये खर्च कर दिए गए। वर्ष 2011 से 2018 के बीच शासन से मिले 3 करोड़ 50 पचास रुपये में से प्रशासनिक व्यय की सीमा महज एक प्रतिशत थी। 60 लाख शोध के बजाय अधिकारियों की सुख-सुविधाओं पर खर्च किए गए हैं।

'पाकिस्तान का संविधान संशोधन आपरेशन सिंदूर में उनकी कमियों की स्वीकारोक्ति है'

- पाक ने नेशनल स्ट्रेटजी कमान बनाकर शक्तियों का केंद्रीयकरण किया : सीडीएस
- पाक में ये बदलाव केवल थल सेना को प्राथमिकता देने वाली मानसिकता को दर्शाते हैं

सीडीएस जनरल अनिल चौहान पुणे में एक कार्यक्रम के दौरान● आइएएनएस

पुणे, प्रेट्र : सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने शुक्रवार को कहा कि 'आपरेशन सिंदूर' ने पाकिस्तान को संविधान संशोधन करने के लिए मजबूर किया, जो इस बात की स्वीकारोक्ति है कि पड़ोसी देश के लिए सब कुछ ठीक नहीं रहा।

'पुणे पब्लिक पालिसी फेस्टिवल' को संबोधित करते हुए जनरल चौहान ने कहा कि पाकिस्तान में हाल ही में जल्दबाजी में किए गए संवैधानिक बदलाव बताते हैं कि उस आपरेशन के दौरान उन्हें अपनी व्यवस्था में कई कमियां और खामियां मिलीं। उन्होंने कहा, 'आपरेशन सिंदूर अभी सिर्फ थमा है।' पाकिस्तान के संविधान के अनुच्छेद 243 में किए गए संशोधनों पर चर्चा करते हुए सीडीएस ने कहा कि वहां 'ज्वाइंट चीफ्स आफ स्टाफ कमेटी' के अध्यक्ष का पद समाप्त कर दिया गया है और उसके स्थान पर 'चीफ आफ डिफेंस फोर्सेस' (सीडीएफ) का पद बनाया गया है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने यह भी प्रविधान किया है कि यह पद केवल सेना प्रमुख (सीओएएस) के पास ही रहेगा, जो संयुक्त कमान के मूल सिद्धांत के खिलाफ है। जनरल चौहान ने कहा कि पाकिस्तान ने नेशनल स्ट्रेटजी कमान और आर्मी राकेट फोर्स कमान बनाकर शक्तियों का केंद्रीयकरण किया है।

उन्होंने बताया कि अब वहां थल सेना प्रमुख जमीनी संचालन, संयुक्त अभियान और परमाणु मामलों के लिए भी जिम्मेदार होगा। पाक में ये बदलाव केवल थल सेना को प्राथमिकता देने वाली मानसिकता को दर्शाते हैं।

हाइपरसोनिक मिसाइलों से ध्वनि की गति से पांच गुना तेज होगा प्रहार

- मिसाइलों के विकास में हैदराबाद स्थित डीआरडीएल ने अहम उपलब्धि हासिल की
- हाइपरसोनिक मिसाइल कार्यक्रम के लिए स्क्रैमजेट इंजन का किया सफल परीक्षण

हैदराबाद, एएनआइ : हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइलों से आने वाले समय में अब दुश्मन पर ध्वनि की गति से पांच गुना अधिक तेज गति से प्रहार संभव हो पाएगा। हैदराबाद स्थित रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की प्रयोगशाला-रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल) ने हाइपरसोनिक मिसाइलों के विकास में एक अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। डीआरडीएल ने 9 जनवरी, 2026 को अपनी अत्याधुनिक स्क्रैमजेट कनेक्ट पाइप टेस्ट (एससीपीटी) केंद्र में अपने एक्टिवली कूल्ड स्क्रैमजेट फुल स्केल कंबस्टर का सफलतापूर्वक एक व्यापक दीर्घकालिक जमीनी परीक्षण किया, जिसमें 12 मिनट से अधिक का रन टाइम हासिल किया गया।

रक्षा मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, यह महत्वपूर्ण उपलब्धि 25 अप्रैल, 2025 को किए गए पूर्व लघु परीक्षण पर आधारित है, जो लंबी अवधि का परीक्षण था। यह हाइपरसोनिक मिसाइलों के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है। कंबस्टर और परीक्षण केंद्र का डिजाइन और विकास डीआरडीएल ने किया। इसे उद्योग भागीदारों द्वारा साकार किया गया। इस सफल परीक्षण से भारत उन्नत एयरोस्पेस क्षमताओं में अग्रणी स्थान पर आ गया है। हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल ध्वनि की गति से पांच गुना अधिक (6,100 किमी/घंटे से अधिक) गति से लंबी उड़ान में सक्षम है। यह उपलब्धि अत्याधुनिक एयर-ब्रीदिंग इंजन के माध्यम से हासिल की जाती है, जो लंबी अवधि की उड़ान बनाए रखने के लिए सुपरसोनिक कंबशन का उपयोग करता है।

रक्षा मंत्री ने परीक्षण टीमों को बधाई दी

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने फुल स्केल एक्टिवली कूल्ड लांग ड्यूरेशन स्क्रैमजेट इंजन के सफल ग्राउंड परीक्षण के लिए डीआरडीओ, उद्योग भागीदारों और शिक्षाविदों को बधाई दी। एक्स पर रक्षा मंत्री ने लिखा, हैदराबाद स्थित डीआरडीओ की प्रयोगशाला डीआरडीएल ने हाइपरसोनिक मिसाइलों के विकास में एक अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। एक जनवरी को डीआरडीओ मुख्यालय में बैठक में रक्षा मंत्री ने कहा था कि डीआरडीओ द्वारा विकसित हथियारों ने आपरेशन सिंदूर में निर्णायक भूमिका निभाई।

> देश के लिए ऐसी उपलब्धि को हासिल करना हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल विकास कार्यक्रम के लिए ठोस आधार है।
> **- राजनाथ सिंह,** रक्षा मंत्री

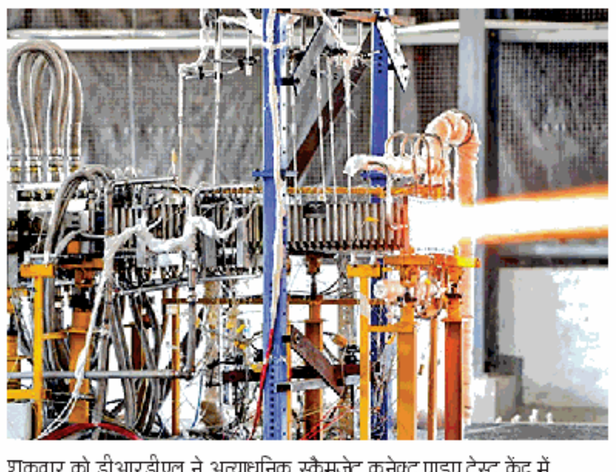

शुक्रवार को डीआरडीएल ने अत्याधुनिक स्क्रैमजेट कनेक्ट पाइप टेस्ट केंद्र में एक्टिवली कूल्ड स्क्रैमजेट फुल स्केल कंबस्टर का सफल परीक्षण किया ● प्रेट्र

एक नजर में

वृंदावन में संत प्रेमानंद के फ्लैट में लगी आग

वृंदावन : संत प्रेमानंद के श्रीकृष्ण शरणम् स्थित फ्लैट में शनिवार रात साढ़े नौ बजे आग लग गई। सूचना पर पहुंचे अनुयायियों ने आग पर काबू पाया। घटना के संबंध में कोई अधिकृत जानकारी नहीं दी गई है। श्रीकृष्ण शरणम् सोसायटी के फ्लैट नंबर 212 में संत प्रेमानंद रहते थे। यहां से रोज रात श्री राधा केलिकुंज आश्रम तक पदयात्रा होती थी। सर्दी आने पर संत आश्रम में ही निवास करने लगे। शनिवार रात साढ़े नौ बजे फ्लैट से धुआं निकलता देखा गया। शिष्य वहां पहुंचे और फायर ब्रिग्रेड पहुंचने तक आग पर काबू पा लिया गया।(जासं)

हुगली में नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म, टीएमसी नेता समेत दो गिरफ्तार

कोलकाता : बंगाल के हुगली जिले में सुनसान पड़े एक कारखाने में एक नाबालिग लड़की से सामूहिक दुष्कर्म किया गया। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार को बताया कि इस वारदात के संबंध में एक स्थानीय तृणमूल नेता समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के अनुसार, गुरुवार शाम को 16 वर्षीय पीड़िता सहेली के साथ बंद पड़े हिंद मोटर कारखाने में गई थी। गिरफ्तार आरोपितों में से एक की पहचान दीपांकर अधिकारी उर्फ सोनाई के रूप में हुई है, जो तृणमूल कांग्रेस का युवा नेता है।(राब्यू)

मोदी ने सोमनाथ मंदिर में किया ओमकार मंत्रोच्चार, इतिहास बताता ड्रोन शो देखा

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के लिए गीर सोमनाथ पहुंचे प्रधानमंत्री, आज शौर्य यात्रा

राज्य ब्यूरो, गीर सोमनाथ (गुजरात) : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार शाम को गीर सोमनाथ पहुंचे। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल एवं उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने हेलीपैड पर उनकी अगुआनी की। मोदी हेलीपैड से रोड शो करते हुए सोमनाथ मंदिर पहुंचे। हजारों की संख्या में जुटे नगरवासियों ने रोड शो के दौरान उनका भव्य स्वागत किया। मोदी मंदिर परिसर में आयोजित ओमकार मंत्रोच्चार में शामिल हुए और उन्होंने सोमनाथ का इतिहास बताने वाला ड्रोन शो भी देखा। लगभग 3,000 ड्रोन का इस्तेमाल मंदिर से जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं को पुनः प्रस्तुत करने के लिए किया गया। मोदी रविवार को यहां होने वाली शौर्य यात्रा में शामिल होंगे। सोमवार को वह जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज के साथ अंतरराष्ट्रीय पतंग उत्सव का उद्घाटन करेंगे। दोनों साबरमती आश्रम में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देंगे तथा गांधीनगर में एक द्विपक्षीय बैठक भी करेंगे।

मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया- ''गर्मजोशी से स्वागत के लिए लोगों का शुक्रगुजार हूं।'' उन्होंने ''ओमकार नाद'' के महत्व पर जोर दिया। पोस्ट में लिखा- ''हमारे वेदों, शास्त्रों, पुराणों, उपनिषदों और वेदांत का सार यही है। यह ध्यान की जड़ और योग की नींव है। यह शब्द ब्रह्म का स्वरूप है। आज, सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर हमें 1000 सेकेंड तक सामूहिक रूप से ओमकार नाद का जाप करने का सौभाग्य मिला। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व उन अनगिनत भारतीय नागरिकों को याद करने के लिए आयोजित किया जा रहा है जिन्होंने मंदिर की रक्षा के लिए बलिदान दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार को गीर सोमनाथ जिले में सोमनाथ मंदिर में भागवान शिव का जलाभिषेक करते हुए● प्रेट्र

प्रधानमंत्री ने सोमनाथ मंदिर में 1000 सेकेंड तक सामूहिक रूप से ओमकार नाद का जाप किया● एएनआइ

भारत के 12 पवित्र ज्योतिर्लिंगों में से एक सोमनाथ का भारत की ऐतिहासिक संस्कृति में सर्वोच्च स्थान है। इसी वर्ष महमूद गजनवी द्वारा 1026 में सोमनाथ पर किए गए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष पूरे हो रहे हैं। आज, एक हजार वर्ष बाद भी सोमनाथ मंदिर पूरी शान के साथ अडिग खड़ा है। संयोग से 2026 में ही सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के भी 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। 11 मई 1951 को इस भव्य मंदिर का पुनर्निर्माण संपन्न हुआ था। रविवार सुबह मोदी यहां शौर्य यात्रा में शामिल होंगे। इसमें मंदिर की रक्षा करने वाले वीर योद्धाओं को सम्मानित किया जाएगा।

वहीं एएनआइ के अनुसार, मोदी ने शनिवार को श्री सोमनाथ ट्रस्ट की बैठक की अध्यक्षता की और मंदिर परिसर में इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन से संबंधित विभिन्न चरणों की समीक्षा की।

मोदी सरकार ने देश को वैश्विक नेतृत्व, निर्यात व स्टार्टअप में बनाया अग्रणी : शाह

जागरण संवाददाता, जयपुर: केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 2047 तक विकसित भारत के लिए आत्मनिर्भरता, स्वदेशी और स्वभाषा अपनाने पर जोर दिया है। उन्होंने अपनी दो दिवसीय राजस्थान यात्रा के दूसरे दिन शनिवार को जोधपुर में कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार ने 11 साल में भारत को वैश्विक नेतृत्व, निर्यात, स्टार्टअप और डिजिटल अर्थव्यवस्था में अग्रणी बनाया है। हम दुनिया में चौथे नंबर के अर्थतंत्र बन गए हैं, हमारा निर्यात दोगुना हो चुका है और हम चार ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बन चुके हैं।

दुनिया में होने वाले प्रति 100 डिजिटल लेन-देन में से 50 भारत में होते हैं। भारत मोबाइल उत्पादन में दूसरे, स्टार्टअप में तीसरे, दवाइयां बनाने व आटोमोबाइल क्षेत्र में दुनिया में तीसरे नंबर पर है। शाह ने जयपुर में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम में 9000 से अधिक पुलिस कांस्टेबलों को नियुक्ति पत्र भी सौंपे। इनमें करीब ढाई हजार महिला पुलिस कांस्टेबल शामिल हैं।

जयपुर में राजस्थान पुलिस अकादमी में कांस्टेबल नियुक्ति समारोह को संबोधित करते गृह मंत्री अमित शाह ● प्रेट्र

इस मौके पर केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि नौ हजार कांस्टेबलों को किसी सिफारिश नहीं, बल्कि योग्यता से नियुक्ति मिली है। शाह ने जोधपुर में माहेश्वरी ग्लोबल कन्वेन्शन एंड एक्सपो को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि देश के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में माहेश्वरी समाज का बलिदान और योगदान बहुत बड़ा रहा है। शाह ने निशाना साधते हुए कहा कि राजस्थान की पिछली कांग्रेस सरकार में लगातार पेपर लीक होते थे।

'देश को हर तरह से मजबूत बना इतिहास का प्रतिशोध लेंगे'

- कहा-प्रतिशोध अच्छा शब्द तो नहीं है, लेकिन यह अपने आप में बड़ी शक्ति हो सकती है
- एनएसए ने "विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद" के उद्घाटन समारोह को किया संबोधित

अजीत डोभाल● फाइल फोटो

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने शनिवार को कहा कि भारत को न केवल सीमाओं पर, बल्कि हर तरह से खुद को मजबूत करना होगा, ताकि हमलों और पराधीनता के दर्दनाक इतिहास का प्रतिशोध लिया जा सके। 'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद'' के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए डोभाल ने महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों और बलिदानों का उल्लेख किया।

खुफिया ब्यूरो के पूर्व निदेशक ने देशभर से आए तीन हजार युवा प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा-आप भाग्यशाली हैं कि आपका जन्म स्वतंत्र भारत में हुआ। मेरा जन्म गुलाम भारत में हुआ था। हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और अनगिनत कठिनाइयों का सामना किया। एनएसए ने कहा कि प्रतिशोध शब्द अच्छा तो नहीं है, लेकिन यह अपने आप में बड़ी शक्ति हो सकती है। युवाओं को भविष्य का नेता बताते हुए डोभाल ने मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता पर जोर दिया, जैसा कि पीएम मोदी ने प्रदर्शित किया है।

आपराधिक मामलों वाले मंत्रियों को हटाने के कानून पर मांगी राय

नई दिल्ली, एएनआइ : जिन मंत्रियों पर गंभीर आपराधिक मामले लंबित हैं, उन्हें पद से हटाने से जुड़े कानून समेत तीन अहम विधेयकों पर संसद की संयुक्त समिति (जेपीसी) ने आम जनता, विशेषज्ञों और संस्थानों से लिखित सुझाव मांगे हैं।

सबसे अहम संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025 है, जिसका उद्देश्य प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों सहित ऐसे मंत्रियों को पद से हटाने का प्रविधान करना है, जिन पर पांच साल या उससे अधिक सजा वाले गंभीर आपराधिक आरोप हों या जिन्हें 30 दिन से अधिक हिरासत में रखा गया हो।

जेपीसी जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक, 2025 और केंद्र शासित प्रदेश सरकार (संशोधन) विधेयक पर भी राय चाहती है। भाजपा सांसद अपराजिता सारंगी 31 सदस्यीय समिति की अध्यक्ष हैं।

मामू, ममदानी व बुर्केवाली पर टिका बीएमसी चुनाव

ओमप्रकाश तिवारी ● जागरण

मुंबई : स्थानीय निकाय चुनाव सामान्यतः आम नागरिकों की मूलभूत सुविधाओं पर लड़े जाते हैं। लेकिन देश की आर्थिक राजधानी मुंबई महानगरपालिका का चुनाव इस बार सड़क, नाली और साफ पानी के बजाय मामू, बुर्केवाली और ममदानी पर आ टिका है। कांग्रेस एवं शिवसेना (यूबीटी) मुस्लिम मतदाताओं को रिझाकर वोट बटोरने का प्रयास कर रही है तो भाजपानीत गठबंधन इसी मुद्दे पर शिवसेना (यूबीटी) को घेरकर हिंदुओं के वोट लेना चाहता है।

कुछ ही दिनों पहले एआइएमआइएम के नेता वारिस पठान ने यह कहकर एक नई बहस शुरू कर दी कि जब 'आइ लव महादेव' कहने वाला मुंबई का मेयर बन सकता है तो 'आइ लव मोहम्मद' कहने वाला एवं कोई 'हिजाब पहनने वाली' मुंबई की मेयर क्यों नहीं बन सकती। पठान के इस बयान पर शिवसेना (यूबीटी) की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई तो भाजपा ने इसे लपककर मुद्दा बना दिया कि उद्धव ठाकरे वारिस पठान की बात का जवाब देकर मुस्लिमों को नाराज नहीं करना चाहते। भाजपा इससे पहले छत्रपति संभाजी नगर में कांग्रेस के मुस्लिम नेता रशीद मामू को स्वयं उद्धव ठाकरे द्वारा अपनी पार्टी में शामिल करने पर घेरती आ रही थी।

भाजपा की ओर से तो उद्धव ठाकरे को इन दिनों एक नया नाम 'उद्धव मामू' दे दिया गया है। इसी बहस के बीच जब न्यूयार्क के नए मेयर जोहरान ममदानी ने कुरान पर हाथ रखकर अपने पद की शपथ ली तो मुंबई में कांग्रेस विधायक असलम शेख ने यह कहकर एक नया संकेत दे दिया कि मुंबई का मेयर तो जोहरान ममदानी जैसा होना चाहिए।

इस पर मुंबई भाजपा के अध्यक्ष अमित साटम ने असलम शेख को यह कहकर घेरा कि क्या वही ममदानी जो भारत तेरे टुकड़े होंगे कहने वाले उमर खालिद का समर्थन करता है और जिस पर यूएपीए के तहत केस दर्ज है।

227 में से 60 वार्डों में मुस्लिम मतदाता निर्णायक भूमिका में

मुंबई में मुस्लिम आबादी बढ़ने का आरोप भाजपा नेता किरीट सोमैया भी लगाते हैं। प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं शोध संस्था टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज (टिस) की एक रिपोर्ट के हवाले से सोमैया ने कुछ ही दिन पहले कहा था कि 1961 में मुंबई में मुस्लिम आबादी सिर्फ आठ प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 21 प्रतिशत हो गई। 2051 तक यह आबादी 30 प्रतिशत तक पहुंच जाएगी। सोमैया आरोप लगाते हैं कि सुनियोजित तरीके से मुंबई की डेमोग्राफी बदलने की कोशिश की जा रही है। मुस्लिमों की इसी आबादी के कारण मुंबई के 227 में से करीब 60 वार्डों में मुस्लिम मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं। 2017 के बीएमसी चुनाव में सभी प्रमुख दलों के 31 मुस्लिम उम्मीदवार जीते थे। इनमें कांग्रेस के 11, सपा के सात एवं एआइएमआइएम के तीन शामिल थे। इस बार मुस्लिम मतों में बड़ी सेंध शिवसेना (यूबीटी) भी लगा सकती है।

युवा कांग्रेस अध्यक्ष के 'जिन्ना जी' बोलने पर भाजपा ने घेरा

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित जल के मामले को लेकर कांग्रेस 11 जनवरी को बड़े प्रदर्शन की तैयारी में जुट पाती, उससे पहले भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु चिब के विवादित बोल पर घिर गई। चिब ने शनिवार को मीडिया से चर्चा में देश को स्वतंत्रता दिलाने वाले महापुरुषों के साथ विभाजन के लिए जिम्मेदार जिन्ना का भी नाम ले लिया। 'जिन्ना जी' कहकर सम्मान भी दिया।

चिब ने कहा कि स्वतंत्रता के लिए बहुत से नेता जेल में रहे थे, जैसे भगत सिंह, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, 'जिन्ना जी'। उनके बलिदान के बाद देश को स्वतंत्रता मिली। भाजपा के इंदौर अध्यक्ष सुमित मिश्रा ने कहा कि चिब ने सिर्फ जिन्ना के आगे 'जी' नहीं लगाया, बताया है कि कांग्रेस का असली चरित्र क्या है।

'भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में युवा ही मुख्य प्रेरक शक्ति'

नई दिल्ली, प्रेट्र : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को कहा कि भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में युवा ही मुख्य प्रेरक शक्ति हैं। उन्होंने युवाओं से बहुविषयक शिक्षा को अपनाने का आह्वान किया ताकि वे तेजी से हो रहे तकनीकी विकास, विशेष रूप से एआइ, क्वांटम कंप्यूटिंग और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में प्रगति के साथ तालमेल बनाए रख सकें।

राजनाथ ने ये बातें उत्तर प्रदेश के 78 युवाओं के साथ बातचीत के दौरान कहीं, जो राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलाग' में भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा, ''सीखने की प्रक्रिया कभी खत्म नहीं होती। आपको नवीनतम पद्धतियों से, अपनी गलतियों से और सबसे महत्वपूर्ण, दूसरों के अनुभवों से सीखना चाहिए। बड़े सपने देखें, लेकिन उन्हें कभी बोझ न बनने दें।'' उन्होंने चुनौतियों को जीवन का अपवाद नहीं, बल्कि उसका स्वाभाविक हिस्सा बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि कठिन समय ही व्यक्ति के सच्चे आंतरिक स्वरूप और चरित्र को उजागर करता है। ''जब सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा हो तो शांत रहना आसान होता है। लेकिन, आलोचना व असफलता ही क्षमता की परीक्षा लेती हैं और अंततः भविष्य तय करती हैं।''

नई दिल्ली के मानेकशा सेंटर में विकसित भारत युवा नेता संवाद में बोलते रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ● एएनआइ

कांग्रेस ने शुरू किया 'मनरेगा बचाओ संग्राम'

नई दिल्ली, प्रेट्र: संप्रग शासनकाल के ग्रामीण रोजगार कानून मनरेगा को 'निरस्त' करने के विरोध में कांग्रेस ने शनिवार को 45 दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान 'मनरेगा बचाओ संग्राम' शुरू किया और हर जिले में प्रेसवार्ता आयोजित की। यह आंदोलन 25 फरवरी तक जारी रहेगा। विपक्षी दल 'वीबी-जी राम जी' कानून को वापस लेने, मनरेगा को उसके मूल स्वरूप में अधिकार-आधारित कानून के रूप में बहाल करने तथा काम के अधिकार, और पंचायतों के अधिकार को बहाल करने की मांग कर रहे हैं।

शनिवार को सभी जिला मुख्यालयों में प्रेस वार्ता आयोजित की गई, जिसमें बताया गया कि संसद के शीतकालीन सत्र में किस तरह मनरेगा को निरस्त कर वीबी-जी राम जी अधिनियम पारित किया गया। आज जिला मुख्यालयों में उपवास और प्रतीकात्मक प्रदर्शन किया जाएगा। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, कांग्रेस इस संघर्ष को तब तक जारी रखने को प्रतिबद्ध है, जब तक कि हम आजीविका व जवाबदेही के उस अधिकार की बहाली हासिल नहीं कर लेते, जिसे सरकार ने छीन लिया है।

पंजाब-तेलंगाना बोले, वीबी-जीरामजी से वित्तीय बोझ बढ़ेगा, ज्यादा फंड दें

नई दिल्ली, प्रेट्र : पंजाब और तेलंगाना जैसे विपक्ष शासित राज्यों ने शनिवार को 2026-27 के बजट में केंद्र से अतिरिक्त संसाधनों की मांग की और कहा कि प्रस्तावित वीबी-जीरामजी योजना के तहत 60:40 लागत-साझेदारी राज्यों के पहले से ही संकटग्रस्त संसाधनों पर और वित्तीय बोझ डालेगी।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों के साथ बजट पूर्व बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी, मणिपुर के राज्यपाल, दिल्ली, गोवा, हरियाणा आदि के उप मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया। पंजाब के वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने मनरेगा ढांचे में प्रस्तावित बदलावों का कड़ा विरोध करते हुए तर्क दिया कि नया माडल रोजगार गारंटी को कमजोर करता है और राज्यों पर एक बड़ा वित्तीय बोझ डालता है। योजना की मूल मांग-आधारित संरचना और फंडिंग पैटर्न को बहाल करने की मांग की। तेलंगाना के वित्त मंत्री विक्रमार्क ने कहा कि यह सहकारी संघवाद की भावना के खिलाफ है।

भारत के 'आदित्य' ने सुलझाई सौर तूफानों की पहेली

- मिशन ने सौर तूफानों के पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र पर प्रभाव को समझने में की मदद
- अंतरिक्ष मौसम की घटनाएं समझने व उनके रियल टाइम आकलन को ये अध्ययन अहम

बेंगलुरु, प्रेट्र : भारत के ''आदित्य'' ने सौर तूफानों की पहेली सुलझा दी है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शनिवार को कहा कि आदित्य-एल1 सौर मिशन से यह समझने में मदद मिली है कि शक्तिशाली सौर तूफान पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को कैसे प्रभावित कर सकता है।

इसरो ने बयान में कहा, सबसे गंभीर प्रभाव सौर तूफान के अशांत (टर्बुलेंट) क्षेत्र के टकराने के दौरान देखे गए। इसरो ने कहा कि यह अध्ययन अंतरिक्ष मौसम से जुड़ी घटनाओं को समझने और उनके रियल टाइम आकलन की अहमियत को रेखांकित करता है। दिसंबर 2025 में 'एस्ट्रोफिजिकल जर्नल' में प्रकाशित अध्ययन में इसरो के विज्ञानियों और शोध छात्रों ने अक्टूबर 2024 में पृथ्वी को प्रभावित करने वाली अंतरिक्ष की बड़ी मौसमी घटना का विश्लेषण किया। इसमें भारत की पहली सौर वेधशाला आदित्य-एल1 से प्राप्त डाटा के साथ-साथ अन्य अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष अभियानों के डाटा का इस्तेमाल किया गया।

सौर तूफान का क्या हुआ प्रभाव : इसरो के अनुसार सौर तूफान के टर्बुलेंट क्षेत्र ने पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को अत्यधिक रूप से संकुचित कर दिया, जिससे वह असामान्य रूप से पृथ्वी के बहुत करीब आ गया और कुछ समय के लिए भू-स्थिर कक्षा में स्थित कुछ उपग्रह उनके संपर्क में आ गए। ऐसी घटना केवल अत्यंत गंभीर अंतरिक्ष मौसम घटनाओं के दौरान ही होती है।

क्या है स्पेस वेदर

अंतरिक्ष मौसम (स्पेस वेदर) से तात्पर्य अंतरिक्ष में उत्पन्न उन परिस्थितियों से है, जो सूर्य पर होने वाली अस्थायी गतिविधियों जैसे सौर प्लाज़्मा विस्फोट के कारण बनती हैं। इससे पृथ्वी पर उपग्रहों, संचार एवं दिशा सूचक सेवाओं तथा विद्युत ग्रिड अवसंरचना प्रभावित होती हैं।

ईओएस-एन1 सेटेलाइट कल लांच होगा, धरती का करेगा अवलोकन

चेन्नई, प्रेट्र : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) 12 जनवरी सोमवार को वर्ष 2026 का अपना पहला अंतरिक्ष मिशन लांच करने जा रहा है। इसरो का पीएसएलवी सी62 राकेट अर्थ आब्जर्वेशन सेटेलाइट (ईओएस-एन1) को अंतरिक्ष में ले जाएगा। पीएसएलवी सी62 राकेट ईओएस-एन1 के साथ 14 अन्य पेलोड को भी अंतरिक्ष में ले जाएगा। यह मिशन इसरो की कमर्शियल शाखा न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआइएल) द्वारा संचालित किया जा रहा है।

इसरो ने शनिवार को कहा, राकेट और उपग्रहों का एकीकरण पूरा हो चुका है। पीएसएलवी सी62 मिशन को 12 जनवरी को सुबह 10:17 बजे श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से प्रक्षेपित करने की योजना है।

इसरो अध्यक्ष ने तिरुपति में की पूजा

इसरो के अध्यक्ष वी नारायणन ने प्रस्तावित पीएसएलवी-सी62 मिशन की लांचिंग से पहले शनिवार को तिरुपति स्थित वेंकटेश्वर मंदिर में पूजा अर्चना की। वह राकेट की लघु प्रतिकृति अपने साथ लाए थे।

संकरी सड़कों के लिए अब 7 मीटर की 'मिनी बसें' भी चलाएगी दिल्ली सरकार

राजधानी की सड़कों पर उतरेंगी 3330 नई इलेक्ट्रिक बसें : रेखा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नई दिल्ली

दिल्ली सरकार प्रदूषण को कम करने के लिए परिवहन व्यवस्था को ग्रीन बनाने के लिए 3 हजार 330 अतिरिक्त बसें खरीद रही है। इस बात की जानकारी शनिवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दी है। सीएम ने कहा कि दिल्ली के परिवहन विभाग ने 3,330 अतिरिक्त इलेक्ट्रिक बसों की तत्काल खरीद के लिए केंद्र सरकार की एजेंसी कन्वर्जेंस एनर्जी सर्विसेज लिमिटेड (सीईएसएल) को एक विस्तृत प्रस्ताव भेजा है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली की हवा को स्वच्छ बनाना और नागरिकों को एक आधुनिक, सुगम और सस्ती सार्वजनिक परिवहन सेवा देना उनकी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी उद्देश्य के साथ, हाल ही में सीईएसएल के साथ हुई उच्च स्तरीय बैठक के बाद यह निर्णय लिया गया कि पीएम ई-ड्राइव योजना (फेज-2) के तहत दिल्ली के लिए बसों का कोटा बढ़ाया जाए। मुख्यमंत्री के अनुसार अपनी आवश्यकता का पुनर्मूल्यांकन करते हुए विभिन्न आकारों की बसों की मांग रखी है ताकि संकरी सड़कों से लेकर मुख्य मार्गों तक कनेक्टिविटी सुनिश्चित की जा सके। राजधानी के परिवहन विभाग द्वारा 7 मीटर की 500 बसें, 9 मीटर की 2,330 बसें और 12 मीटर की 500 बसों समेत कुल 3,330 की मांग की गई है। सभी बसें लो फ्लोर एसी बसें होंगी। 7 मीटर की बसें दिल्लीवासियों को संकरी सड़कों और लास्ट-माइल कनेक्टिविटी प्रदान करेंगी। 9 मीटर की बसें छोटी सड़कों और फीडर सेवाओं के लिए चलाई जाएंगी। वहीं, 12 मीटर की बसें मुख्य रूटों और भारी भीड़ वाले मार्गों पर चलाई जाएंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने केंद्र सरकार और भारी उद्योग मंत्रालय से अनुरोध किया है कि दिल्ली की इस अतिरिक्त मांग (जो कि पहले से आवंटित 2 हजार 800 बसों के कोटे से अलग है) को सब्सिडी मॉडल में शामिल किया जाए।

'दिल्लीवासियों की निजी वाहनों पर निर्भरता होगी कम'

मुख्यमंत्री का मानना है कि ये 3 हजार 330 नई बसें न केवल सार्वजनिक परिवहन का साधन हैं, बल्कि दिल्ली के 'ग्रीन ट्रांजिशन' का आधार भी बनेंगी। इन बसों के आने से दिल्लीवासियों की निजी वाहनों पर निर्भरता कम होगी। साथ ही, हवा में घुलने वाले हानिकारक धुएं में भारी कमी आएगी। महिला यात्रियों और बुजुर्गों के लिए लो-फ्लोर बसों के माध्यम से यात्रा अधिक सुरक्षित और आरामदायक होगी। दिल्ली सरकार का लक्ष्य है कि आने वाले महीनों में दिल्ली का बस बेड़ा दुनिया के सबसे बड़े और सबसे स्वच्छ इलेक्ट्रिक बस नेटवर्क में से एक बन जाए।

वर्तमान में चलाई जा रही हैं कुल 5,336 सरकारी बसें

दिल्ली में वर्तमान में कुल 5,336 सरकारी बसें चलाई जा रही हैं। इनमें कुल 3 हजार 535 ईवी बसें हैं, जिसमें 9 मीटर वाली 1 हजार 162 देवी बसें, 12 मीटर वाली 2 हजार 273 बसें और 100 फीडर बसें शामिल हैं। मुख्यमंत्री के अनुसार इस वर्ष मार्च तक दिल्ली की सड़कों पर 5 हजार से ज्यादा ईवी बसें संचालित हो जाएंगी। उनका संकल्प है कि वर्ष 2026 के अंत तक 7 हजार इलेक्ट्रिक बसें दिल्लीवासियों को उपलब्ध करा दी जाएंगी। पीएम ई-ड्राइव (चरण 1) की 2800 बसें आने के बाद दिल्ली में बसों की संख्या 10 हजार 430 हो जाएगी तथा पीएम ई-ड्राइव (चरण 2) की 3 हजार 330 बसें आने के बाद दिल्ली में बसों की संख्या 13 हजार 760 हो जाएगी।

सदन का दुरुपयोग नहीं किया जाएगा बर्दाश्त: विजेंद्र

हरिभूमि न्यूज ⏭ नई दिल्ली

- सदन के वीडियो पर एफआईआर मामले में दिल्ली विधानसभा सचिवालय ने पंजाब के डीजीपी, जालंधर पुलिस कमिश्नर और स्पेशल डीजीपी साइबर सेल को नोटिस जारी किए
- 48 घंटे में जवाब देने के दिए निर्देश

सदन के वीडियो पर एफआईआर दर्ज होने के मामले में शनिवार को दिल्ली विधानसभा सचिवालय ने पंजाब के डीजीपी, जालंधर पुलिस कमिश्नर और स्पेशल डीजीपी साइबर सेल को नोटिस किया और उनसे 48 घंटे के भीतर लिखित स्पष्टीकरण और सभी संबंधित दस्तावेज प्रस्तुत करने को कहा है। इस बात की जानकारी विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने प्रैसवार्ता में दी है। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि यह मामला अत्यंत गंभीर और संवैधानिक महत्व का है तथा सीधे सदन की गरिमा, अधिकार और विशेषाधिकारों से जुड़ा है।

गुप्ता ने कहा कि जिस वीडियो के आधार पर एफआईआर दर्ज की गई है, वह किसी व्यक्तिगत रिकॉर्डिंग नहीं, बल्कि सदन की आधिकारिक रिकॉर्डिंग है, जो पूरी तरह से दिल्ली विधानसभा की संपत्ति है। सदन की संपत्ति का इस प्रकार दुरुपयोग करना और इस आधार पर किसी मंत्री के खिलाफ एफआईटार दर्ज करना न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि अत्यंत गंभीर और निंदनीय भी है। विजेंद्र ने कहा कि सदन की कार्यवाहियों की कोई भी रिकॉर्डिंग केवल सदन की संपत्ति है और किसी राजनीतिक दल, व्यक्ति या बाहरी एजेंसी की नहीं है। उन्होंने यह प्रश्न उठाया कि इस एफआईआर को किस अधिकार और किस आधार पर दर्ज किया गया। गुप्ता ने कहा कि पूरे प्रकरण में जालंधर के पुलिस कमिश्नर की भूमिका अत्यंत चिंताजनक है और यह प्रथम दृष्टया सदन के विशेषाधिकारों का उल्लंघन प्रतीत होता है।

इसलिए उनके खिलाफ विशेषाधिकार हनन का स्पष्ट मामला बनता है, जिसे सदन गंभीरता से देखेगा। उन्होंने कहा कि विपक्ष की मांग पर और पूरी पारदर्शिता एवं निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए वीडियो क्लिप को फॉरेंसिक साइंस लैब भेजा गया। हालांकि, सदन की आधिकारिक रिकॉर्डिंग को छेड़छाड़ की गई बताना स्वयं में सदन की गरिमा पर हमला है।

एमसीडी के भेड़-बकरी मामले पर आमने-सामने आप-भाजपा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नई दिल्ली

दिल्ली नगर निगम के भेड़-बकरी मामले पर आम आदमी पार्टी (आप) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शनिवार को भी आमने-सामने नजर आई। शनिवार को सिविक सेंटर स्थित महापौर कार्यालय के बाहर एमसीडी के नेता विपक्ष अंकुश नारंग के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान 'आप' पार्षदों ने भाजपा और महापौर के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। 'आप' पार्षद कई भेड़ों को लेकर प्रदर्शन करने पहुंचे और कहा कि भाजपा इन्हें अपनी पार्टी में शामिल कर ले। नेता विपक्ष अंकुश नारंग ने आरोप लगाते हुए कहा कि शुक्रवार को एमसीडी सदन की बैठक में महापौर ने 'आप' की महिला पार्षदों को भेड़-बकरी कहकर अपमानित किया जोकि बहुत ही निंदनीय है और हम भाजपा से महापौर के इस्तीफे की मांग करते हैं।

वहीं, दूसरी तरफ दिल्ली के महापौर राजा इकबाल सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी अब एक जिम्मेदार राजनीतिक दल न रहकर "ड्रामा पार्टी" बन चुकी है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ढोंग की राजनीति कर रही है। सिख गुरुओं के अपमान के लिए आम आदमी पार्टी को सार्वजनिक रूप से माफ़ी मांगनी चाहिए। महापौर सिंह ने कहा कि सिख गुरुओं के अपमान से लेकर अवैध पार्किंग तक, सच्चाई से आप भाग रही है। महापौर ने बताया कि शुक्रवार को निगम की सदन बैठक में भी आम आदमी पार्टी ने सुनियोजित तरीके से अराजकता फैलाने का प्रयास किया।

नेता सदन प्रवेश वाही द्वारा आतिशी मार्लेना के सिख गुरुओं पर दिए गए आपत्तिजनक बयान के विरोध में निंदा प्रस्ताव पढ़े जाने के साथ ही आम आदमी पार्टी के पार्षदों ने जानबूझकर हंगामा शुरू कर दिया। इस हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही बाधित हुई और महत्वपूर्ण चर्चा आगे नहीं बढ़ सकी।

उत्तर-पश्चिम जिला भाजपा ने आयोजित किया 'अटल स्मृति सम्मेलन'

हरिभूमि न्यूज ⏭ नई दिल्ली

- मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने 1600 वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का किया अभिनंदन

दिल्ली भाजपा के उत्तर पश्चिम जिले में पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई की 100वीं जयंती वर्ष के अंतर्गत शनिवार 'अटल स्मृति सम्मेलन' का आयोजन जिलाध्यक्ष विनोद सहरावत की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर दिल्ली भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने जिले के 1600 वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष सचदेवा, सीएम रेखा गुप्ता सहित सांसद योगेन्द्र चांदोलिया ने मंचासीन दिल्ली सरकार के मंत्री रविन्द्र इंद्राज सिंह, विधायक कुलवंत राणा, दीपक चौधरी एवं राजकरण खत्री, दिल्ली नगर निगम में नेता सदन प्रवेश वाही, उपमहापौर जय भगवान यादव सहित अन्य निगम पार्षदों और जिला पदाधिकारियों की उपस्थिति में सम्बोधित किया। रोहिणी सेक्टर 29 स्थित प्रदेश कार्यालय के बाहर आयोजित भव्य समारोह में उत्तर पश्चिम दिल्ली के लगभग 3000 से अधिक कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

वीडियो में साबित हुआ कि आतिशी ने कहीं भी गुरु शब्द का इस्तेमाल नहीं किया : भारद्वाज

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने सदन के वीडियो को लेकर रविवार को कहा कि अंततः सत्य की जीत होती है। फोरेंसिक जांच में यह साबित हो गया की वीडियो के साथ छेड़छाड़ की गई है। फॉरेंसिक जांच में यह बात सिद्ध हुई कि आतिशी ने अपने भाषण में गुरु शब्द का इस्तेमाल किया ही नहीं था, जिसे लेकर भारतीय जनता पार्टी ने यह झूठा वीडियो तैयार किया था। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और उनकी दिल्ली सरकार में विधायक एवं मंत्री धर्म की आड़ में आजकल जिस प्रकार से झूठे वीडियो चलाकर आम आदमी पार्टी को बदनाम करने और देश में आपसी सौहार्द को बिगाड़ने की राजनीति कर रहे हैं। उन्होंने राजघाट जाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर भारतीय जनता पार्टी की सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और उनकी दिल्ली सरकार में विधायक एवं मंत्री धर्म की आड़ में आजकल जिस प्रकार से झूठे वीडियो चलाकर आम आदमी पार्टी को बदनाम करने और देश में आपसी सौहार्द को बिगाड़ने की राजनीति कर रहे हैं, हम उनकी सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना करने आए हैं। ताकि भाजपा इस प्रकार की घटिया और धर्म की राजनीति से बाज आए। प्रार्थना कार्यक्रम में सौरभ भारद्वाज के साथ आम आदमी पार्टी के विधायक जरनैल सिंह, विधायक कुलदीप कुमार, विधायक प्रेम कुमार चौहान, निगम पार्षद पंकज गुप्ता, निगम पार्षद सारिका चौधरी एवं संगठन के विभिन्न पदाधिकारी और दर्जनों कार्यकर्ता शामिल हुए।

प्रदूषण बढ़ने की जिम्मेदारी से भाग नहीं सकते रेखा-केजरीवाल : यादव

नई दिल्ली। दिल्ली में लगातार प्रदूषण से हो रही विकट समस्या पर दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने भाजपा व आम आदमी पार्टी को बराबर का जिम्मेदार बताया है। यादव ने कहा कि दिल्ली नगर निगम, दिल्ली सरकार और केंद्र में मोदी सरकार, सब भाजपा की है। ऐसे में अगर राजधानी में प्रदूषण जानलेवा स्तर पर पहुंच रहा है तो भाजपा सरकारें अपनी जिम्मेदारी से कैसे भाग सकती है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को प्रदूषण से निपटने में बुरी तरह विफलता की जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी। वहीं इससे पहले रही आम आदमी पार्टी की केजरीवाल सरकार भी प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है और पल्ला नहीं झाड़ सकती। उन्होंने कहा कि वर्तमान में सरकार बीजेपी की है, साधन उनके पास है, व्यवस्था उनके हाथ में है, फिर प्रदूषण नियंत्रण करने में कोताही क्यों बरती जा रही है। मौजूदा रेखा सरकार और पिछली आम आदमी पार्टी दोनो प्रदूषण नियंत्रण पर काम करने की बजाय नूरा कुश्ती में व्यस्त है। उन्होंने कहा कि जब सरकार तुम्हारी है, साधन तुम्हारे पास है, व्यवस्था आपके हाथ में है, फिर प्रदूषण नियंत्रण करने में पंगुता क्यों दर्शायी जा रही है।

Fortis HOSPITAL Manesar

मानेसर का पहला,
दुनिया का सबसे अत्याधुनिक सर्जिकल रोबोट
Da Vinci Xi Robot
फोर्टिस हॉस्पिटल, मानेसर में

लाभ

छोटा चीरा एवं सटीक सर्जरी
कम दर्द एवं कम रक्त हानि
तेज रिकवरी
बेहतर रोगी परिणाम

रोबोटिक सर्जरी द्वारा इलाज उपलब्ध

पेट का कैंसर | किडनी कैंसर | प्रोस्टेट कैंसर | सिर एवं गर्दन का कैंसर | स्तन कैंसर | सर्वाइकल कैंसर
अन्य सर्जरी – गर्भाशय की गांठ एवं बच्चेदानी निकालना, हर्निया, अपेंडिक्स एवं पित्त की थैली की सर्जरी

अधिक जानकारी के लिए: 73000 73888
प्लॉट नं. पी 2, सेक्टर 5, आईएमटी मानेसर, गुरुग्राम
MyFortis ऐप डाउनलोड करने के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें

फोर्टिस नेटवर्क – दिल्ली–एनसीआर: गुरुग्राम | मानेसर | नोएडा | ग्रेटर नोएडा | फरीदाबाद | ओखला | शालीमार बाग | वसंत कुंज | ला फेम | डिफेन्स कॉलोनी | सी–डीओसी

सीएम ने 47वीं राष्ट्रीय जूनियर हैंडबॉल चैंपियनशिप का किया शुभारंभ

रेखा का खिलाड़ियों को संदेश: सुविधाओं की नहीं होने देंगे कमी, आप बस तिरंगे की शान बढ़ाओ

हरिभूमि न्यूज ⏭ नई दिल्ली

आप बस खेलकर तिरंगे की शान बढ़ाओ, हम आपकी सुविधाओं में कमी नहीं होने देंगे। यह बात मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शनिवार को पीतमपुरा स्थित सरकारी स्कूल में 47वीं राष्ट्रीय जूनियर बॉयज हैंडबॉल चैंपियनशिप का शुभारंभ करने के अवसर पर कही। मुख्यमंत्री ने देशभर से आए युवा खिलाड़ियों से विशेष अपनापन व्यक्त किया, उनका उत्साह बढ़ाया और खेल भविष्य को लेकर बड़ा विजन भी साझा किया।

मुख्यमंत्री ने युवा खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और कहा कि आपकी सफलता पूरे देश की सफलता है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने विजेता टीम के लिए एक लाख रुपये पुरस्कार की घोषणा भी की। इस आयोजन में युवा खिलाड़ियों का उत्साह देखकर मुख्यमंत्री भावुक नजर आईं। उन्होंने कहा कि खेल के प्रति आपकी लगन यह दर्शाती है कि आप देश की मिट्टी से जुड़े हुए हैं। आप युवा ही इस राष्ट्र की असली शक्ति हैं। मुख्यमंत्री ने दिल्ली सरकार की नई खेल नीतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जब से हमारी सरकार बनी है, हमने खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक काम किए हैं।

उन्होंने बताया कि दिल्ली के ठप पड़े स्पोर्ट्स सिस्टम को पुनर्जीवित किया गया है। खिलाड़ियों के भत्ते बढ़ाए गए हैं और स्कूल स्तर से ही सहायता राशि दी जा रही है। इस अवसर पर भारतीय हैंडबॉल फेडरेशन के अध्यक्ष महेश कुमार, स्थानीय निगम पार्षद अमित नागपाल सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने बताया कि उनकी सरकार आने के बाद स्टेट लेवल पर खेलने वाले दिल्ली के प्रत्येक खिलाड़ी का अलाउंस बढ़ाया गया है ताकि खिलाड़ी बिना किसी बाधा के अपना अभ्यास जारी रख सकें। उन्होंने बताया कि ओलंपिक या कॉमनवेल्थ जैसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में मेडल जीतने वालों को दी जाने वाली राशि भी उनकी सरकार ने बढ़ा दी है। अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतने वाले खिलाड़ी को 7 करोड़ रुपये, रजत पदक जीतने वाले को 5 करोड़ रुपये और कांस्य पदक जीतने वाले खिलाड़ी को 3 करोड़ रुपये की सम्मान राशि दी जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में और देश में स्पोर्ट्स का एक नया युग शुरू हो रहा है। आज भारत की 60 प्रतिशत आबादी युवा है, जो हमें दुनिया का सबसे जीवंत 'युवा देश' बनाती है। खेल हमें केवल शारीरिक शक्ति ही नहीं, बल्कि रणनीति, धैर्य और टीम वर्क की शिक्षा देते हैं, जो जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक हैं। युवाओं को प्रेरित करने के लिए उन्होंने महान क्रिकेटर रहे सचिन तेंदुलकर के शब्दों को दोहराया- 'अपने खेल का आनंद लें और अपने सपनों का पीछा करें, क्योंकि सपने सच होते हैं।'

खबर संक्षेप

सीएम नायब सैनी को भेंट की प्रेरणादायी पुस्तक

फरीदाबाद। हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को हरियाणा भवन में डॉ. प्रीता पंवार ने

सैनिक जीवन पर आधारित एक प्रेरणादायी पुस्तक भेंट की। यह पुस्तक लेखिका के पिता, दिवंगत सैन्य अधिकारी मेजर शिवराज सिंह पंवार द्वारा अपने सेवा काल में लिखी गई डायरियों पर आधारित है, एक सैनिक के संघर्ष, कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है। डा. प्रीता पंवार ने सीएम को एक प्रार्थना पत्र भी सौंपा, राज्य के सभी जिला पुस्तकालयों तथा राजकीय महाविद्यालयों में उक्त पुस्तक को संग्रहित कराने का अनुरोध किया गया।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजनाः कैंप का आयोजन

फरीदाबाद। पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत बल्लभगढ़ के अग्रवाल धर्मशाला

में कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप के आयोजन में विधायक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री के बड़े भाई के टिपरचंद शर्मा पहुंचे। बिजली विभाग के अधीक्षण अभियंता जितेंद्र ढुल और कार्यकारी अभियंता संजय मंगला का भी कैंप में पहुंचने पर स्वागत किया गया। अग्रवाल धर्मशाला के प्रधान भगवान दास गोयल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

डम्पर ने साइकिल सवार को कुचला, मौत

फरीदाबाद। बल्लभगढ़ सेक्टर-3 गुरुग्राम नहर के नए पुल पर डंपर ने

एक साइकिल सवार को कुचल दिया। भूदत्त कालोनी का रहने वाला सुभाष शर्मा सेक्टर-छह में एक फैक्ट्री में शनिवार सुबह साइकिल से ड्यूटी जा रहा था। सेक्टर-तीन गुरुग्राम नहर के पुल पर पीछे तेज गति से डंपर आया और उसकी साइकिल को टक्कर मार दी। इससे सुभाष शर्मा साइकिल सहित सड़क पर गिर गया और डंपर ने उसे कुचल दिया।

भाजपा के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष के हरियाणा दौरे को लेकर गुरुग्राम में भव्य तैयारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ गुरुग्राम

भाजपा के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतिन नबीन के हरियाणा में पहली बार हो रहे दौरे को लेकर भाजपा ने बड़ी तैयारियां की है। तैयारियों को लेकर प्रदेश प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया और प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने गुरुग्राम के गुरुकमल कार्यालय में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की और नीतिन नबीन के पहले गुरुग्राम दौरे को ऐतिहासिक रूप से भव्य बनाने का संकल्प लिया। युवा दिवस के अवसर पर 12 जनवरी को गुरुग्राम में भाजपा के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगमन पर पूरे शहर को सजाने के लिए कार्यकर्ता जुट गए हैं। कार्यकर्ताओं ने प्रदेश अध्यक्ष और प्रदेश प्रभारी के सामने अपनी तैयारियों की जानकारी भी रखी। प्रदेश प्रभारी डा. सतीश पूनिया ने एक-एक कार्यकर्ताओं से खासकर युवाओं से अपील की कि राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष के प्रथम आगमन पर युवाओं की भागीदारी अधिक हो। डॉ. पूनिया ने कहा कि भाजपा को मजबूत करने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नीतिन नबीन भी युवा और ओजस्वी नेतृत्व देने वाले नेता हैं। कार्यक्रम में युवाओं की भागीदारी राजनीति में युवाओं को आगे आने में प्रेरित करेगी। वहीं केंद्रीय संसदीय बोर्ड की सदस्य डॉ. सुधा यादव, प्रदेश महामंत्री सुरेंद्र पूनिया, डॉ. अर्चना गुप्ता, मंत्री कृष्ण बेदी, संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा, मंत्री राव नरबीर, विधायक तेजपाल तंवर, मुकेश शर्मा, प्रदेश सचिव गार्गी कक्कड़ सहित गुरुग्राम जिला अध्यक्ष सर्वप्रिय त्यागी, गुरुग्राम महानगर जिला अध्यक्ष अजीत यादव समेत पार्टी पदाधिकारी सहित तमाम नेताओं और पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए अपने-अपने सुझाव भी रखे।

गुरुग्राम दौरे को ऐतिहासिक रूप से भव्य बनाने का संकल्प लिया

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली ने उपस्थित सभी नेताओं और पदाधिकारियों को कहा कि यह गुरुग्राम के कार्यकर्ताओं के लिए गौरव की बात है कि कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतिन नबीन हरियाणा में पहली बार दौरा कर रहे हैं और यह दौरा गुरुग्राम में होगा। प्रदेश अध्यक्ष बड़ौली ने कहा कि लगभग सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है और कार्यकर्ताओं में कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष के गुरुग्राम दौरे के लेकर जबरदस्त उत्साह है।

सुरेंद्र पूनिया ने बताया कि भाजपा कार्यालय गुरुकमल पहुंचने पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतिन नबीन का स्वागत करेंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली, प्रदेश प्रभारी डा. सतीश पूनिया, प्रदेश सह प्रभारी सुरेंद्र नागर, प्रदेश के प्रदेश के तीनों महामंत्री, सांसद, विधायक और वरिष्ठ नेता उपस्थित रहेंगे।

नपा कर्मचारी संघ, फायर विभाग के प्रतिनिधिमंडल ने स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल से की वार्ता

मंत्री गोयल ने 5 फरवरी तक बैठक कर मांगों का समाधान करने का आश्वासन दिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ फरीदाबाद

नगरपालिका कर्मचारी संघ, हरियाणा व फायर विभाग का मॉस डपोटेशन विशाल जनप्रतिनिधि मंडल ने शनिवार को सेक्टर-16 सागर सिनेमा पर जोरदार प्रदर्शन करते हुए शहरी स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल से मुलाकात की। कर्मचारियों के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व नगरपालिका कर्मचारी संघ हरियाणा के राज्य प्रधान नरेश कुमार शास्त्री कर रहे थे। शहरी स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल ने नगर पालिका, परिषद, निगम व फायर के कर्मचारियों की मांगों का समाधान करने के लिए 5 फरवरी तक बैठक कर मांगों का समाधान करने का आश्वासन दिया है। संघ ने फायर के अनुबंधित कर्मचारियों की वेतन बढ़ोतरी, विभाग में समायोजन करने, नगर निगम फरीदाबाद के दैनिक वेतन भोगी 111 कर्मचारियों एवं हाई कोर्ट के 27 दिसंबर व 31 दिसम्बर 2025 के फैसले को ज्यूं का त्यों लागू करते हुए सभी कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने की मांग उठाते हुए फायर एवं हरियाणा कौशल रोजगार निगम के कर्मचारियों व अन्य तृतीया व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को एक मुस्त पक्का करने की मांग उठाई। गुरुग्राम के 3480, कैथल 165 व पानीपत, हिसार, सिरसा, सोनीपत, करनाल आदि नगर निगमों, परिषदों व पालिकाओं से निकाले गए सफाई कर्मचारियों को ड्यूटी पर वापस लेने, सफाई व सीवर कर्मचारियों के रिक्त पदों पर नियमित भर्ती के लिए बनाई गई कमेटी का चेयरमैन पालिका व परिषदों के जिला नगर आयुक्त व नगर निगमों के आयुक्तों को चेयरमैन बनाने की मांग पर शहरी स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल ने जल्द समाधान करने का आश्वासन दिया है।

12 फरवरी को करेंगे राष्ट्रव्यापी हड़ताल

संघ के प्रतिनिधि मंडल में अन्य के अलावा संघ के महासचिव मांगेराम तिगरा वरिष्ठ प्रधान रमेश मुख्य संगठनकर्ता शिवचरण संगठनकर्ता राजपाल, उप महासचिव सुनील चिण्डालिया, कोषाध्यक्ष महेंद्र सिंह, उपकोषाध्यक्ष राजेश बागड़ी, अग्निशमन के प्रधान राजेंद्र, महासचिव गुलशन भारद्वाज, राजीव खत्री सहित सैकड़ों नेता व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

राज्य कमेटी ने फरीदाबाद जिला कमेटी के प्रधान दलित बोहत, सचिव अनिल चांडाल व सफाई कर्मचारी यूनियन के प्रधान बलवीर बालगुहेर भी उपस्थित रहे। नगर पालिका कर्मचारी संघ हरियाणा के राज्य प्रधान नरेश कुमार शास्त्री ने मंत्री से मुलाकात के बाद राज्य कमेटी के साथियों से बैठक की बैठक में नगर पालिका कर्मचारी संघ हरियाणा में 15 जनवरी को जींद में होने वाली मजदूर, कर्मचारी, किसान महापंचायत 19 जनवरी को जिला उपायुक्त कार्यालय पर 23 दिसंबर व 27 दिसंबर 2025 के फैसले अनुसार सभी कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने के दिए गए फैसले को लागू करवाने के लिए किए जाने वाले प्रदर्शनों में शामिल होने तथा 12 फरवरी की राष्ट्रव्यापी हड़ताल में भी भाग लेने का फैसला किया है।

शास्त्री ने बताया कि नगरपालिका कर्मचारी संघ हरियाणा ऑल सफाई कामगार संघर्ष समिति के आह्वान पर सफाई कर्मचारियों की पक्की भर्ती करने न्यूनतम वेतन 27 हजार रुपए देने क्षेत्रफल आबादी के अनुपात में सफाई कर्मचारी, सीवर मैनो के नए पदसर्जित करने व संघर्ष समिति की अन्य मांगों के समाधान के लिए 7 व 8 फरवरी को सभी विधायकों को ज्ञापन देने तथा 1 मार्च से 15 मार्च तक सफाई सीवर कर्मचारी मुक्ति यात्रा को सफल बनाने तथा 20 व 21 मार्च को सफाई कर्मचारियों की राज्यव्यापी हड़ताल में भी पालिका, परिषद और निगमों के कर्मचारी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे।

जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने नमन किया

पहली महापौर दमयंती गोयल की जन्म जयंती पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि की अर्पित

हरिभूमि न्यूज ⏭ गाजियाबाद

गाजियाबाद की पूर्व प्रथम महिला महापौर, जनसेवा, सुशासन एवं महिला सशक्तिकरण की सशक्त प्रतीक स्वर्गीय श्रीमती दमयंती गोयल की जन्म जयंती के अवसर पर शनिवार को उनके निज निवास बी-17, अशोक नगर, गाजियाबाद में भावपूर्ण श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम प्रातः 10:00 बजे से 1:00 बजे तक श्रद्धा, सम्मान और स्मरण के वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्व. दमयंती गोयल के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उपस्थित जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों एवं गणमान्य नागरिकों ने उन्हें नमन किया। कार्यक्रम में स्व. दमयंती गोयल के पति एवं भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल के पिता महेश गोयल ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि, दमयंती जी का संपूर्ण जीवन सेवा, त्याग और जनकल्याण को समर्पित रहा। उन्होंने न केवल एक महापौर के रूप में बल्कि एक आदर्श गृहिणी और समाजसेविका के रूप में हर भूमिका को पूरी निष्ठा से निभाया। गाजियाबाद की जनता के प्रति उनका प्रेम और कर्तव्यनिष्ठा ही उनकी सबसे बड़ी पहचान रही। आज भी उनके विचार और संस्कार हमें जनसेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल ने कहा कि स्व. दमयंती गोयल ने गाजियाबाद को एक नई दिशा और पहचान देने का कार्य किया। उनका जीवन महिलाओं के लिए प्रेरणा और जनप्रतिनिधियों के लिए आदर्श है। गाजियाबाद सांसद अतुल गर्ग ने कहा कि स्व. दमयंती गोयल जी ने नगर की राजनीति में सेवा, संवेदनशीलता और सुशासन की मजबूत नींव रखी। उनका योगदान गाजियाबाद के विकास इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। विधायक दिनेश गोयल ने कहा कि स्व. दमयंती गोयल जी का सार्वजनिक जीवन ईमानदारी, पारदर्शिता और जनहित को समर्पित रहा।

विकास में देरी पर मंत्री राजेश नागर ने अधिकारियों एवं ठेकेदारों पर कार्रवाई के लिए कहा

हरिभूमि न्यूज ⏭ फरीदाबाद

प्रदेश के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री राजेश नागर ने शनिवार को सेक्टर 16 स्थित सर्किट हाउस में नगर निगम अधिकारियों के साथ मंथन बैठक की जिसमें उन्होंने आयुक्त धीरेंद्र खड़गटा को विकास कार्यों में ढिलाई बरतने वाले ठेकेदारों एवं

अधिकारियों पर कार्रवाई करने के लिए कहा। बैठक में तिगांव विधानसभा क्षेत्र के सभी निगम पार्षद भी मौजूद रहे। मंत्री राजेश नागर ने एक-एक पार्षद से उनकी समस्याएं और मांगें जानी और निगम आयुक्त को सभी समस्याओं को जल्द से जल्द दूर करने के लिए कहा। मंत्री नागर ने कहा कि सडक़, नाली, सीवर, पानी, सफाई जैसी चीजों पर प्राथमिकता से काम करें क्योंकि यह व्यक्ति की रोजमर्रा की व्यवस्थाएं हैं। इनके लिए तो शिकायत आनी ही नहीं चाहिए। उन्होंने आयुक्त से कहा कि देखने में आ रहा है कि विकास कार्यों में जानबूझकर ढिलाई बरती जा रही है जो कि बहुत गलत व्यवहार है।

1857 की क्रांति के अमर शहीदों को नमन किया

राजा नाहर, भूरा सिंह और गुलाब सिंह के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि दी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फरीदाबाद

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में बल्लभगढ़ रियासत के राजा नाहर सिंह के साथ अग्रणी पंक्ति में रहे उनकी सेना के कमांडर भूरा सिंह वाल्मीकि, गुलाब सिंह सैनी व खुशहाल सिंह ने भी राजा नाहर सिंह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजी हुकूमत के दांत खट्टे किए। उनके अदम्य साहस और देशभक्ति ने लाखों भारतीयों को प्रेरित किया, जिसकी गूंज आज भी सुनाई देती है। 9 जनवरी 1858 को दिल्ली के चांदनी चौक पर अंग्रेजी हुकूमत ने आजादी के मतवाले राजा नाहर सिंह, भूरा सिंह वाल्मीकि व गुलाब सिंह को एक साथ फांसी दे दी और उनकी समस्त सम्पति जब्त कर ली। उनके शहादत दिवस पर वाल्मीकि समाज ने उन अमर शहीदों को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। वाल्मीकि अंबेडकर शिक्षा मिशन के जिला अध्यक्ष जयपाल बैनीवाल, नगरपालिका कर्मचारी यूनियन से मनोज बालगुहेर, सूरजभान, रामकुमार, नितिन भगवानाल आदि।

नगर निगम द्वारा टैक्स बढ़ोतरी का मामला

टैक्स को लेकर बालेश्वर की नसीहत से भीषण ठंड में राजनीतिक गर्माहट

हरिभूमि न्यूज ⏭ गाजियाबाद

नगर निगम द्वारा टैक्स बढ़ोतरी का मामला एक बार फिर हाई हो गया है। भीषण ठंड के मौसम में यह गर्माहट दी है पूर्व मंत्री व भाजपा के वरिष्ठतम नेता बालेश्वर त्यागी ने।

अपनी बेबाकी के लिए पहचान रखने वाले बालेश्वर त्यागी ने यह मामला उछाल कर उन विपक्षी दलों को भी झन्नाटेदार तमाचा है, जो इतने जनहित से जुड़े गंभीर मुद्दे पर भी या तो दूरी बनाए हुए हैं, या फिर हल्का-पुलका विरोध कर केवल और औपचरिक्त पूरी कर रहे हैं। बालेश्वर त्यागी ने बिना लाग लपेट के जनप्रतिनिधियों को नसीहत दी है कि अब जनप्रतिनिधियों को हाउस टैक्स का निर्णय करना चाहिए। बालेश्वर ने साफ-साफ कहा है कि अगर टैक्स यही रहना है तो प्रतिनिधियों को टैक्स बढ़ाने की जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी। जिन जिन जनप्रतिनिधियों को चुनाव लड़ना है , उनको चुनाव में मतदाता को बताना पड़ेगा कि तीन हजार रुपए से एकदम तीस हजार रुपए टैक्स क्यों हो गया ? योगी जी दो या तीन बार गाजियाबाद आ चुके हैं । क्या किसी जनप्रतिनिधि ने उनके सामने बढ़े टैक्स का मामला उठाया? क्या जब प्रभारी मंत्री गाजियाबाद में पधारे क्या किसी जनप्रतिनिधि ने उन्हें बढ़े टैक्स और उससे उत्पन्न जन असंतोष की बात उठाई? प्रभारी मंत्री जी कन्नौज से विधायक हैं । क्या वह बता सकते हैं कि कन्नौज में नगर पालिका ने कितना टैक्स बढ़ाया है। अगर मुख्य मंत्री जी चाहते हैं कि टैक्स बढ़े तो क्या गोरखपुर नगर निगम ने भी गाजियाबाद नगर निगम जितना टैक्स बढ़ाया है ? जनता पर टैक्स बढ़ना चाहिए तो फिर क्या प्रदेश सरकार इस बजट में प्रदेश की जनता पर टैक्स बढ़ाएगी? बजट के बाद वित्त मंत्री जी और मुख्य मंत्री नो टैक्स का बजट बताकर वाहवाही लूटेंगे और अधिकारियों को टैक्स बढ़ाने का गुरु मंत्र फूंक कर मेयर को अलोकप्रिय निर्णय लेने का भार क्यों डाल रहे हैं? बालेश्वर त्यागी ने कहा है कि सच्चाई ये है कि अधिकारी अपनी वाहवाही के लिए टैक्स बढ़ाने पर तुले हैं ? जबकि बोर्ड टैक्स न बढ़ाने का निर्णय ले चुका है।

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 84 BNSS देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **आरोपी (1) अमरनाथ, पुत्रः गुनेशेर, (2) मुर्गेश, पुत्रः** मुर्गन **पताः** मकान नं. II-58, मदनगीर, अम्बेडकर नगर, नई दिल्ली **FIR No. 269/2013, U/s: 379/411/34 IPC, पुलिस थानाः बदरपुर, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उन्होने किया है), और उन पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **(1) अमरनाथ (2) मुर्गेश,** मिल नहीं रहे है और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **(1) अमरनाथ (2) मुर्गेश,** फरार हो गए है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहे है)।

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि उक्त अभियुक्त **(1) अमरनाथ (2) मुर्गेश, FIR No. 269/2013, U/s: 379/411/34 IPC, पुलिस थानाः बदरपुर, दिल्ली** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **11.02.2026** को या उससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
श्री दीपक वत्स
अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी
दक्षिण पूर्व जिला, कमरा नंबर 515
दक्षिण पूर्व साकेत कोर्ट, नई दिल्ली

DP/326/SE/2026
(Court Matter)

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 Cr.PC / 84 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 देखें

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्तः **राजाबुल उर्फ आलम, पुत्रः नौसीर खान, निवासीः मकान नंबर सी–68, जहांगीर पुरी, दिल्ली** ने अपराध किया है (या किए जाने का संदेह है) **FIR No. 565/2017 दिनांक 20.11.2017 धारा 77 JJ एक्ट** के तहत एक मामला **थाना जहांगीर पुरी, उत्तर पश्चिम जिला, दिल्ली** में दर्ज किया गया है और उसके बाद जारी गिरफ्तारी वारंट को यह कहते हुए वापस कर दिया गया कि अभियुक्त **राजाबुल उर्फ आलम** नहीं मिला या मेरी संतुष्टि के लिए दिखाया गया है कि अभियुक्त **राजाबुल उर्फ आलम** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)।

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा कि **FIR No. 565/2017 दिनांक 20.11.2017 धारा 77 JJ एक्ट, थाना जहांगीर पुरी, उत्तर पश्चिम जिला, दिल्ली** के अभियुक्त **राजाबुल उर्फ आलम** को उक्त परिवाद का जवाब देने के लिए **दिनांक 18.03.2026** को या उससे पहले अदालत के समक्ष उपस्थित होना आवश्यक है।

आदेशानुसार, सुश्री ज्योति नैन,
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी–07,
उत्तर–पश्चिम, कमरा नंबर 6, रोहिणी कोर्ट, दिल्ली।

DP/441/NW/2026
(अदालती मामला)

पूर्व मंत्री .यादव ने कहा कहा कि मनरेगा कांग्रेस पार्टी की देन है

मनरेगा का नाम बदलकर गरीबों के अधिकारों को कमजोर करना चाहती है भाजपाः कैप्टन अजय यादव

हरिभूमि न्यूज ⏭ गुरुग्राम

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) का नाम बदलकर भाजपा सरकार द्वारा विकसित भारत गारंटी-रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) किया जाना केवल प्रशासनिक फैसला नहीं, बल्कि गरीब, मजदूर और किसान के संवैधानिक अधिकारों को कमजोर करने की एक सुनियोजित कोशिश है। यह बात पूर्व मंत्री कैप्टन अजय सिंह यादव ने शनिवार को कांग्रेस कार्यालय में पत्रकारों के समक्ष कही।

पूर्व मंत्री ने कहा कहा कि मनरेगा कांग्रेस पार्टी की देन है, जिसे वर्ष 2006 में लागू कर देश के करोड़ों गरीब परिवारों को 100 दिन के रोजगार की कानूनी

गारंटी दी गई थी। लेकिन भाजपा सरकार इस गारंटी को धीरे-धीरे खत्म कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा की नीति स्पष्ट है-नाम बदलो, नियम बदलो और काम की गारंटी कमजोर करो। उन्होंने बताया कि वर्ष 2020-21 में जहां लगभग 11.19 करोड़ मजदूरों को मनरेगा के तहत काम मिला, वहीं 2025-26 तक यह संख्या घटकर लगभग 6.25 करोड़ रह गई। यह आंकड़े बताते हैं कि भाजपा सरकार के लिए रोजगार प्राथमिकता नहीं है।

वहीं जिला कांग्रेस कमेटी गुरुग्राम (शहरी) के अध्यक्ष पंकज डावर ने कहा कि भाजपा सरकार की पहचान अब काम करने से ज्यादा योजनाओं के नाम बदलने तक सीमित रह गई है। कांग्रेस ने गरीब को काम का अधिकार दिया, जबकि भाजपा उस अधिकार का नाम बदलकर उसकी मूल भावना को ही कमजोर कर रही है। नाम बदलने से न तो मजदूर को ज्यादा काम मिलता है और न ही उसकी मजदूरी बढ़ती है। मनरेगा के नाम पर भाजपा सरकार लगातार नियम बदलकर गरीब मजदूरों को परेशान कर रही है। भुगतान में देरी, काम की कमी और जटिल प्रक्रियाओं ने मजदूरों को हतोत्साहित किया है।

यात्रा में हुड्डा गुट नदारद दिखा

कांग्रेस की फूट आई सड़क पर सद्भावना यात्रा से हुड्डा गुट ने बनाई दूरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फरीदाबाद

कांग्रेस को प्रदेश में जमीनी स्तर पर मजबूती देने के लिए पूर्व सांसद बृजेन्द्र सिंह द्वारा निकाली जा रही सद्भावना यात्रा के फरीदाबाद में पहुंचने पर फूट उजागर हो गई। सद्भावना यात्रा में हुड्डा गुट नदारद दिखा तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं से ज्यादा जींद व सोनीपत के कार्यकर्ता ज्यादा दिखाई दे रहे थे। सद्भावना यात्रा में बृजेन्द्र सिंह के साथ पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौ. विरेन्द्र सिंह, पूर्व मंत्री योगानन्द शास्त्री, जिलाध्यक्ष बलजीत कौशिक, सत्यवीर डागर, अशोक रावल, ओमप्रकाश पांचाल मौजूद रहें।

गौरतलब है कि गुरुग्राम जिले को पार करने के बाद आज सद्भावना यात्रा फरीदाबाद में प्रवेश कर गई। फरीदाबाद में प्रवेश करने पर यात्रा का जिला कांग्रेस अध्यक्ष बलजीत कौशिक के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने 19-28 के चौक पर भव्य स्वागत किया। इसके बाद जब यात्रा ओल्ड फरीदाबाद के मुख्य बाजार में पहुंची तो वहां पर

हुड्डा गुट के लखन सिंगला ने यात्रा का स्वागत करना भी मुनासिब नहीं समझा। यहां तक की लखन सिंगला के कार्यालय के पास ही एक कांग्रेस नेता सुरेश बेनीवाल यात्रा का स्वागत किया गया था तथा लखन सिंगला की अनुपस्थित चर्चा का विषय बनी रही। फरीदाबाद बार एसोसिएशन के पूर्व जिलाध्यक्ष संजीव चौधरी के नेतृत्व में अधिवक्ताओं ने सैक्टर-12 में पहुंचने पर भव्य स्वागत किया। इसके पश्चात जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय, सेक्टर-7-10 मार्केट, सेक्टर-7, हनुमान मंदिर होते हुए सीही गांव पहुंची।

उत्तर रेलवे
खुली ई–निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति के लिए और उनकी ओर से वरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभियंता (कोचिंग), उत्तर रेलवे दिल्ली मंडल अनुभवी और सक्षम निविदाकारों से **'एक लिफाफिय प्रणाली'** निम्नलिखित कार्य हेतु मुहरबंद ई–निविदा आमंत्रित की जाती है।

कार्य का नाम	दिल्ली मंडल के LHB कोचों में ICF ड्राइंग सं. 32963203 एवं परिशिष्ट–A के अनुसार S-Trap को पकड़ने व सुरक्षा हेतु F-Type माउंटिंग ब्रैकेट स्टैंड तथा लॉकिंग व्यवस्थान की आपूर्ति एवं स्थापना, तथा रेलवे बोर्ड पत्र संख्या 2021/M(C)/141/2Pt2 दिनांक 08.05.2025 के परिशिष्ट–B के अनुसार S-Trap (90–94 मि.मी. OD) में SS केज / स्ट्रेनर की आपूर्ति एंव स्थापना।
कार्यस्थल	दिल्ली — **कार्य की अवधि** — तीन (03) महीने
विज्ञापित मूल्य	₹47,30,172.60 (जीएसटी के प्रावधान सहित)
बयाना राशि जमा की जानी है	₹94,600/-, केवल नेट बैंकिंग या गेटवे के माध्यम से
निविदा प्रपत्र मूल्य	₹0/-
ई–निविदा प्रपत्र प्राप्त करने का समय	दिनांक 08.01.2026 को 11:55 बजे से 30.01.2026 को 12:00 बजे तक
ई–निविदा बंद होने की तिथि और समय	दिनांक 30.01.2026 को 12:00 बजे
ई–निविदा खुलने की तिथि और समय	दिनांक 30.01.2026 को 12:00 बजे के बाद, यदि खुलने की तारीख पर अवकाश होता है, तो अगले कार्य दिवस पर ई–निविदा खोली जाएगी।
ई–निविदा खोलने का स्थान	यांत्रिक विभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, स्टेट एंट्र रोड, नई दिल्ली–55

नोटः निविदा का पूर्ण विवरण वेबसाइट **www.ireps.gov.in** में मिल सकता है।
सं.: NR-DLI0MCNW912025 दिनांकः 08.01.2026 104/2026
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ